

आखर

ममकालीण राजस्थानी कथागिमा

राजस्थानी सिरजणधारा-दोय



915174

समकालीण राजस्थानी कहाणियाँ

Gifted By
RAJA RAM MOHAN ROY LIBRARY FOUNDATION
BLOCK DD-24 SECTOR-1 SALT LAKE CITY
CALCUTTA

सम्पादक चेतन स्वामी

राजस्थानी भासा साहित्य अेव सस्कृति अकादमी, बीकानेर

मास एषयन रिषिया

राजस्थानी भासा सं अकादमी कानो मू छपो/पलो सारण 1990/सगळा इधवार अकादमी स
सारण अमित घारदी/मुक्क साधला प्रिण्टिंग गुणन निवास बन्दन सागर बीकानेर

AAKIIAK (Short Stories of Rajasthani) Edited by Chetan Swami
Rs 55 00

प्रकासक कानी सू

राजस्थानी कथाकारा री अं टाळवी कथावा छापता राजस्थानी भासा, साहित्य अर सस्कृति अकादमी घणी अजस । राजस्थानी री अं कहाणिया अठ रं कथा साहित्य मे नूव सिरजण री साख भरै । इण सग्रै मे राजस्थानी रा जाणीता मानीता कथाकारा रं सागै केई साव नूवा कथाकार ई आपरी कथावा नै रेय नै पाठका रं साम्हे ऊभा होया है, जिणा र सिरजण री सौरम घणो भरोसो दिरावण जोगी है ।

‘समकालीण राजस्थानी कहाणिया रं प्रकासण रो मतो अकादमी री कायकारिणी अर सामाय सभा रा सदस्या चालू रोवड बरस मे लिया अर राजस्थानी पढेसर्वा साह् ओ आखर नाव रा सग्रह अकादमी निजर कर रई है । अकादमी इण बरस ‘पोथी प्रकासण योजना’ रं तहत और ई कई पोथ्या छाप रई है । सुततर अकादमी थापित हाया पछ आ पैला कहाणी सग्रह पाठका र हाथा म पूग रैयो है ।

पतियारा रावा आ पाथी पाठका नै दाय अवेला ।

सीतळा सात्यू '90

वेद द्यास
अध्यक्ष
राजस्थानी भासा साहित्य जेव
सस्कृति अकादमी, बीकानर

विगत

सपादकोय दौठ	चेतन स्वामी	7
म्है आप सू कट्टी हू	माधव नागदा	13
आतरो	नद भारद्वाज	20
मोह	प्रह्लाद श्रीमाली	26
हीरा महाराज	मीठेश निरमोही	34
उळटी डाडी	रामकुमार ओझा	44
घनवीरो	भरणीदान धारहठ	52
मायलो मिनख	हरीग भादानी	58
सारस री जोडी	हरमन चौहान	63
भायन होवै राखस	यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'	79
सेत	सावर दइया	85
सलीब्रेशन	मालचन्द तिवारी	101
पुरसत	भदन सैनी	112

सपादकीय दीठ

समकालीण राजस्थानी कहाणी आपरी निजू 'साख' पट कई सवाल ऊभा करे जिवा उणरें उद्भव, गति अर विकास सू जुडेडा है। इणरी मौजूदा स्थिति नै लेयन चाव सतुस्टि अणसतुस्टि जैडी दोवू ई बाता होव, पण असलियत सू आपा मुडा नी लुका सका क जुग री रफतार मे आपणी कहाणी जात्रा खाडावती चाल रैई है। अँडो ई नी होवै के आ चाल बदळी नी जा सक, सवाल फगत मायलै उद्वेलण अर जुडाव रो होव। राजस्थानी रो जूनो (गद्य-पद्य) साहित्य घणो सिमरध रैयो है। जद के उण बैळा तो साहित्य जाणै जितो प्रचार ई नी पाय सकता, छपण छपावण रा साधन ई नी हा। विना किणी अेकरूपता री समस्या खडी करधा, अणमीत साहित्य री सिरजण होयो। घणकरै साहित्य री रखाळी वाचक परपरा सू होवती। अलेखू जूनी पाण्डुलिपिया ई उण सिमरधता री साख भरै।

साहित्य री हरेक विधा भिनख र माय बार र साच न उघाड रूप म दरसावै अर आ दोवू भात रै साच रा आतरा नै ई समझाव। साहित्य री सगळी विधावा रो अेक ई लक्ष्य होवता थका ई इण विकासमान भौतिक जुग मे गद्य अेक सबळी विधा रै रूप मे प्रतिष्ठित होय रैयो है। गद्य मे कहाणी सबसू आगीवाण विधा है। भिनख री आदू औत्सुक्य भावना सू जुडी इण लाकचावी विधा रा भारतीय वाग्मय म घणा जूना बावड लाधै। राजस्थान माय ता कथा-कहाणिया री लाबी वाचक परपरा रैइ है। वैदिक जुग री आख्यान परपरा अठै घणी सुरक्षित रैई। लोककथावा रो रचाव ई दूजी भारतीय भासावा रै करता अठै वेसी ई होयो। लोककथावा री उदेस्यपरकता नै नवारी नी जा सकै, सत्कालीण रचनात्मक दबावा रै कारण ई वा रो रचाव होयो अर उण वगत रा समाज वैचार उणरा कथ्य बण्या। कँवण, सुणन अर चेत राखण री परपरा रै कारण कथानका न वगताऊ बदळाव रै परवाणै बदळ लेवण री छूट ई लोककथावा म दासा रई ह। आज री राजस्थानी कहाणी रा मडाण ई आपा नै लोककथावा मे ई देखणा पडसी।

राजस्थानी 'बात' रै परपराळ खाळियै नै छोडन नूवी कहाणी रो पर वास पैरणवाळी राजस्थानी कहाणी रो विकास जात्रा लगै टग हि दी नी आधुनिक कहाणी रै सागै ई सरू होई । ठीक सित्तर साल पैली राजस्थानी रा गिणती रा लिखारा राजस्थानी री नव बोध री कथावा र सिरजण माय लाग्या । सुततर रूप सू कहाणिया रो सिरजण करणवाळा आ कथाकारा म शिवचंद्र भरतिया श्री च दराय माथुर, नानूराम सस्कर्ता, मुरलीधर शमा आद की खास नाव है जिका सामाजिक कहाणिया लिखी । राजस्थानी कहाणी रो इण नूवी जात्रा री चाल साव मोळी रैई अर सागै सागै जा कथाकारा मे लारै मुडनै अतीत नै मोहगत दीठ सू देखण री वाण ई रैई । सित्प तो लोक कथावा रो अगेज्यो ई—परिवेस सारू ई आ कथाकारा रो आग्रह यथाथपरक नी रैयो । व्यक्तिगत विरवास अर आदसवाद सू ग्रसित आ कथाकारा रो मूळ ध्येय तत्कालीन सामाजिक विसमतावा नै जोवणो नी हो । बगला अर हि दी रै कथा साहित्य सू प्रभावित आ कथाकारा कहाणी र नूव स्वरूप नतै सिन्प अर मैली रा बदळाव तो किया पण लोक कथावा री रजकता प्रधान सैली ची मे चरुड निजर आवती । ओजू ताड नव बाध नै वै सामाजिक, आर्थिक, राज नैतिक परिप्रेक्ष्य सू जाडनै नी देरयो—ओ इज कारण है क आज आपा वा कहाणिया नै वाचन वा रो सिरजण काळ त नी कर सका—तत्कालीन परि वेस अर जरूता नै कहाणिया रो विसय नी बणावण रै कारण व किणी अेक काल खण्ड र साच नै दरसाव कोनी ।

साहित्य अर समाज रो अणतूट नातो रैयो है । समाज माय होवण वाळा बदळाव अर उणरी आखी गतिविधिया साहित्य रा विसय होवै । माक्स रा कैवणो हो क 'साहित्यकार री चेतना, सामाजिक जीवन री ई दन है । समाज रो भावनावा, विचार अर समस्यावा रो चित्रण कर साहित्यकार खुद मे अेक स्रष्टा रो रूप जावै । साहित्य मिनप समाज र सम्ब धान मजबूत बणाव । इण खातर कैयो जाव क समाज मे साहित्यकार री भूमिका अेक पौरदार री भूमिका होवै । साहित्यकार जागतोडी आरया सू समाज माथे आवणवाळा स्वतरा रो फलादेस त्यार करै अर जनता न उण सू सावचेत करै ।

बदळाव अेक प्राकृतिक अर सामती प्रक्रिया है । परिवेसगत होवण वाळा बदळाव सू मिनख जडा विवेकमील प्राणी सब सू बत्ता प्रभावित होव । परिवेस रो भाग अर उणरै बदळाव री चिंता राजस्थानी रा कथाकार कोई खास गिनारै जैडी नी करी । राजस्थानी री नूवी कहाणी रो सस्वात नी उण वगत रै औपनिवेश समाज रा सक्टा रा चित्रण करै नी उण सू आगै बघनै राजस्थानी कहाणी रा विकासकाल आजादी रै वाद रा समाज रो ई चित्र उकरै ।

राजस्थानी री नूवी कहाणी री विकास जात्रा री तुलना हि दी क दूजी भारतीय भासाया सू बदान ई नी करी जा सक । जठ हि दी कहाणी हर

दसक रा आदोलना सू जुडी उठ राजस्थानी कहाणी नै किणी आदोलना री जरूत ई नी पडी । राजस्थानी कहाणी री अवार ताई री विवास जात्रा री पडताल करधा अक बात साफ निगै आवै के आधुनिक वैचारिकता अर प्रति बधता नै अठ अकठ रूप सू किणी हूस र रूप नी लिरीजी । भौत ई कथाकार है जिका खुद माथ लोककथावा रै परपराऊ जादू नै हावी नै होवण दियो । खासकर ओ बढाव नूवी पीढी रा कथाकारा माथ देखण नै आवै । नूवी पीढी रा की लिखारा इण आनोस रै उयळ मते केई कहाणिय लिखी पण राजस्थानी री नूवी कहाणी नै दिसा देवण साहू कोई बात बर्ण कोनी । फेर व कहाणिया फगत बानगी सरूप लिखीजी है—भौत घोडी गिणत मे । आधुनिक राजस्थानी गद्य म बेसुमार सिरजण तो किणी विधा मे नै होया । लक्ष्मी कुमारी चूडावत, गोविंद जगवाल, विजयदान देथा, नानूरा सस्कर्ता अर भवरलाल नाहटा जडा राजस्थानी कथाकारा रो मूळ लक्ष्य लोककथावा रै सत रज नै बचावणी ई रैयो, लोककथावा रो सिरजण ई किण मौलिक सिरजण सू कमती नी है । लोक कथावा मे वर्णित साच ई का ओपरा साच नी होव पण लोककथावा मे कथानका रो सरलीकरण अक सीः ताइ मनोरजन मोहेस्यता नै ई पूरै । राजस्थानी म हजार री गिणत मे लाख कथावा रो सिरजण सग्रहण होयो पण—सर्वेक्षण करधा पतो पड के कथ साहित्य री इण सिमरध परम्परा सृ राती माती इण समय मे अजार ताइ अठ हजार कहाणिया ई नी लिखीजी है । इण सू आपारी के कहाणिया के अक जागम्क दोठ या कोडाऊ हूस री झलक मिलै हिंदी मे प्रेमचंद जी के कथाजात्रा म वारा दीठीगत बढाव आपा परतल जीय मुका—गाधीजी जादसवाद सू प्रभावित प्रेमचंद आगे जाय'र मनोवैज्ञानिक दोठ नै प्रगति गामी सुर रा सिर कथाकार होयग्या । पण हातताई राजस्थानी कथाकारा अडो विगसाव दर ई निजर नी आवै ।

राजस्थानी कथा लेखण नै, कथाकार गभीर चुनौती रै रूप नी लिया । विया आपा गिणावण नै दो-ब्यार कथाकारा रा नाव गिणा सका ह्य पण अक मोटी अर सिमरध परपरावाळी भासा रै खातर आ गिणत साव ई थोडी होव । इण कारण राजस्थानी कहाणी नी मुख्य धारा स जुड सकी, नी कट सकी । कथा कहाणिया सांस्कृतिक इतिहास ई हाया करै है पण, राजस्थानी रो समूचो कथा साहित्य वाचन ई आपा किणी अक वगत र समूच दौर दायरा, समस्यावा, स्थितिया, प्रस्थितिया रो निवेड नी निकाल सका । बीचळी पीढी रा कथाकारा नै आपरी तारली पीढी र रचियाड कथा साहित्य सू कठ न कठे असहमति रइ तः ई राजस्थानी कथाकार अनाराम सुदामा उण कथासाहित्य नै नामजूर करता लिख—'व धणकरी पुराणी खुरचण खाय र जीव । वतमान री पूति अतीत सू घोडी ई हुसी ।

नूवी पीढी र कथाकारा साम्है तो वेई भात री चुनौतिया साम्है सीग माड लिया । अक कानी साठ रँ दसक सू पली रा कथाकारा री देण अर दूजी कानी खुद रँ नतँ राजस्थानी कहाणी रा पूवा आयाम प्रगटावण री चुनौती । पूववर्ती कथाकारा री देण साहू इण पीढी मे कोई अणभावतो उछाव होवै वा वात नी ही । नद भारद्वाज लिख्यो—‘आ सगळा री अक वधी-वघाई सीव है । वी सू आगँ वधर आपर आखती-पाखती न निजू निजर सू पजोसण री वाण आ लोगा म कोनी आई जिको क आज री कहाणी रो सही विसय है । समकालीण कहाणी रो कय्य अर कथण रो ढाळो जाज जीवण सू आगा पाछो रँवै तो वा कहाणी समकालीणता रँ सदभ म ररी कोनी उतर ।’

समाज री मुख्यधारा सू कटण रा आरोपा सू हिन्दी री विकसित कहाणी रँ वार नी है, आज ई हिन्दी कहाणी न आपरी पिछाण वास्तँ वगत वगत—सर उठण वाळा सुवाला रा पडूतर देवणा पड अर घण ऊचँ सुर मे आवत गतिरोध न नकारणो पड पण राजस्थानी कहाणी री अवारताई री विकास जात्रा अक ई सवाल ऊभो कर क भला ई वा अक ‘सावकीज्योड परिवेस’ री कहाणी रई—भलाई उण माथे फगत ग्रामीण मवेदना री कहाणिया जडा लेवल चम्पा होव पण काई राजस्थानी कहाणी इक्कीसवी सदी मे पूगत अटावर भाजतँ समाज माय जीवणवाळा मिनख अर उणर सरोकार री हिमायत कर ?

नतिक मूल्या माय सासता बदळाव, साप्रदायिक उणमाद, वचारिक विखडन भिस्टाचार आतक, वग विखमता जडा सवाल आज आखी सिस्टी र मानखा नै फफेड रँया है—अँड मे साहित्य क कळा रँ छेतर सू जुडभ हरख बुद्धिजीवी न आपरी अस्मिता रँ वचाव खातर-समन्वीता अर पिछाण जडी दोतरफा लडाई लडनी पड रई है ।

सचार जुग मे मिनख मिनख र नड तो आयो पण ओ नडास भौतिक है—जिको निरतर आतरिक नडास न क्षतिग्रत कर रयो है । वेगवान समाज रा चिंतन अर मूल्या मे ह्रास रो घनत्व घणो होव तो काइ इणरी जिम्मेवारी, समाज रा जागीवाण कैईजण वाळा चितक, विचारका साहित्य कारा अर कताकारा री नी हार्व ? अक नूव समाज री सरचना री जिम्मेदारी तो जा री ई होव । काइ—राजस्थानी कथाकार आपरी इण घण महत्ताऊ भूमिका पट सचेत है ?

वदळतँ चौफेर (परिप्रेक्ष्य) म राजस्थानी रा नव बोध सू जुडघा केई कथाकार है जिका इण नतँ थोडा सचेस्ट लाग रया है—पण बात असल इती इज है कँ वै इण सीगै कितरा प्रतिबद्ध है नै राजस्थानी कथा साहित्य म आय ठैराव म व किण भातरी धधूणी देवणी चाव आ ता वाने ईतँ करणी पडसी । राजस्थानी रा समकालीण कथाकारा सू आपा किणी तरँ रो आम भरोसो राया तो आ काई माडी बात तो नी है ?

म्है आप सू कट्टी हू

माधव नागदा

आनद पदरा दिना रै टूर सू आज घर आया। शीला की बोली ई नी। जानद मान मनवार करण लाग्यो।

‘वाई राणीजी मुडा कीकर सुजाय राख्यो है?’

‘कुण बोलै आप सू?’ शीला जाख्या काढी अर गाल फुलाया।

‘क्यू-क्यू म्हास जैडो काई गुस्ताखी हायगी?’

‘दस दिन री कय’ग गया अर आया जेक पखवाडा सू। वहीर होया पूठै म्हनै ता भूत इज जावो। जेक ह्चिक्की तक नी जावै।’

‘ह्चिक्की रा काइ देव म्ह गुद ई आयग्यो।’ आनद शीला री जाख्या मे जाख्या नाकी अर गुलात्र जैडो चरो ह्चिक्किया म भर लीघो।

‘पापा आयग्या पापा आयग्या।’ राहुल कमरा म बढतै राग सुणाई। शीला ह्चिक्किया र दूर छिटकगी। आनद यू परगट कियो जाणै निरास हायग्यो। फेर वी पळट र राहुल नै गोदी मे उठाय लीघो।

‘आइये मिस्टर राहुल उफ प्राइवेट जामूस उफ बड।’

‘पापा म्हारै काइ लाया?’

‘धारै लायो हू अक ननी-सी गुडिया।’

‘और?’

‘कार।’

‘कार रो नाव सुणताइ राहुल री आख्या मे चमक दीडगी। आनद अटेची सू तिकाळ दोबू खिलीणा राहुल नै थमाय दिया।’

‘जाओ बेटा, बारै चौक मे कार दीडावो अर गुडिया नै घुमावो।’ आनद शरारत म शीला कानी देखा।

‘धणा खराब हो। राहुल नै वार क्यू भेजा—म्हन सै ठा है।’ शीला आनद री बडाई कीवी।

‘यू रूस्याडी है न, राजी ता करणी पडगी।’ आनद शीना रो हाथ घामतो बोल्या।

‘छोडा भगवान रात विण गान् घणार्ई है?’

‘घणा दिन होयग्या है।’ आनद रें कठ म नरमाई उतर आई अर आग्या म प्यार रो सागर हिनारा लवण लाग्यो। उण आपरा दावू हाथ शीला रें कापा माय मेल्या।

‘ऊsss ऊsss म्हारी मम्मी ए। राहुल नै पापा रो आ हरवत सैण नी हाई। आनद क्षट दूर हटग्यो। शीना जीम निवाळी’र अगूठो हिनार धी नै छिजायो।

काइ है रे? आनद की कशळाय र राहुल नै पूछियो।

‘म्हारी मम्मी अे।’

घारी ई तो है म्है कद वंवू कं म्हारी है, पण यू अठ कीकर? म्है कया नी वारै जाय’र सेलो।’

‘म्हारै मिठाई कय नी लाया? राहुल माग पेस करी। आनद छारा रो चतराई साथै मुळय पडियो।

‘शीला घारो छोरो तो घणो सैतान निवळयो।’

‘विल्वुल ई पापा जैडो है।’ शीला क्षट पडूतर दियो।

राहुल शर्माजी रो घणो फूटरा टावर है। है तो नैनोसीक। व्हेला कोई तीन च्यार वरस रो। पण वी मे भोळपण, चचलता अर हाजर जवाबी रो अँडो मेळ है क जानद शीला तो काई वा रो मित्र मडळी नै ई राहुल घणो वाल्हो लागै। ऊजळो ऊजळो फूल जैडो मुखडो। मोटी मोटी कवळ री पाहया जैडी पलका। साफ सुथरी आरया अर आग्या मे जिग्यासा रो अकूत भडार। वो चौफेर यू चाव सू देखै जाण वीनै हर चीज सू गरो अपणापो है। वो हर चीज र वारै मे पूरी-पूरी जाणकारी लेवण री खूब कोसिस करै। पापा नै भात भात रा सवाल बूझै। भोळा भोळा, छोटा-छोटा। केई वळा तो केई सवाला रा पडूतर ई नी सूझ आनद नै।

रात पडती अर राहुल री आरया तारा ज्यू टिमटिमावण लागती। वीर सवाला रो सिलसिलो सरू होय जावतो।

‘पापा आकास मे तारा कुण चिपकाया?’

आनद नै भारी भरकम विंग बॅग थ्यॉरी याद आवती पण वो कँवतो—‘बिटा धार जडा नैना-नैना टावरिया जद मुळक तो असमान मे फूल उग। अे व इज फूल है।’ आनद रें मन म कविता उगण लागती। पापा रो बात सुण राहुल मुळकतो अर आसमान म फेर अेक नूवो तारो परगट होवतो।

‘मम्मी तो बँव भगवान बणाया ।’

आनद बोलो होय जावतो ।

राहुल फेर कुरेदतो—‘पापा आपा तारा कने पूग सका ?’

‘नी बेटा घणा अळगा है ।

‘तारा कने कोई नी जाय सकै ?’ राहुल थोडो निरास होय र ब्रूचतो ।

‘जाय सकै ।’

‘कुण ?’ छारा री आख्या जिग्सासा अर खुसी सू फल जावती ।

‘आपारी निजरा ।’

‘निजरा सू तेज कुण दौडे पापा ।’

मिनख रो मन ।

‘मन काई होवै ?’

आनद निरुतर ह्योय जावतो । राहुल थोडो जेज अणबोल रँवतो फँर घणै ठाठ सू बोलतो, ‘म्हे स सू तेज दौड सकू ।’ आनद रो काळजो ठाठो होय जावता क छोरो महत्वाकांशी निकळसी ।

राहुल री तो आज नीद गायव है । पापा आया है नी आज घणा दिना सु । अठीन पापा है जिको घटा भर सू बाट जोय रया है उणरँ सूवणै री । शीला ई घर रो आखो काम निवेडनँ सोयगी है पण वी री आरया म ई नीद कठै ?

आनद अर शीला र थीच सोयोड राहुल री कमेटरी चालू है—‘पापा अब तो म्हे रामजी वा रँ घोड सू ई आग दौड लू ।

रामजी वा इण कस्वै रो तागावाळो है । थोडो इतरो मरियल है कँ सवारिया पैदल जाव तो रामजी रँ तागा सू ई पैली पूग ।

‘स्याबास, अवै सूय जा ।

‘और बताऊ पापा ?’

‘फँरू काई बतावणो रँयग्यो ?’

‘हे SSS, म्हेँ पचास ताइ गिणती ई सीखग्यो—बोलू पापा ?’

अवार नी, कालै मुणार्ज—म्हन तो नीद आय रँई है ।’ आनद माढाणी उबासी लाई, आख्या भीची । शीला आनद री इण परेशानी माथै मन ई मन मुळक रँई ही ।

‘मुणो पापा, वन टू, ग्री, फोर, फा SSS

क्यू लपर चपर कर है—सोय क्यू नी जावै ।’ आनद नराजगी जताई ।

‘बोलू ई नी—पापा सु । राहुल रा होठ फरूकण ढूका । वी री आख तळाया डवाडव भरीजगी । मुडो मम्मी र पल्ला म लुकाय लियो । आनद नँ राहुल रो ओ रूप

घणो ई लुभावतो । कितरो बबळो होवें टावरा रो मन । चरा माथ कडा-बडा रग उभर आवे । जाणै चरो नी होय अक स्पेक्ट्रोस्काप होव जिवा मन म उठण वाळी भाव तरगा न तत्काळ दरज कर लेव । भाटा मिनता ज्यू टावर चलाव योडा ई होव मन माथ की अर चरा माथ की ।

राहुल ! आनद नरम पडग्यो ।

'बोलू ई नी । आप म्हनै लपर बपर ब्यू काद्यो ?'

'अब नी बँवू, पस । काले वार बढिया मॅद लामू ।'

सच्च्यी लावोला ?' राहुल झट पापा कानी मुडो कर लियो ।

'हा जरूर, अबे सूय जा ।' आनद राहुल री पप्पी लेय'र नम हाथ शीला न ई लपेट लीवी ।

'काइ करो हो, छोरा न सोवण दो नी, काले आला मोहत्या मे हाको करतो फिरसी । ठा कोनी अकर । शीना आनद रो हाथ हवळ-मी छेड छिटकायो ।

'म्हनै नीद आय जावली पण थारो छोरो उधम मचामा करेला । राहुल बेटा अबे नीद काढ । थारै म्है वान मिठाई लावूला ।

'जरूर लावाला ?'

'हा, जरूर, पण थू चुपचाप सोवला जद नावूला । बोल्हो तो मिठाई गळगी समझज ।'

राहुल छानो मानो सोयग्यो । शीना वी रो पीठ अपथपावण लागी ।

आनद ताई काइ करै, वस ! पगाबिया फिर । बी रँ मन मे रँय रय न जा बात उठ बँ काल पाछा जावणा है । साली इण टेडिंग कम्पनी री नौकरी ई जीव रो जजाळ है । आज मारवाड ता काल गोडवाड । भवता फिरो हिडक्या गडक री ज्यू । इण पार्टीं सू सोदो पटावो जित वा पाणी मे वैठज्या । फेर किस्मत मे गुण जता वी नी । मालिक ई मद्र्या रो बाप । बी र ताना रो तरकस कदई खाली नी होवें—'मिस्टर आनद जा कोई सरकारी नौकरी नी है व घर जवाई वण्या सूता-चठपा मोजा माग्गा करा । अठँ तो काम लारै दाम है । जवकाळ पचास हजार रो सोदा पटणो चाइज, भल ई बीस दिन ब्यू नी लाग जावै ।

धो सोदा पटा पटू नै आव क अब तो थोडा दिन घर रस्या । पण आफिस जावता ई बात फरमाव— 'बिल मिस्टर आनद । काल आपन फनाणी ठोड जावणो है । छ महीणा सू पेमट अटक्या पडभो है ।'

झव मारन मिस्टर आनद न रोवा जाणो पड च्यार मी किलोमीटर छेडै ।

आज ई यू इज हाया । पंदरा दिना सू भवतो भवतो आयो क अब तो थोडा तिन घर दृज्वाय कराना पण आफिस जावता ई वॉम करम माथे भाटा पटवया—

'आनद, बल तुम्ह जयपुर जाना है ।' स्मा मूड ऑफ हायग्यो । रई-सइ कसर राहुल पूरी करै है ।

'शीला, अबै ता इण सैतान री पूछ नै नीद आई छैला । यू अठीनै जा जा ।'

शीला उठण लागी । राहुल करडाया, 'ऊ SSS मम्मी म्हनै छाड'र मती जाइज ।

'घतेरै की । आ बिणी रागस रो अवतार तो नी है कठैई ?'

राहुल मम्मी न वाठी पकड लीवी । आनद रो उतावळापण खीज म बदळग्या । अक ता पदरा दिन री जुदाई, फेर छोरा री छगछगमळ्ळाया ।

'अर जोगमाया, झट सुलाव इण तपती न । परमात्या म्हन घगो उठणा है ।' आनद आकरो होयग्यो ।

'कीकर सुवाणू ? गोळी दू काइ ?' शीला लाई बुरी फनी । आखो दिन घर गिररती रो चक्कर अर अब राहुल री घाई नै सायबजी री रुसवाई । कर तो काइ करै ।

'मेल्लै नी अक कनफडा म खाचन हाफै ई सूय जासी ।'

राहुल की नी बाल्या । वी नै ऊघ आवण लागगो ही । शीला थोडी बँळा वी नै थपकायो । पछ धीरेक-सी वी रा ननो कवळो हाय आपरै हाचळ सू हटाय'र छेटी मेल्यो । हौळ हौळ, डरती डरती, चोरी चोरी उठी क कठ ई काची नीद सू जाग नी पडै, कठैई देख नी ले । आनद रो दिल अणथाग आणद सू धडकण लागो ।

'आयजा राणी, जाज रा जगरा करला, बालै म्हनै पाछो जावणो है—हफताभर साह ।

शीला आनद र जावण री बात सुणता ई बुझगी ।

'आप इण कपती नै छोड क्यू नी देवो ? दूजी देखो नी काई नोकरी । इण मे तो जिदगाणी दौड भाग मे ई निक्कळ जासी ।'

'म्है ई इणनै छोडणी चावू पण काई करू । आजकाल मनचावी नोकरी मिलै ई कठै है । आ मिलगी जिकी ई घणो बात है । अब यू आयजा । फालतू बाता म रात गमावणी ठीक नी है ।' आनद वी न समेट लीवी अर बावळा री दाइ नेह लुटावण लागो ।

'आज तो यू घणी रुपाळी लाग है ।'

'पण, पैली लाइट आफ करण दो । तपसी जाग जासी तो मुस्बल कर देसी ।'

'फेर म्है थारो रूप कीकर निरखूता ?'

'छोरो घणा ध्यान राख । छाटो जितो ई खोटा है । अक दिन कवै क यू म्हनै रात म नीद आवण दे र पापा र पलग माथै परी जाव अर म्हन कवै कै बाथरूम गई ।'

'अच्छा इतरा बड है ?'

'ऊSS ऊSS ।' राहुल हाल्यो । पसवाडो फारचो ।

‘छोरा जाग जावेलो । झट लाइट आफ बर द ।’

आनद यू चिमक्या जाणें राहुल चार होव अर राहुल पुलिस । शीला लाइट आफ बर दीवी ।

इणीज बळा ठा नी वाइ होया, शीला रा पग लाग्यो वं वाई सपना दरया, राहुल चिरलावण लाग्या, ‘मम्मी, मम्मी ।’

आनद रो रसा आणद कपूर होमग्या । शीला वाछवा हायन आनद कर्न पडयो ।

‘ए बेटा ! मम्मी बाथरूम गी है । अजर आय जावें यू चुपचाप सोय जा ।’

‘बाथरूम नी गी । मम्मी आव नी ।’ राहुल कुरतायो । आनद रा पारो धरमा मीटर तोडण लाग्या । वी न लाग्यो वं राहुल एक खलनायक है, जिका वी र अर शीला रं प्यार विच्चै भीत ज्यू उभो है ।

‘मम्मी आव नी ।

‘सो जा छानो मानो । बाबा आया है बारें, पकड लेवैला । हाऊ हाऊSS ।’ आनद राहुल न डरावण सारू आवाजा काढी ।

‘कोई नी । आप इज तो वाला । मम्मी आव नी, म्हनै तिस्स लागरी है ।’ राहुल ठिणकणो जारी राख्यो । आनद नै की नी सूझ्यो । वी हाय साम्बो करता ई घवाक घवाक दो च्यार भेल दीवी ।

छोरा नै क्यू मारो ? ओ तो अणसमझ है ।’ शीला कया ।

जा, यू ई भाग जा छोरा कर्नै । म्हनै सोवण दे साति सू ।’ आनद विपरया ।

शीला जाय’र राहुल नै छाती सू चिपका लिया ।—‘सो जा बेटा । मत रो ।’

आनद न लागो क शीला रो गळो भरीजग्यो है । सग रात वी नै नीद नी आई । राहुल रा निसास वी रें काळजा नै चीरता रैया । छारा रा हबक हियो फाट हो । शीला रो घडी घडी नाच सुडकणो पछतावा नी बळती लाय मे पूळो नाखतो रयो ।

परभात जानद देरयो कं शीला रो चरो उदास है । उदास अर सात । णण त्फान गया समदर रो पाणी । जारया राती चुट । अठीन राहुत आनद न देख मम्मी री साडी मे लुक-लुक जावतो । वी गे उजाम मरधो चैरो धुधळायग्यो अर आरया रा पाणी सूखग्यो । रात भर जाणें कितरा मोतीडा उणरी जारया सू झरग्या । जे वो थोडो धीजो राखतो तो आ नौबत नी आवती । फालतू ई मतीरें न विसलूवो वणाय दियो ।

आनद साच्यो क पला राहुल नै खुस करणो चाइज । शीला ता अपणें आप होय जासी ।

‘गुडमानिंग राजा बटा ।’

राहुल की नी बोल्यो । वस, देखता रयो आपरी सूजी-सूजी आस्या सू ।

‘अच्छा, आज थार गेंद लावणी है नी बोल कितरी बडी लावू ?’

‘म्हार नी चाइज गेंद । राहुल खादा उलाळया ।

‘अच्छा मिठाई ?’

वी फेर खादा मचकोडया अर नीच रा हाठ लटकाया ।

‘म्हें आज जपुर जाऊला, बाल थार काई लाऊ ?’

‘म्हार वी नी चाइज । म्हनै रात म मारियो वयू ? म्है आपरें काइ कीधो ?
राहुल रुआसो होयगयो । आनद इण भाळाभाळा निरदास सवाल सू पाणी पाणी
हायगयो । वी नै लाग्यो क रात भर रा रोवयोडो आसुडा रो बाघ अबै दूट जासो ।

‘म्हन माफ करदे वेटा, अबै वदै ई नी मारु थन ।’ वी राहुल नै ऊचाय लियो ।

‘म्हें आप सू वट्टी हू ।’ राहुल जीवणा हाथ री सं सू छाटोडी आगळो आनद
साम्ही कर दीवी । शीला बाप वेटा रै इण मिलण नै देखै ही । पण, आनद शीला सू
निजरा नी मिलाय सकयो । वी राहुल न नीच उतारियो अर चुपचाप बाथरूम म जाय’र
मुडा माथे पाणी रा छाटा मारण तागो ।

□

आतरो

नन्द भारद्वाज

सगाई अर ब्याव बीचलो आतरो इत्तो कमती रया के उणन औरू की जाण रो मौको ई नी मिळघा। अलवत गाव रो वूढी बडेरिया र सुर म चाणचक वापरतो नूवा हमदरदी सू उणन बैम तो अवस होयो, पण फेर आ ई सोच'र धीजो धार लिया क माईत जिको की करै, आलाद रो भलो सोच र ई करता होवैला।

छैवट वा घडी पण आयगी। उणन रीत कायदे सू चवरी मे लाय'र विठाय दी। मन रै किणी खूण मे आ इछा आखीर ताई वणियोडी रई क फेरा लेवण सू पली उण अणसैध भिनख नै वा अंकर देल जवस लै, पण वीनणी रै मोटै किनारीदार पैरवस अर मोट घूघटै र पार की देख पावणो ओखो हो। उजासर र नाव माथ चवरी रो वळ र अलावा पगत दो लालटेणा ही, जिकी आखती पाखती रो भीता मे टगियोडी ही। चवरी मे राटयोडी समिधा स निसरतो धुआ सीधो उणरो आरया कानी आव हो। जावती सरदी रो ठाडा असर पण हवा मे कायम हो, अर धुअै र कारण इण भात जा धुटीज रैयो हो कं लिलाड रो पसेवो जर आरया रो पाणी रळ मिळ'र इकसार हाय रया हा। कोई दूजो मौको होवतो तो वा कदेई ऊठ'र अळगी होय जावती। वडियाजी रो सीख मुजब वा चवरी म काठ रो मूरत बणियोडा बैठी रई। अंकाघ वार जमूज म घासी कर गळो साफ करण रो इछा ई होई, पण उण जतन सू घासी नै कठा म ई भास ली। पडितजी हयळवै र जोळवै पली दफे जद कन वठय अणसैध मोटयार रै हाथ मे उणरा ववळो हाथ पकडायो, ता अंका ठाडै जर खुरदरै परस सू उणरी र'आळी सी ऊभी हायगी। फेरा रो पूरी रस्म रै दरम्यान वा खुदन उण सुरदरै वघण मे वधियोडी-सी मैमूम करतो रई। पडितजी अंका खास तर र पूजापाठी लैजे म मञ्जीचार करता रया अर उणरी पूठ रै लारै गाव धर रो लुगाया गीत गावती रई। चवरी र अंका पसवा' वाकी अर वाकोजी गठजोडो करियोडा वंठा हा। वाने इण रूप म वठा देख'र फर अेयरगो वा मा नी होवणै र लखाव सू विलखी पढगी अर उण मोटै घूघट म मते ई उणरी आम्हा सू आसू वंघण लागग्या जिवा जाण किती जेज ताइ ववता रैया। वाकजी रै करड सभाव अर सगै रै कारण वने वठी सायणिया ई अवाती-सी बैठी रई। अंकाघ वार वाकजी सुसर फुसर मुणता ई वान उकराय दी ही, सो वा ता अवाली रैवण म ई गार समझया। फेर पूजा-पाठ, फेरा, सबरा गऊदान अर गीता र विचवै वद उणर भाग रो निपटारा होयग्यो उणन बोई सुघ नी रई।

चवरी रा काम वगो ई सलटग्या। घर रै वारणै पूग्या गठजोडा सुत्यो अर

गीत गावती लुगाया उणन पाछी आपर साथ जागण म ले आई । गीत पूरा हाया उणन पाछी उणी अधार ओरै म पुगाय दी, जठ बी घडी पैली बा बीनणी रै रूप म सजाइजी ही ।

वा आगण विछायाडी राती माथ बठगी । भीतर आळ म जगत दीयै र पीळ उजास म वा घणी जेज ताइ भीत मायँ महियोहा माडणा देवती रई । छँवट उणरी छाटकी भाभी पाणी रो लोटो लेय र आद अर फर उणन मनवार कर पाणी पायो । घर म पगत वा भाभी ई अँडी हताळ ही जिवी उणरी मनगत न आछी तरै समझती । वारै आगण म लागी रो आवणो-जावणा जारी हा । स्यात् जान नै जीमावण री तयारी हाय रई ही । चवरी रै धुअँ अर अमूजँ र कारण उणरा माथो भारी हो, जो हळको करण सारू वा थोडी जेज उणी विछावणँ मायँ आडी होयगी अर की पळा म ई उणरी आप लागी ।

भाभी रै चचेडण सू जद पाछी जाग सुली ता वारै आगण म लुगाया रो हावा सुणीजँ हा । विच्च विच्चँ जीमण परोसण वाळा धामा अर वाटिया लिया घूम रँया हा ।

‘इत्ता वँगा ई सायग्या गीतावाई ?’ भाभी हसती थकी पूछ रई ही ।

हा, यू ई थाडी आपर लागमी भोजाई ।

‘आछा, चाला उठो, रोटी जीम लो ।’

‘नी, म्हनँ भूम कानी ’

‘अँ उठा, जित्तो थारो जी कर । दखा, वारै आगण म थारी भोजाया अर साथण्या थाळी मायँ उडीक रई है । भाभी री मनवार नै वा घणी जज नी टाळ सकी अर उठ र वारै आगण म आयगी । वारै लुगाया रँ विच्चँ अेक थाळी मायँ उणरी कडूव रो वँना अर भाजाया उणनै उडीकँ ही । आज पैली दफ घर म उणनै कोई यू मनवार करनै जिमावँ ही । उणनै वावेइ भूम मैसूस होई अर फेर जीमती-जीमती खुद म ई विलमगी ।

आधी रात न जद सगळँ घर मे सायती ही, उणनँ भोजाया अर साथण्या असवल करती वनै रँ काकँजी र घरा ले आई जठँ नूव बणतँ आसरँ म पलग विछियाडो हा । आगणँ मे चाद री चानणी रँ कारण आसरँ मे ई हळको उजास हो । वा बोली-बोली पलग वनै आय र ऊमगी । भाजाया उणनै उठँ पुगाय'र पाछी वारै आयगी ही उणरी ईँछा हार्दँ क वा ई वारै साथ पाछी उठ जावँ, इत्तँ मे आसरँ रँ वारणँ मे उणन माय आनत मिनख रा भळका पडियो अर वा सरम अर सबँ सू खुद म ई सावकीजगी । घर मे स्यात् और कोई कोनी हा, सगळा घरवाळा ब्याव वाळँ घर म ई हा । जिवी लुगाया अवार उणनै जेकली छाड र गई ही, वारै गळी म ओजू ताइ वारै हसण-बोलण री आवाजा सुणीज ही । वा हीळ-स उणरँ वन आया अर फेर विना की बोत्या पलग री अेक ईस मायँ बठग्यो । बा उणी भात आपरी ठौड ऊभी रई । सुर मे मिठास अर नरमी सू उण पूछया—‘यू ऊभी कित्तोक जेज रँवैली, आव, सावळ बैठ जा ।’

वा जठ ही, उठे ई आगण माथे होळीं-सी वेंठगी ।

‘नी, उठे नीच नी, अठे ऊपर जावा । म्हार वन !’ उण हाथ बघाय उणत ऊपर वेंठण री मनवार कीवी ।

‘म्ह अठे ई ठीक हू !’ वडी मुस्कल सू वा इत्ता ई वान मकी, पण घणी री घणी मनवार अर जिद रा वा विराध नी कर सकी ।

वो होळीं सी पलग माथ लेटग्यो अर उणरें कवले हाथ नें सैळावण लाग्यो । उण कोई विरोध नी कियो अर होळीं होळीं उण अणजाण परस सू वा अपणापा मसूम करण लागी । उणर सवेत सू वा ई सोयगी । वातचीत अर सुर-सुभाव री नरमाइ स वो उणन आछो लागण लाग्यो, साथे ई थाडा उचरज पण हाथो व उण म मोट्यार-सी ऊतावळी रो कोई भाव कोनी हो । उणरें बोलण रें लेंजे मे ई अेक खास तरें री सुरताइ ही । वो घणी रात ताइ आपरें घर अर खानदान वावत उणनें बतावतो रयो । वा वेमन सू सुणता-सुणता ऊघण लागी अर छेपट उणरी आख लागगी ।

भाख फाट्या जद उणरी आख खुली अर पली वार भर-निजर आपरें घणी रो उणियारो देरया ता उणरें मुडे सू चीस नीकळती-नीकळती रयगी । वा हाक-चाक-सी की जेज उणरें साम्ही देखती रई । वाई पतीस चाळीस री ऊमर पार करतो वो मिनख अब उणरो घरघणी मुबर होय चुक्यो हो । नीद मे उणरो उणियारो थोडो औरू विडरूप-सो होयग्यो । माथे ऊपरअधपाकयोडा सा बिखरघाडा वेस, विडी अर तमाखू पीवण सू काळा पडियोडा हाठ अर पक्का गेहुवो रग । हाया पगा री नाडिया उफस्योडी अर खुरदरी ह्याळिया । घणी रें रूप मे मिली इण माणस मूरत नें देख र वा घबरामगी अर अेकाअेक पलग छोडंर छेडे ऊमगी । उणनें भवळ-सी आवण लागी । वा आसरें रें बिच्च रुपियोडे थाभ रा स्सार । लिया कुण-जाण कित्ती जेज ताइ उण सूत माणस नें फाटयोडी आरया सू दखती रई । छवट वारें आगणें म कोई रें आवण रा पग वाज्या अर-हळकी धासी सुणीजी । बारणें साम्ही देखण र साथ ई कवळें पूगती भाजाई दीखी । वा सभळ र भारी मन सू वारें आयगी अर भोजाई र काधें सू लागंर बिलख पडी ।

गाता री सुबक्या अर भोजाई री घीमी आवाज सू स्यात् माय सूत नरसाराग री नीद खुनगी ही । उण उठंर खखारो कियो अर तुरत गाभा-पगररया पेर आसर सू वारें आयग्या । वारें कनकर नीसरता उणर उणियार माथे झेंप साफ निगै आवें ही । उणरें घर सू वारें निकळण रें साथ ई गीता बसक्या भरती पाछी आसरें माय उठगी अर थाम रो स्सारो उेवती फेर बिलखण लागगी । उणरी हालत अर बिलखणो देख र उणरी भाभी री आरया ई गीली हायगी । वा घणी जेज ताई उणनें थ्यावस बघावती रई, पण वा जाणें ही क गीता रें मन री पीड नें मिटावणो अबे इत्तो आसान काम कोनी हो ।

सूरज जब आघूण कानी ढळण लाग्यो हा । दिनूगै सू अवार ताइ रा सगळा रीत-नायदा अर नगचार मे वा अेक निरजीव जिनस दाइ माम सू वारें अर वार सू माय पोरीजती रई । नी वाई उछाव अर नी पिछतावो । वा आपरो आगलो-पाछलो सगळा सरतर दग चुकी ही । पसद-नापसद रा सगळा सवाल अब अवारथ होय

चुक्का हा । दिनूगै जद पितरजी री घोक् सारु उणनै घणी रै साथ बठाई, तद उण आपरै
 पीण घूघटै री ओट सू अणचोत्या ई उणरो चरो अंकर औरू देर्या हा । वो उदाम हो ।
 म बीद रा गामा मे उण बगत उत्तो कठरूपण कोनी दीर्या । उणनै आपरै दिनूगै
 रै आचरण माय घोडो अफसोच ई होयो । दोफारा की जेज वा फेर सोयली, उण सू
 अबै की जी पण हळको होयग्यो हो ।

चिदाई री बेळा जद गाव री लुगाया 'सीख' उगरी तो अणचोत्याइ उणर हीयै
 री पीड बठा अर आर्या रै स्सारै वारै आयगी । जिण 'सीख' न आपरी सायण्या रै
 साथ वा रळी अर वाड सू गाया करती ही, उणरा बोला म भरियाडी बदना न आज
 उण पैली दफ मैसूस कीवी—

आवा पावा अे आवली,

अे, इतरो वायल वँरो लाड, छोड'र बाई सिघ चाली ।

111363

9/5/92

लुगाया रै अंकल-सुर अर उणर दोरै बिलखण सू अंक अजब करुणा उपजाऊ
 माहोल बणग्यो हो । आस पडोस री लुगाया अर उणरी सायण्या इण रावणै रा असली
 मरम जाणगी ही । सगळ्या री आर्या गीली ही । जद बेट्टी वाप र साम्ही पूगी तो वूढा
 जीयाराम आपरै हीय माथे वावू नी राख सक्यो । मायल अपराध-बोध रै कारण उणरी
 जवान जाण ताळवै सू चिपगी ही, आखती-पाखती ऊभा लोगा किणी भात समझा वुझा'र
 वाप-वेटी नै अळगा किया । आई हाल दोनू भाया अर मोजाया रो हो ।

पोर रात ढळिया वरात उणरै सासरै बरवाळ पूगी । चार ऊट गाढा माथे
 सफर किता बगो बटग्यो, उण नै पतो ई नी लाग्यो । बरात गाव र गौरवै पूगता ई
 आगण मे घेल पैळ माचगा । कडख ढोल घुरीजण लाग्या । लुगाया बधावो गाय बीद-
 बीनणी न घर रै माय लिया । बधावण री रीत पूरी होया बीद-बीनणी रो गठजोडो बडो
 होयो अर बीनणी नै गाव री छोरचा अर लुगाया ओर रै माय लेयगी । ओरो खासा
 मोटो हो अर-माय तीनू कानी री भीता री मोरया म दीया जुपियोडा हा । बारणै रै
 जीवणी कानी भीत माथे हाथ रा छपा अर भात भतीला माडणा कोरियाडा हा । उणी
 रै बन वाजोट माथ लालटेण जगै ही ।

लुगाया अर छोरचा नवी बीनणी रो उणियारो देखण री उतावळी मे ही, पण
 गीता घूघटै नै कसर पकड राहया हो । इत्तै म दा लुगाया उणरै कनै आई, अे दोनू
 उणीरै गाव री घीवारचा ही—पाट अर वुळछो । पाट उणरै अळगलै गनै सू बैन ही ।
 वा दूजो लुगाया अर छोरचा नै थाडो जेज सारू गीता कनै सू आ वँय'र अळगो मेल दी के
 बीनणी न थोडो बीसूणी लेवण दो—मुडो दिवाई री रीत दिनूगै होसी । सू साईनी
 छोरचा वास्तै अेडी कोई बदिस् कोनी हावै पण पाट र आकरै सुभाव नै सगळी जाणती,
 इण वास्त वँ अळगी होयगी । पगत अंक च्यार पाचेक बरस री नैनीसी छोरी वारणै
 रो स्सारो लिया, डरू फरू-सी ऊभी रई । पाट उणनै आपरै कनै वुताय ली—अरे अंठी
 आ प ना ! देख तो, आज कुण आया है ?'

तुलछी उणन रोवणी चावै ही, पण इत्तं छोरी पारु रो गोदी म आयगी ही। गीता ई झीण घूघट्टे री जाट म उणर साम्ही देखै ही। नूवा गाभा म सजियाही मामूम वच्ची पण वा काइ जाणती क आ वच्ची गुण है? पारु आग की बोलती, उणनू पली ई तुलसी उणन इसारै सू रोव दी अर वच्ची नै ई वार रमण रो कय'र भेज दी। फेर वँ खासो जेज ताइ गीता सू गाव अर घरा रा ममचार पूछती रैद। वारै आमण म लुगाया रा गीत बरोबर जारी हा।

पारु की बातेरण बसो ई ही, उण तुलछी रँ मना करण रँ उपरात गीता न बाता ई वाता म आ बताय दी कँ वा छोटी वच्ची उणरै घणी री दूजी औलाद ही। अक आठ बरस री लूठी छोरी औरू है, जिकी अमार नानरँ है।

इण नूवी बात सू फेरु जेकर गीता र ववळै काळजै मे घचको-सो लाग्यो अर वा ऊव-चूक सी होयगी। वा बाल रातसू ई ऊमर रो अक बौत अवखो आतरो त करण में ताग्योडी ही। छारिया री सबर सू ओ आतरो उणर वास्तै औरू अवला वणग्यो। वा घणी जेज ताइ पारु अर तुलछी रँ उणियार साम्ही गुम-सुम-सी देखती रँई अर फेर देखता देखता ई उणरी आरया सू चौसरा बँयग्या। तुलछी दवियाडी जमान सू पारु नै आळमा दियो जर गीता नै थ्यावस बधावण म लागगी—'इस्सो जी छोटी करै जिस्सो कोई बात कोनी लाडी, पारुडी रो तो इस्सो ई आपरो सभाव वळ, धारा सासू-सुसरा बौत ई भला माणस है, देखर ई बौत घीमा आदमी है, थन उठै किणी बात रो चिंता फिर ना रैवला। थू तो इण घर मे राज करसी राज, वावळी! थन किण बात रो चिंता है, अर म्हे सागण बँना जिस्सो हा थारै कनै ?'

पारु नै ई अबै आपरी बात माथ अपसोस होव हो। वा ई इणी भात सम जावती रई पण वँ दोनू आ कोनी समझ सकी कँ आ इत्ती-सो छोरी किण भात ऊमर र अक अजब आतरै नै अक ई रात मे पूरो करण सारू खुद सू जज्ञ रई है। उणर वास्तै आ बात गीण ही कँ सासू सुसरा वँडै सुभाव रा है, घर म कुण-काइ है घरघणी न वा पेली ई देख चुकी। सासर री चँळ-पँळ गाजा-वाजा अर वधावै रा गीत अब उण र वास्त पीका हा। पारु अर तुलछी कद उणरै कनै सू ऊठगी, उणनै की सुध ना रई। वा मिसूस करण लागी कँ जब वा वाई सोळहा बरस री गीता कोनी ही, जिकी बाल दिन ताइ जापरै पीहर री गळिया म चक्कारा देवती फिरघा करती अर नी इण घर म जायोडी काइ नुवादी बीनणी। उणनै तो जसल म आपरी जिनगाणी दस-चारै बरस जागै सू सरू करणी है, जठे सू उणरै घरघणी री पेली लुगाई जापरी जीवण लीला पूरी कीवी ही।

नूवी बीनणी रँ लाड कोड अर मैमाणा रँ खावण पीवण रो काम काई आघी रात ढळिया बाद जावती पूरो होयो। तारली रात री भात घर र हूजँ ओरँ म जद उणनै घणी री सज ताइ पुगाईजी, तद ताइ वा अक दूजी लुगाई रँ खोळिय मे ढळगी ही। दीय रँ हळकँ उजास म वा माय आय र सेज र पगारण बँठगी। थाडी-नो ताळ म उणनै आपरै घणी री घीमी आवाज सुणीजी। स्याद वँ आपरी भोजाई सू बोल हा— 'नो भाजान, म्हेँ अठे वारै ई ठीक हू, थ हतनाक जिद करा।'

‘कड़ी अणूती बात कर। दवर जी, ब्याव री पंली रात ई कोई बिनणी सू अळगो रेया करै कदेई?’ आ भाजाई री धीमी आवाज ही।

‘ओ हा, पण’

‘जबै, पण वण न रवण दो।’ आछो, अबै माय पघारा वा पराई जाई लाण, थारी उडीक मे इत्ता कंय’र भाजाई स्यात् पाछी उठगी ही।

नरसारास भारी मन स आरै रै माय आयग्यो हो। गीता उणन देखता ई पलम सू उठ’र अेकानी ऊभी होगी। नरसारास नै लाग्यो कँ स्यात् वा वारै उठ जावैली, पण उण ई मन काठा वणाय लिया हो कँ जे वा जावणी चावैली ता वो उणरै जाडा नी फिरै ता। वो रै की पळ यू ई बोलो-बालो पलग रै कने ऊभो रयो, फेर हौळ से ईस माथ बैठग्यो। गीता उणी ठोड ऊभी ही।

‘काइ बात होई, वैठा कानी? पूछण रै साथै ई उण आपरो हाथ गीता रै साम्ही बधा दियो। वा की जेज ताइ फेर खुद म डूवियोडी सी ऊभी रई, फेर उणरै नडी आवती पलग माथ बैठगी अर बाली—‘आपनी बडी बच्ची न नानेरै मेलण री काई जरूरत ही? हो सकै, ता उणन काल ई बुलाय लीजा।’ इत्ता कवण र साथै ई उणरो गळो भरीजग्या।

नरसारास नै जाणै आपरा काना माथ विस्वास ई नी होया। वो की पळा ताई हाक वाक उणरै उणियारै साम्ही देखतो रैयो, फेर अेकाजेक वो उणरी गाद मे समायग्यो। गीता नै लाग्यो कँ उणरी गोद म अेक टावर रो माथो आयग्यो है अर वा जाण वित्ती जेज ताई उणन पपोळती रई।

□

मोह

प्रह्लाद श्रीमाली

‘नीच पापी कठै रो ई, जलमतो ई धू मर क्यू नी ग्यो । जे म्हनै पैला ई ठा पड जावतो क धू ओ दिन देखावैला तो कठै ई गरा खाड मे घाल देवती-भाई न गमाम देवण रो कळक ई तो लागतो ।’

कितरा कडवा सबद है अे । आ सू खारो तो जैर ई काई होवतो होसी । काइ कोई मोटी वन आपरा नैना भाई नै यू कय देव । पण, म्हा म्हारी जीजी रा कया आ सबदा माथे दर ई एतराज नी है । साच कवू तो जीजी रा आ बाला सू काळज ठडव-सी पडी, खास कर इण वास्तै कै सुणता थका ई घर म विणो जीजी नै यू तक नी कयो क धू इतरो अवडी क्यू बोल रई है ।

म्ह धूमधाम बठो हू । मा-बापू सोच रया व्हेला, आपरी कुकरणी रो पिछतावो कर रैयो हू । जीजी रा इतरा आकरा बोल मुणनै इ म्ह छानो बोलो हू-अर उडीव रयो हू क कणा जीजी म्हारै वनफडा मे च्यार छह मेल्ले है ।

जीजा रै इण उकरास नै जावण सारू घणा लार जावणो पडसी । ठीक म्हार वाळपणा सू ई वात सरू करणी पडसी ।

छारा र जनम माथे छाती फुलावण अर छोरी रा जलम माथे छाती कुटण री कुण्ड विण देवता रा वरदान है—इणरी जाच कीकर होवै आ ठा नी पण ओ ठा जरूर है क म्हार जलमिया म्हार मा-बापू री छाती जाणै जिती चवडी होई । राखडी बाघण सारू जेव नैनी भाई मिळ जावण सू म्हारी मोटी दोवू बना ई घणी राजी होई होसी, क्यू कँ वा लायणा नै सागण मा तकात मैणा मारवो करती जाणै विण घडी मे आई, पाछा सात-आठ वरस हायग्या आसा तब कोनी होई । म्हारै होया तो जाणै वारो जमारो इ मुघरग्यो ।

इण धरती माथ अवतरित हावता ई जाणै म्है इण वात न परतय जाणग्या क मा रा मोळा करतां बेना री गोदी म टग्यो रैवणो ई भाई रो धरम है । म्है इण धरम न घण कायद मू निभावतो । वना म्हन टेरघा फिरती ता घणो मजा आवता । वार साग भाजी मालावण जावा कँ दूध, मिंदर जावो क मायणया मार्ग रमण सारू मडी जावा इ परमम माग । य वारी मर म्हन ऊवाया फिरती, घणा ल्याहा-बोटा सू । इण वगार

सू कदई वारी नाक मे सळ को पडतो नी, क्यूक म्है वा रो अेकाअेक भाई हा लाडसर । नी जाण किणर घूटिय सू कुटळाई म्हारं अग चग घाळपणा सू ई हाडोहाड बसगी । थोडीक ताळ बिसाई खावण नै जे म्हनै नीचै उतारियो जावतो-तो म्हारी माग गोळी विस्कुट जंडी चीज री होवती । म्हन लागं म्हारी इण लत री घणकरी जिम्मेदारी तो वा री म्हन गतुई नी रोवण देवण री कमजोरी है । पकायत पैली बार जद म्है रोयो होवूला तो उणा म्हनै रोवतो राखण सारू ओ उपाव कियो व्हेला, बस उणीज घडी सू म्हारा कुटिल हिया रं हाथा वा री आ नस पकड म आयगी व्हेला ।

पण जाणं किण जादू रं जोर मा नै म्हारो उणियारो देखता ई ठा पड जावतो कै म्है रोयो हू । वा लप करती म्हनै बैन रं हाथा सू खाच लेवती, म्हारा डील माथं हाथ फेरती थकी कूकण लागती, 'नीतरयोडी राड, छोरा रं कठै लगाय'र आई है, साफ दिखै हुचका भर मर नै रोयो हं, जरूर बोलो राखण वास्तै माडै मुडा दवायनै घमकायो व्हेला, जणै ई आरया म आमू रूकयोडा साव निगं आवै है । मा पत्ल सू म्हारो मुडा पूछती जावती, दुचकारघा भरती जावती नै बैना न ई लबडघमकै लेवती रंवती—'एकाएक भाई है पण राडा री आरया फूटै है इणनै दख देख नै । ओ ठा नी क काले पीहर मे पावणिया ता इणरोज बणोली, म्है कठै तक बैठचा रंसा ।'

म्हनै ठा नी क बैना म स्थाणकत अर चतराई जलम सू ई ही कं म्हारै जल मिया पछै वापरी—वै मा रा इतरा भारी आरोपा रं पछै ई कद ई साची बात बतायनै मा सू वूडी होवण री पदवी नी लीवी । जे बाता चेतं करता म्हन हसणो आय रंया है जीजी रं आज रा बोला माथं । मन माय तो जीजी खुद जाळी तरिया जाणती व्हेला क खाडा मे पूरणो तो अळगा, जे उारी जवाबदारी मे म्हारी आगळी ई मचक जावती तो मा उणरो मुरचो भाग नाखती । मोटो होयनै म्है जंडो नीवडूला इणरी जाच ई जीजी नै पकायत ही तद ही ता अेकर बिदामी जीजी सूवटी नै कैय रंई ही कं मा-चापू म्हनै माथा माथं चढायन बिगाड तो रंया है पण आगं ओ लाड कोड मूघो पडैला ।

भलै ई म्है किणी कारण सू रोवतो, म्हनै बाला राखण रो मा कनै तो फगत अेक इज उपाव हो, वा पूछती—क्यू रं रोवै क्यू है, बिदामी मारघो काई । अर म्है म्हारी तोतळी जवान नै उयळण जिती ई जैमत क्यू उठावतो-फगत हा र लटकं मे माथो हिलाय देवतो । मा हिम्मत देवती, तो चाल थू ई इणरं मार, अर म्है म्हारी कवळी ननी ह्याळिया बिदामी रं मोरा मुडा माथं थपकावण लागतो । पण हाय छूटो सो छूटो । वै कवळी ह्याळिया कदई करडी बणगी ही पण इणरो भान नी तो म्हनै रंयो अर नी ई मा-चापू ई राखियो, तो इणा लायणा री तो बिसात ई काइ ही ।

बैना नै जीजी कैयनै बतलावणा तो म्हनै घणो मोडो, इणा रं पराया घर री होया पछै आयो । जद खुद री नाक राखण सारू पैली वळा ब्याही ब्याहणजी अर जीजोसा र साम्ही म्है बिदामी नै जीजी कैय र बतळाई तो, सुण नै वा घूघटं माय ई म्हारै सलीकं माथ मुळकी ।

आ बात नी है कै म्है इतरो गलो गूगो हो कै मोटी बैना न ओपत नाव सू वतळावण री समझ ई नी ही म्हारै माय, साच वच क कर्ण-वर्ण तो म्हन खुद नै घणो अटपटो लागता कै म्हारा साथी-सायना छोरा तो आप-आपरी बना नै बुलावती वगत जीजी, बैन दीदी कवै वा वा रै नाव आग अे सबोधन लगाय देवै जर म्है म्हारै घडी घडी बन्लनै मूड रै परवाण विदामडी सूमटी सू लेयनै राड, डाकण अर कुती, नकटी जैडा जूना नै जाणीता सबदा सू सतकाह ।

पण इण मे म्हारो ई काइ कसूर । म्हारी जवान गुलता गुलता ई म्हारा बान जा साह कमसल अर नकटी राडा जैडा सबद मुण चुक्या हा । जोर देयनै चेतै कर ता ध्यान जाव है कै पैलीवार जद म्है विदामी नै म्हारी तोतळी जगन सू 'कमचल लान' कैयो तो मा अर दादी आपरा लाडेसर नै बोलता सुण राजी होयनै हसण लागी अर बी लाण चमकन गोदी सू हेठ उतारनै धमकायो हा तो उणनै फटकार मिली ही क नना छोरा रा भाळापणा मायै साग क्यू करै, अर ओ देखनै म्है दूणै जोस सू इण गाळ नै साफ सफीट बोलण री कोसिस करण दूको ।

बैना री गोदी सू उतरन म्हारा पग आप सू आप दीडण जोग होया तो पगा न दीडण रो कारण देवण साह म्हारा हाथ ई अबै बना री चोटिया खाचण जोग होयग्या हा । जीभ तो बोछरडा बोल बोलता बोलता ई पारगत होय चुकी ही । बना री साथण्या ई म्हारा लाड करण सू कतरावती नी जाणै म्ह बद्द वा रो माजनो पाड दू ।

चपा री आगाछी मायै सगळी छोरिया बेल रई ही । वार वार हार जावण री खीज सू नीचै सेरी म छोरा सागै गिल्ली डडो खेलणो छाड बैठो म्है यू ई ठाळप भाग रयो हो । काइ ठा काइ कुचमाद सूझी अर म्ह रमती रमती सूवटी रो चोटलो जोर सू लेंच नागयो । वा दरद सू चिरळाई तो उणरी साथण चपा सू ओ सहन नी होयो-बी म्हनै फटकारता कयो—'धू सवासण्या नै सतावै धारा हाथ थोर मे ऊगैला ।'

धार सू म्हनै घणो डर लागतो म्हन लागतो क अकलो दगता ई थोर रा अे वाटाळा ऊभा हाथ झपटो मारनै म्हनै पकड लेसी । थोर मे हाथ ऊगण रा कैवता ई म्है चिरळायनै धरै भाज्यो । बी वगत इ लारै री लारै डरी-सहमी व दोवू ई आयगी । म्हन विदामी माथ जणूती ई रीस जायोडी ही—उण चपा न थोर रो कैवता बरजी क्यू नी । अर विदामी नै इणरा दड दिरावण नै म्है भाव कूट बोल्यो क इण म्हार चूटियो भरियो जर कव धारा हाथ थोर म ऊगसी ।

विदामी म्हारी बात री दर ई काट नी कीवी । व तो पगत मा रा बोल सुणती रई—'हळकट राडा, किण भव म छूट सो, इण रा हाथ थोर म उगावो जणा रासडी ई थोर रै ई वाघ्या कर्यो । नीच बठा री '

घर म काई मीठो वणतो क बजार सू आवतो तो म्हारी पाती सैगा सू वेसी रेवती छपाण म्है बैना री पाती ई हडप लेवता । अकर सूवटी इणरी निकामत मा सू कीवी ता उरटी डाट पडी—'जाग्या खाऊ टापर सू कोइ ईमका करै ? इणन तो घन

धारी पाती ई देय देवणी चाइजै—धारो तो डील इया ई भैसँ रो सो बध रैयो है—आ तो लाई पागर ई कोनी ।' इतो कैयनै मा म्हारा माडै लाड किया हा ।

म्हनें याद है, उण दिन पछ वा दोवा नै बदैई मीठो भायो ई कानी । आपरी पाती ई वँ म्हन खवाड देवती । म्है तो इण सू अणूतो ई राजी हो ।

जीमण सारू बैठतो तो म्हनें हाऊको ई सूझतो, अेक मोटै मोटियार जितरो भाणा भराय लवता, पण म्हनें तो धी चीणी सू तरावोळ उण आवा भाणा सू पैली ई डकारा आवण लागती अर पेट तणीज जावतो । उबकाया लेवण रा नखरा करतो थाळी छोड देवतो ।

बापू हुकम बजावता—'अरे विदामी, चार कवा लेय ले चूरम रा, मूघँ भाव रो धी अळियो जासी ।' मा विदामी रो उणियारो बाचती थकी बँवती—'यू नखरा करती मुडो काइ बिचकारवँ है । भाई रो भाणो कोई जैठो थाडो ई होवँ ।

यू विदामी अर म्वटी रँ हाथा सू वा री चाटियोडी कुल्पिया ई झपटनँ म्है चट कर जावतो तो पछै विदामी म्वटी न म्हारो अँठो खावण म वाद अंतराज हो, पण म्हँ देखतो कँ धी सू तर वँ कवा ई वारँ घोतरख सू इतरा दोरा उतरता क जाण माडै वानँ कोइ नीमडै रा पाना खवाड रैयो है ।

स्कूल म भणाई भला ई करो क मती करो नूवी नूवी पसल पेना म्हारै वास्त मागता ई हाजर हावती, वा न ताड दा वा गुमाय दा कँ साधीडा मे टणवाई जतावण वाट दो म्हन वृक्षण वाळो कुण ! परीक्षा म नम्बर ओछा आवता अर रिपोट मे हर विसय रा अका हेठै राती लेण खँचियोडी होवती अर गैर हाजरिया रो लेखो बापू मास्टरा री मा बैना सू जाडता थका करता । बूकिया करता बँवता कँ अँ ई कोई मास्टर है, अरे जिण टाबर नै खुद भणाव, उणनै खुद ई फेल कर दै, आप इ फेल करोला ता स्यान किण री जावँला भणावण री लक्च कानी । गैर हाजरी वावत म्है कय राख्यो हा कँ माट'साब आपरी मरजी सू ई टीप लेवँ, टाबरा रो नाव लैयनँ तो हाजरी भरँ वीनी—क्यू वँ खुद ई मोडा आव ।

म्हँ जाणतो कँ म्हनें कमजोर देवन वँ म्हार टयूसन रखा देवला, पण भणता म्हनें तो मौत आवती—सो म्हँ घर मे आ वात फैलावती कँ आखा मास्टर म्हनें टयूसन सारू तग करँ—अब सगळा री टयूसन कीकर कर सवा—इण वास्तँ म्हँ तो खुद इज भणूला, बिना टयूसन रँ ।

इती ठीमरपण री बात सुणनँ तो मा बापू याल ई होयग्या । मा तो इतरा लट्टू क म्हँ जद छठी मे लगातार दूज साल ई फेल होया तो पाडोसणा री पचायत म म्हारो हिमायत करती थकी पूरा गरब गुमान सू कय रैई ही क—कनियो तो म्हारो घणो हुस्यार है पण स्कूल रा मास्टरा नँ इण माथे खार है, टयूसन नी रावण रँ वारण इणन घडी घडी फँल कर देव । परमात्मा वारो वाळो मुडो बरमी । म्हँ तो बँनू लाम लाग अँडी स्कूल रँ । अडी भणाई री जहत ई बाई । दूवान माथे बठमी जणँ इणरा बापू

इन्हें महीणा भर मे ई तयार कर देगी। इणरें हाथ म घन अर जस री रत्न ई घणी जोरदार है।

पाडोसणा अेक बीजी न जोयन मुळार रई ही। म्हारो मन तो घणा राजी हो। फेर होरण रो म्हने दर ई अपसोच नी हा। म्हारा अंडा चरितरा न देव-देव न बनार चैरा माथ अणदीठ भाव उमडता। म्हन वै भाव अगा ई नी मुहायता। म्हारो मन कवतो—म्है राजी सुसी हू तो अे राडा क्यू पट वाळ आपरो।

बना आप आपरें घरें गई जितें तो म्है घणो कटाळ होय चुकया हा। नणार्ई तो म्हारा हराम हाउका न सुवाई ई कोनी। म्हने सेजा इ तीन-चार गुणधरमी भायला ई मिलग्या स्त्रूल री किरपा सू। म्है सगळा लाड रा लचका आभा नै टोपाळी जितरो गिणता अर घर वाळा रें माथ हगणो म्हारो धरम समझता अर घरवाळा ई म्हार इण हगणे भूतणे नै बाललीला समझता।

सिगरेट ता वापू पीवें इण वास्तै इणनें सरू नरती वळ्ळा तो म्हन अग ई ओ अहसास नी होयो क म्है कोई नाजोगो काम कर रेंयो हू। हा दारू रा गुटको लवती वळा अेक बात जरूर मन माथ आई कें अंडी गुणकारी बीज घर म क्यू कानी राख।

वै म्हारें हवा माथ रमण रा दिन हा—क्यू कें सिनमा री फूटरी-नरी छोरिका अस्टपीर म्हारी आरया आगळ भवती अर मन करतो कें आ सगळिया नै लायनें घर म भर दू। आ नी कर सकतो इण वास्तै गम नै गळत करण सारू नसें म रवणो पडतो। बापू म्हारा इण दरद न समझता कानी अर उपदेम देवता क अवे म्हें मोटा होयग्या, म्हनें कुसगत छोडनें काम माम जीव लगावणो चाइजे। घा री निजरा मे म्हारा भायला हरामखोर अर वदमास हा जिणा रो साथ करन म्है विगड जासू। कडो कुजोग क भायला ई वडी ई बाता आप आपर बाप री म्हनें बतावता। पण सगळा ई माइत आप आपरें टावरा नै तो दूध धोया ई बतावता—राराम तो फगत भायला इज हा।

बापू चाव हा क म्है—सुवें मू सिध्या दूकान माथ वठू अर इण सू वान ई की अराम मिल जावें। मा ई अेक दिन केंयो— देख कनु वेटा अवे थू नैना नी है। अठी उठी रुळेटपणो करता चौखो नी लागें, आग घन इज तो ओ घर सभाळनो है—सा रोज दूकान जाया कर—घर म नूची बीदणी आवेला वा अे रग डग देखला तो काइ जाणेंला मन म।'

हू, तो आ बात है। अवे जाय र उण रहस सू पडणे उतरण लागो क म्है आग जाम'र अडो काई काम जा सू। दा सैणी-मुधी छोरिया री ठोड म्हारा नखरा उठावणा। शेक ई उदर लिटियोडा मे इतररो भेदभाव क्यू राखीजियो ? जद क आपरो अल औला' तो अेक सरीखी होवें।

पण, ना—मा बापू रो वपारी मन म्हार ज नम सू ई इण हसाव मे रमियोडो रेंया होसी कें छोरिया तो छवट पराया धन है गुद ता जासी इ—साग ई घणो सारो देवणो पडसी। छोरो ता कुळ रो दिवला हावें—इणरी चौखी मार सम्भाळ राबिया भावळो उजास करसी अर आपर नार लिछमी सू लडालूम बीदणी ई लामी।

महने अकाअक लागण ताग्यो क बना माथे म्है जितरा जत्याचार किया है वा सगळा रा जिम्मेवार मा-बापू इज है । जे नी चावता तो म्हारी अलामाया न डाव सकता हा ।

महन बापू सू बतलावण करता मा रा बोल चेतै आया—'अठे दो जणिया रो अडसलो करणो है अर आवैला अक इज ।' तो काड म्हार अक वैन होवती या अक ई नी होवती तो म्हारो लाड राखता इ नी ? जा ता साव सौदेवाजी होई । म्है थनै अघर अघर राखनै माटा किया है अबै थू म्हानै राख ।

पण ओ सोच तो हरक मा बाप रो ई होया करै है । पण बना माथे कियोडा अत्याचार ता वारी साव कुट्लाई है । वैन सागै आ कुट्लाया करी तो अबै म्ह आन बतादूला क वै तो पराया धन ही पण म्है असल धन कँडो ह ।

अर वस, म्है ऊर्ध माथे आयग्यो । नी नी होवै जडा जस जोगा काम करण दूको । म्हा चावता क वै म्हनै मार कूट नै घर सू काड देवै अर वाने ठा लागै कँ इण सौदेवाजी मे व देवाळिया होय चुका है ।

पण अक वंपारी रो मन यू कीकर हार मान लैव । वै म्हनै परणा दियो । मा बापू हरखिया क अबै छोरो सुधरग्यो लागै ।

म्हारा ब्याव मे म्है दोवू जीजीया नै अक नूवा ई भाई निर्ग आया । साव सुधा । वै घणी राजी होई—उणा री खुसी देखन म्हारी आरया म आमू आयग्या । वदास वगत पाछो लारै चलयो जाव अर म्है म्हारो टावरपणो सुधो होयनै पाछो सरू करू । इण समच इ म्हारै मन मे मा बापू र सीगै किराघ रो अक घपळवो-सा उठचा । म्है मोच्यो—वाइ ओ लाणा फर भगवान सू इण घर म जतमण री जरदास करला ?

घरवाळी रो म्है घणा मान राखणो सरू कर दियो । इणरो ई अक च्याम वज है । परणता पैली ई म्हनै ठा लाग्यो क ओ घर मे च्यार बना अर दो भाई है, मजोग ई अँडो कँ दोवू भाई च्याह बना सू नैना । म्है कल्पना करनी कँ नी जाणै इण भाईया री कितरी सैतनिया भुगती होवला । अर म्है निस्चै कर लियो क इण घर म गतुई दुखी नी हावण दूला ।

घरवाळी नै वदई पूछण री हिम्मत नी कीवी क थन थारा भाई सताया करता काइ ? मा-बाप लडता काई ! इण सू म्हारो कुटिल रूप प्रगट होय जावै तो ?

जिणरो आदमी काम घधा मे लाग्याडो रव वा लुगाई सुखी । घरवाली नै सोरा राखण खातर ई म्है आस दिन बापू कनै वैठनै वारो घघो जोवतो । ब्याज-बट्टा रै काम म बापू हळवी-नी रकम वास्त ई वूढे डोकरै मिनस नै ई अेल फेन बोलता वा विचार नी करता । मूदखोरी रो ओ घघो अगै ई म्हनै नी रुचता—म्हनै लागता म्है अर बापू रळन सामलै जीवत मिनस री चामडी उनार रैया हा । चामडी उतारिया पछ बापू घणा चळवा हायता । केई वार मोचता क इण मूदखोर बाप रा प्राण विण सुआ मे वमै है ? काइ पगत पइसो ? इण पइस र लारै वै की ई कर सकै ?—अर म्है इण सुआ रो पीगरा खोल दू तो ?

म्हारै जची व घर करता दूकान माथे ई आ वात करणी चोखी रसी—म्है बूझ्यो—‘बापू जे म्हारै दो भाई और होवता तो ?’

म्हार सवाल र मरम नै व जाण नी सक्या ।—‘थार ज्यू वा नै ई पाळ पोसन मोटा करता ।

‘आ बात कोनी, म्हारो मलळर है—म्है तीनू भाई आप-आपरी घर गिस्ती थारी-थारी माडता तो दूकान—मकान, रूपिया, पइसा नै गैणा-गाठा री बरोबर री पाती करता व नी ? म्है अबकी साफ-साफ पूछियो तो इण वार बापू रै बडळ वारै मायरो कुटिल वंपागी बोल्यो—‘हा जण तो तीन पातिया करणी ई पडती, पण थू भागसाळी है, थारै कोई पाती बटावण वाळो कोनी ।’

वै जाणै इण बात सू म्हारो खुसामद कीवो होवै । पण म्हनै तो नी बणनो अडो भागसाळी । म्है बात नै फेरू खुल्ली कीवी—‘म्है अकेलो कठ हू—दो वना तो है म्हारै, वाने ई बरोबर पाती मिलणी चाइजै ।’

बापू साव छाना, जाण की सुण्यो ई नी होवै । म्है खूब पिछाणू—बात न टाळण री आ री आ जूनी कळा है । म्है थोडा कग्डो हायने कैयो—‘म्हारी बात रो जवाब दो ।’

वै म्हनै जोपरी निजरासू तबता थका बोल्या—‘थारो भगज तो नी फिरया, काइ कैय रैयो है ? जिको कय रैयो है उणरो मतळव तो जाणै है व नी ?’

‘हा, खूब जाणू ह मतळव, जिको की है उण री तीन पातिया होसी, बराबर ।’
मुणन वै आपरी औकात माथे आयग्या ।

‘जा रे नालायब हगमखोर, खुद मैनत करनै भेळो कियो है जिको—पातिया वाट रैयो है । परसेवो वाड नै दोरो ता हायो हा कदै ई ? खाली ऋळियारी करणी जाणी है ।’

‘पमीनो वाड न दोरा तो आप ई कोनी होया । म्है म्हारा तेवर माथ उतर आमा ।—आ तो सैग बडेरा री कमाई है, आप तो पगत खजाना रा माप ज्य रूखाळा हो, इणरी ऋसाळी छोडन इण न वाट दो ।’

‘अर निवळ जठा सू मादर कैवता वै अणछक तम म आयग्या अर म्हन धवना देष दिया । जे म्है जमनै नी बँठधो होवतो ता घरतै पड जावतो । बापू रै इण अणचित्त धवार सू मन अंकदम ई भरयो । बापू रा सुवारथ खुनन साम्हा आयग्या ।

म्हारा उदण्ड त्रिमाग म ओर की नी सूझ्यो तो म्हार मुटै सू निवळग्या—
‘वाप हा ता वाइ होयो, मादर क्यू कैय रया हा आ गाळ देव म्है उणरो मुडो ताइ देवू ।’

तोडनै बता म्है क्यू अर बार बार क्यू तोह मुडो आव तोड अर वै बापे आव ज्यू भिडग्या म्हार मू । म्हान बायोबाथ हाया देम नै वारै तमासाइया री

भीड़ भेळी होयगी । म्हनै ठा ई ती पडघो वँ म्ह बापू मायै हाथ छोड चुक्यो हो । म्है होस मे कठे हो । च्यार मिनखा म्हानै अळगा किया अर वँ ई लाई सीख देवण रो नाटक करता, उण पैली ई बापू रो चुकियोडो वँपारी मन पाछो ठायै आयग्यो । — खास की बात कोती, म्हारा दुरभाग वे ओ हाल ताई नादान इज है । सबदा रा अे करचा वार आग नाख'र दूकान बडावला थका म्हनै बोत्या—'घरे चाल अर ढग सू बात वरणी सीख ।'

म्हारो सग रोस-जोस नदारद हो अर म्है रगै हाथा पकडीजिया गुनगार री ज्यू हाक बाक होयोडो घर कानो वहीर होयो ।

बात तो पून री गति सू चाल । सगळ आ बात उडगी कं कनियै आपर वाप नै कूट दियो । इणो कस्वै म परणायोडो बिदामी तक ई आ बात पूगी तो वा वरनाट्टं अठे आयगी । वा म्हन सन्नोड-सन्नोड न पूछ रई ही—'वोल कमसल क्यू हाथ उठायो म्हारा बापूजी मायै ?'

बापरे इती तेज है जीजी, म्है तो इणनै साव गऊ समझतो ।

म्है घणी ताळ री गताघम मे रैयो छँवट की बतावण सारू मुडो खोलणो चायो तो बापू लप देणो म्हारं मुड आडी ह्याळी देय दी । बिदामी की समझ नी पाई । वा नी जाण काई सोचती होसी ? किण किण तरै रा अरथ लगावती हासी । उण फेर वयो—

'इण नालायक री पुनिस थाणा मे सिकायत क्यू नी करी आप । अँडो नीच ऊतरला आ ता नी जाणी ही ।' जीजी रा पछताव रा आसू ढळक रैया हा । म्हारै अेक साल रा बेटा न गादी माय उखण्या घरवाळी ई आखा निजारा टुकर-टुकर जोय रई ही । म्है अबे फाट रैया हा—लफनै जीजी रा पग बाल लिया—'जीजी म्हनै दाय साळ रो नैनो टावर बणा दे—म्हनै टावर बणा दे ।'

बिचारी जीजी की तो नी समझ रई ही ।

□

हीरा महाराज

मीठेश निरमाही

हीरा महाराज नै माचा झाल्या पूरो पसवाद्या होयग्या । वा रा हगणा मूतपाई पाळ म इ हावै । इतरा दिन लमटा गळै उतार तिया यग्ता हा, पण सारल हापनभर स ता अन्नपाणी ई त्याग दिया है ।

पूरे गाव म अेक ई बात कै हीरामहाराज नै हवा रा असर हायग्या है । व घणा दुकातरा है । जीवण री आस ई वा रई है नी । दरसणी मूरती है, घेहल दरमण कर वेणा चाइज ।

सो नेडै घरा री इण वस्ती म सू अेक-अेक कर र लगालग पूरा गाव वा रा दरसण कर सरघा मुजव भेंट चढाय आया है ।

गाव म विणी घर गुवाडी म जे कठई थाडी घणी राड रुड सरु हाय जाव ता वहम रे मारिये लागा नै वाईसा, भरुजी, भामियाजी कै पावूजी रा थान निग आव । थान जाय'र वृक्ष करावै जर भापाजी वतावै सा लाहे री लकीर । आ दवी-दवतावा नै परतण करण खातर नारळ सू लगाय र अजे ताई साजरू ई करे । दारू रा प्याता क गुळ रोठ ई चाडे । इता ई नी मनोती पूरण सारू मनजाणी घालवा ई करे अरपूर । मच्चियाडा साड वणिया हीरा महाराज आ अवबिन्वासी कूदडा म कूद-कूद र घापटा करिया है ।

हाल हारी बमारी री बळा डागदर व वैद्य री ठोड गाववाळा नै हीरा महाराज री घर दोखै । जठे हीरा महाराज झाडा फूका कर र सरणे आवण वाळा रा हळको हाथ करे । भूत प्रेत री छोया बताय र वा सू भुगति पावण रा झाडा जतर कर ता विणी रा डारा डाडा कर र मन बिलभाव । इणी कारण हीरा महाराज आखै गाव दवरूप पूजेज ।

भगवान भरास जे आरे सरण आयोडो ठीक होय जावै ता हीरा महाराज री ज ज कारी होय जावै । अर जे कोई मरलप जाव ता वेमाता र लिंगयोड लेखा रै हवाल कर दिया जाव ।

गाव मे हीरा महाराज र सो नेडा चेला चाटी है । वा म सू चार पाचक तो हरदम वा री हाजरी म ऊभा लाधे । गरुजी री सवाचाकरी म कोई कसर नी । भगती भावना मे जडा गरुजी वडा ई वारा चेला चाटी । वाना फूवयाडै मतर करोना सवा तो पावोला मेवा म सगळा ई रग्गा-अग्ग रगियोडा ।

गर्जनी रँ बताया सँ ई मान है कै कुदरत री माया अपरमपार जलम मरण इ कुदरत रा इ खेल । गरुजी री मादगी ई कुदरत स जगँ ई परजारी नी । आ मान'र सगळा ई गर्जनी री हाजरी मे पगा ऊमा है ।

हीरा महाराज रँ आळया दाळया फिरता धरता सँ ई कव क विणी र माथ पर बाझ हावँ ता ऊचाया जा सकँ है, पण दुख दरद ता करमा रा फळ है । करम वरणिथ नँ ई भुगतणा पडँ है । किणी सू ऊचाया नी ऊच । सँई मानँ कँ हीरा महाराज आपरो नी, परायँ दुख दरद नँ भुगत रँया है परायँ दुख सू झवाशोळ हायाडा है । लारलँ दिना अक माटयार नँ वचावण सातर खुद हवा री फेट मे झिलग्या । तद सू ई आ री दसा दिनो दिन विगडती जा रँई है । म सू पैली हवा री असर पगा पर हाया ता गर्जनी माचा झाल लिया । अब कमर अर पेट पर है ता आता खाज जर मराडा चालँ । पट मे आफरा अर हाथ पगा म सुन वापरियाडी है । टट्टी-पेसाब ई वद है ।

माचँ माथँ पडिया पडिया महाराज रँ मारा अर कमर मे टाकिया पडण हुकगी है । वा रा चेना हवानँ डामणँ रो असर बतावँ । वै कँवँ—हवा जिणनँ अँ वस मे करणी चाई ही, वा हवा ई आ रँ डोल मे डाम चेप्या है, जिंका टाकिया रूप उघड रँया है ।

जठँ हीरा महाराज सूता है, वी माचँ र आळया दोळ्या माख्या ई मारया भवँ । हीरा महाराज जद ई टसका वरता आपरँ हाथ पगा न हिलावँ, म'नावण वाळी मारया उड'र धरा घाल लेवँ । सगळा ई चेला मानँ है कै गर्जनी जमराज सू आथड है ।

हज री वेमारी फैली ता अडी कँ पूरी बस्ती रा पीफरा ई बिखेरगी । अकण ई सागे छोटी मोटी बीस पचीसैक नेडी मौता होयगी । हीरा महाराज री गुवाडी ई अछूती का रई नी । वा रा अक डीकरो अर अक डीकरी ई हेजँ र हाथा चडग्या हा । पण महामारी रँ वावजूद ई हेजँ री फट झित्या केई लाग बचग्या हा । गाववाळा हाल मानँ है क जिंका मरग्या हा वँ देवी रँ परकोप सू मरिया हा अर जिंका ई बचग्या हा वै हीरा महाराज रँ जतर मतर अर डोरा डाडा रँ पुन परताप सू वचिया हा ।

अर कँवँ डोरा डाडा जर जतर मतर करती वेळा जे थोडी घणी भूल-चूक होय जावँ तो सामली हवा डोरा डाडा जर जतर मतर करणिय रँ घर रा सित्यानास कर हास । अँ सगळी ई बाता हीरा महाराज री ई बतायोडी, सो टेक राखता महाराज रा चेला जोर देय र कँवँ कँ हीरा महाराज रँ बेटँ अर ब्रेटी री मौता ई इणी कारणँ होई है । गाव वाळा नँ तो महाराज वचाय लिया हा, पण घर न को उवार सकिया हा नी । डूवती बस्ती न वचावण खातर गर्जनी माथ जितरा ई गुंमज करा, योडी है ।

आ टावरा रँ मरिया रँ वाद हीरा महाराज र परिवार मे घरवाळी, दो माटयार अर अक डीकरी है । डीकरी रा पीळा हाथ होया तीन वरस बीतगा । मोटयारा म सू अक वा री जगीनाइया सू तग आय'र भाज'र फौज म भरती होयग्यो जर बिचेटियो आपर आपरँ झाडा जतर, डारा डाडा अर पाखटा सू तग आय र सहैर मिळग्या ।

वा दिना आखँ परगनँ म घणी ई अफवाहा चाली ही क हवा जिणनँ हीरा महाराज वस मे करण री तेवडी ही वा ही महाराज रँ बिचेटियँ प्रमुडँ नँ गामव कर दिया । इण

अफवाहा रै कारणै वा रै परगने म वा रा यासा भला परचार हायग्या हा। वा र जम रा गीत दूणा गाईजण लागग्या हा। लागी री राणा पर लैणा लागगी ही। अर व अगैइ धापटा करिया हा। अर की बरसा रै आतर बस्तीवाळा नै ठा पडी हीरा महाराज रा विचेटियो हाल जीवता है। बी अे, अेम जे ताई री भणाई कर ली है। अर स्हर मे अेक सरकारी दपतर मे नौकर है। मणी-पडी छारी सू व्याव करियो है। वा ई सरकारी असपताळ मे नरस है। अर बी रा दा टाबरिया अग्रेजी स्कूल म भण है।

गाव वाळा इणने हीरा महाराज रा कमायाडा पुन माया।

हीरा महाराज जद सू मादा पडिया है, की बूढिया प्रमुडे नै बुलावण सातर जा र दिया है। अर महाराज वा नै आ क्यै'र समझाया है के— 'भूँ देवी रा भगत हू, म्हा रा तो बाळ ई वाको का हावै नी। पछै अेळ ई छारे नै क्यू बुलाया जावै। बस्तीवाळा ई बात मानली है के महाराज सही फरमाव है।

पण ज्यू ज्यू व घणा डाफा चूक हावता गया है। वा री घरवाळी टाबर न बुलावण री रट लगाय राखी है। इत्ताई नी, अेक दिन तो वा मौका देख'र हीरा महाराज नै समझाया ई हा कै—'हेजै वाळी महामारी नै याद करा, वा दिना पार परवारै ई प्रमुडो सुई दिराय आया हो। घणो ई महामारी फैल्याडी ही, पण वा ता उवरग्या अर दूजा घणकरा उणरा साथी सायना हजै मे झिल'र दम ताडग्या हा।

अठै नी ता स्हर मे थारा इलाज हाय सवै है।' पण छेहलै ताई हीरा महाराज जया ई भरता रया हा।

अर जद माटे सू माटा अर चावै सू चावा झाडागर अर डारा डाडा करणिया आय परा'र हाथ पाडग्या है, वा री घरवाळी परवारै ई आपरी बेटी नै बुलायली है। बडाड नै बुलावण तार दिराया है अर विचेटिय नै लावण माधु नै भिजवाया है।

स्हर है। स्हर री गळिया है। अर उणी गळी म जनकवि उस्ताद गळी है। जिणमे हीरा महाराज रो विचेटियो प्रभु नारायण मकान ठाय लियो है।

माघा गाव सू स्हर अर स्हर री इणी गळी मे आय पूगा है। गळी म 'त्रिकट' रमता हीरा महाराज रा पोतरा बीन पिछाण साम्ही दौड या है। हाथ पकड'र लट्टभिया है अर हाका करिया है—'माघव वा SS आयग्या माघव वाSS आयग्या।' माघो वान गोदी म ऊचाय अेक अेक कर र लाड करियो है। अर अेक नै ऊचाया आपरी गेडी न सभाळता-सभाळता हीरा महाराज रै बेटे रै घर ताइ आय पूगयो है। वारण नेम पलेट टगघाडी है— प्रमुनारायण राजोलाखुद।

दोवू टाबर हाका करता-करता माध रा हाथ छुडाय'र आपरी मा कन भाग्या है— अर मम्मा! वारै दख गाव सू माघव वा आया है। यू माघा पली ई दो-तीन बार आय चुक्या हा सो टाबर पैली सू जाणै हा।

माधो घर म पग धरता ई हीरा महाराज रं वेट्टे री वहू नै पगै लागणा करिया है अर वदळें म 'जीवता रो माधवजी सवद काना घाल्या है। अर नेड जाम आगणै ई वैठग्यो है।

'अवकै ता हाऊ मतो करियो, माधवजी।'

माधो पडूत्तर दियो है—'जावणा पडिया है।' साथै वा पूछ ई लियो है—'प्रमु महाराज सिध पधारियोडा है।'

'धारै आगै-आगै, अवार ई ता निकळया है। छुट्टी है, पण कंवता कं दपतर म आडिट पार्टी, आयोडी है। अर दायंक दूजी मोटिंगा म ई जावण रो कंवग्या है। पण ये आवता ई वाने पूछण लाग्या, क्यू काई खास बात है?' की रक'र—'गाव म है तो सगळा ई ठार?'

माधा पडूत्तर दिया है—'अवक की फारा समचार है। म्है सीधा गाव सू ई आया हू। बापसी प्रणा-डाफा चूव है। अकदम सगत वमार।'

'वगतसर कागद कें तार दिराय देवणा हो नी। बेमारी ता नो वधती। वं किताई कय चुवया है, पण गिनारै कुण?'

माधा वाल्या—'आप ता जाणा ई हा सा कं वै पुराणिया लाग है। हरेक बात मे लाभ करै। इत्ता दिना आ कंव'र काड लिया कं महाराज सावळ हाम जासी। टागरा नै भाडै हेठैक्यू देवा। सो-दा सो रिपिया रा हालती म जूत लाग जासी।'

'पण अवै ता हजार रा जूत लागणा है। आगिर गिवार ता गिवार ई हावै।'

आ बात माधे नै चोखी वा लागी नी वा नीची घूण कर'र जापरै अेक गारडै न दूजाडै साथै रगड'र रीस झाडता वाल्या—'हावणी जिक्की ता हायगी सा, प्रमु महाराज न बुलावा जिक्की बात करो। पाछा पल्डो गाडी सू ई वहीर हायणा है।'

पण व तो दपतर जावता-जावता वतायग्या हा कं आडिट पार्टी आयाडी है अर थो रे मरचै-भाणी नै लेय'र काल ई धा रं अर अफमरा रं बीचै गाड-क्षपाट हाई ही। छुट्टी-छपाटी मिलसी कं नी। कंवै नो कं जद आपना आव जद अेक मायें अेक आवती हज जावै। म्है धानै राटी परूस दू, ध जोमा उती जज म ई चुलयायसू धा नै।'

राटी जीमण रा ता अगई मन वायनी। माधा वान्या।

'ता पाय?'

चा ता पी ले गू।'

प्रमु री पग्वाळी पाय वलाय र दवण र बाद माच्या किणी पडासा, चुलयाण भेग्या जा गव है, पण आगलै ई पल साच्या सगळा ई दपतर गवोदा हागा।

अर यू इ पढीस वाय रा, काम पडिया कार्द वाटी आगळा माय ई वा मूत ना। आ सोच्या रै वाद वा साग रै पगा आपरै घर घणी रै युत्रावण निरळगी ही।

लारल दा दिना र आक्षव सू माघ री आग्या राती गुट हायगी हो। चाय पीया र वाद ई रय रैय'र उणन क्षपणिया आवती झज जाय रई ही। जठै वा बठा हा उठै ई आपर पातिय न सिराणै देय र आटा हायग्या। हीरा महाराज रा बुचमाण पातरा यू घर नै माय ल मल्या हा, पण ज्यू-त्यू ट वा अक् मागीडो नीद नय लीवी हा। अर नीद लिया र वाद जद चिलम री मसा हाई ता चिलम भरी। पातियै सू सीरो पाड र गाटी वणाई। साफी नै मिजाय र अगूठ अर आगळिया रै त्रिचाळ घाया निचोडता थवा दा-तीनैक झपटा दिया। अर छेहल, चितम र माफी लपट र दा-तीनैक पूवा खीची इ ही क हीरामहाराज रै वटै री बटू रामती खासती घर मे आय पूगी। अर लारै रो लारै कूटो खडतडावतो प्रभुनारायण ई जाय पूग्या हो।

माघा आगै होय र रामास्यामा करिया हा अर प्रभु उणनै त्रिना की बाल्या करिया ई गळै लगाय लियो हो। माघो वताया हा— हीरा महाराज सफाई डाफा चूक हायग्या है। माजी भेज्यो है। पंती ई गाडी सू पाछा वहीर हावणा है।'

जापरै वाप री मादगी रा समचार मुणताः प्रभु आपरै अतीत म सायग्या हा। जेकण ई सागै वी री सुरता म केई केई घटणावा आय ऊभी होयगी।

' गाव मे हेजै रा प्रकोप होया महामारी फलगी ही। म्है टमण जाय र सुई दिराय आयो हा। सिझ्या रा वावटता ई जीसा म्हारा हाड खोळा कर हाविया हा। हाल जद वद ई वादळा होवै है, मारा अर कमर म हळीफा हाल। जाणै अेकाअेक उणरी कमर अर मोरा मे हळीका उठण लागग्या अर वो की सोचतो आपरै डील माय हाथ फेरण ठूकग्यो हो।

आरया मे सरगवासी वैन भाई प्रगटग्या हा हेजै रै दिना म जद अ घणा हायग्या हा, तो वा नै सफाखान लैजावण री घणी ई खपत करी ही उण दिन ता जीसा अर म्हारै वीच वाप-वेटै रा नीठा काण वायदा रैया हा। म्है हारग्यो हा अर जीसा रा झाडा-जतर वा रा प्राण लेय लिया हा। अेकर फेत् उणरो रू रू ऊभा होयग्यो हो अर आस्या डबडवायगी। मगजी वाळी फूटरी फरी जाध जवान लाडल नै डाकण काढण र मिस वै चीपटा ई चीपटा सू मार मार र मारकाठी ही। म्है उण दिन ई घणोई विच पडियो हो क उणनै डाकण नी 'हिस्टीरिय री बेमारी है, पण नी तो व गिनारिया हा अर नी ई वस्ती वाळा ई मानिया हा। अर उण दिन तो घणो ई गोघम मचियो हो जिण दिन पूनम कारीगर रो अगई खोज गयो परा हो। उणरै छोर न निमूनियो हायाडो हो अर जीसा ऊपरलो ऊपरलो कय र प्याडा पूवा करता रया हा। म्है घणोई सफाखान लैजाय र इलाज करावण रो तगादा करियो हा, पण वारो हठ आखिर उणन ई रियाय रियाय'र मार काडियो।

अर उण दिन तो वै सफाई दुसमण बणग्या हा, जद म्है वा रँ चेला नै अघ-विस्वास रँ वरदिलाफ म वाता वताई ही। उण दिन ई दूजी वार म्हा दोवू बाप वेट रँ गना रा काण-कायदा अगई टूटा लखाया हा। मोरा चीपटा पडता लखाया तो म्है गाव छोड'र सहेर भाग आयो हो। घणा दिन सडवा माथे भूखा मरता काडिया हा। होटला पर वप पलेट घोय'र यारी-यारी ट्रासपोटी माथे हमालीपणो कर पट री आग बुझाई ही। वकीला रँ घरँ अँटा चूटा बरतण-वासण माज वा री घरवाळिया रा लंगा अर टावरा रा डगा घोय घाय'र पढाई करी ही। अँ सगळी घटनावा याद करता-करता अँकर फेह वी रो रु ह ऊमो होयग्यो हो। अँकर तो चायो कँ हिम्मत कर र माघे न कँयदे'कँ 'हीरा महाराज मादा है ता वान झाडागर कँ डोरा डाडा बरणिये न बुलावँ। म्है तो कोई जतर-मतर बरणिया हू नी। म्हारे खातर तो वै उणी दिन मरग्या, जिण दिन वारी अणूताइया रँ आग म्हनँ गाव छोड'र सहेर भागणो पडियो हो। म्है कवँ-कवँ नै दिन जोया है पण आगलँ ई पल ममता री मूरत मा री सूरत भरस-परस प्रगटगी। आस्या डबडबायगी ही। मा कँया करती ही—'बेटा, आरँ घघ-पाणी रँ खिलाफ है यू, पण अँ जितरा ई बळाप करे, था टावरा र पेट नै पाळण खातर ई ता करे है। बाप दादा सू चालतो आयो ओ घघो अँकाअँक किया छोडचा जा सकँ है? अर जे छाड ई देसी तो दूज ई दिन घर मे भूख भुवाजी थडिया बरण डूक जाती। थारी भणाई-पढाई वन सुवासणिया रा आणा-टाणा किया होसी?'

अर वो इतरा ई बाल सवियो हो— 'था ई वतावो माधव, अवँ काइ बरणा चाइज?'

गेरँ सोच मे डूब'र माघा पडूतर दियो हो— 'म्है तो गाव रा गिवार हा बापसी, काई बरणो चाइजँ अर काई नी म्है काई बताय सकू। आप भणिया-पडिया हो। सँ जाणो ई हो, पण म्हारी तो आ इज अरज है बापसी कँ छेहल, वूढँ मायता रा दरसण कर लेणा चाइजँ। अवँ काइ विचारँ जडी बात का रँई है नी। म्है जद वहीर हायो हो, आपरा माजी मुळावण देवता फरमायो हा कँ 'यू प्रभु नै म्हारो नाव लय र वतावज कँ थारा बाप थारी ई रट लगाय राखी है, जद ई वा रा हरफ उपडे, जवान माथ थारो ई नाव।'

आखिर प्रमुनारायण न आपरँ मेळावँ र साग गाव वहीर होवणा पडियो हो।

माघा ऊपर वाळी सीट माथे पसरियाडो खुराटा भरँ हो अर वै दोवू घणी चुगाई सीट मिळिया रँ बाद ई हीरा महाराज री चित्या मे उळझग्या हा—

वेमार है तो ले आसा सहेर।'

'यू को जानँ है नी वानँ। अघविस्वासी लागा रँ बापा रा ई बाप है व। मानसी तद नी!'

‘गाव मे रैया इ तो वा रा इलाज करिया जा सकै है । माधवजी बमारी रा अेलान वताय दिया हा अर म्है डागदर सू ‘क-सल्ट’ कर र दवाइया ले आई हू ।’

‘पण दवाइया तो लेसी जद !’

‘नीतर काइ करसो ?’

करसा काइ, हाई हाई देखसा ।’

इण विचाले अेक घसवो सा लाग्यो । गाडी किणी टेसण र सिगल न पार कर’र लेण वदळ रेई ही । अेकण ई सागै वेई लाग हरकत मे आयग्या हा । गणमणाटो सुणीजे हो—पारी री टेसण जायगी पाली री टेसण जायगी ।

गणमणाटे सू माधै री नीद उडगी ही अर वो आळस मराड’र उबानिया गावतो थको ऊपरली सीट सू नीच उतर आया हो ।

गाडी ‘प्लेट फाम माय आय ढवगी ही । उतरण जर चढण वाळे लोगा री खतावळ रै कारणे की धक्का धुक्की मचगी ही, पण की जेज होया ई अेक-अेक कर’र आषो डिब्बो साली हायग्यो ही ।

दूजे जात्रिया रै सागै माधो अर प्रभु ई जापर टावर टूवरा अर समान समून लेय’र उतरग्या हा ।

रेल जाया र वाद वै ‘वस स्टेण्ड’ पूग’र वस पकडी ही । टावर भूव सू बित विलावण लाग्या ता माधो अेक ढाबै सू आठ दसक रोटिया अर दो दना मे साग ले आया ।

अचाणचक वस रै नडे आय र कोई जाणतु प्रभु नै बतायग्या हो—‘म्है भागपाटी री बळा गाव सू वहीर हाया हो, थारी गुवाडी मे लुगाया करगै ही ।’

टापर उछलवूद र सागै राटी रा टुकडा तोडण दूकग्या हा अर प्रभु ऊडे सोच मे डूब्या गतागूम होयग्या हो । वस सरपट दौडे ही जाडण, साजत, सियाट अर दूजारे वेई गाव सार छूटग्या हा ।

रल अर वस वदळ र जीपडी माड करिया रोटिवळा ताइ वै आपरै गाव रै फिल भिळग्या हा । जीपडी सू उतरता ई दोवू धणी-लुगाइ धरम आड देवता-देवता छावट वानी मुडिया ई हा के पीचके सू आवतो पणिहारिया आपसरी म पूछण दूकगी ही—‘बुण है जै ?’

वा म सू अक वाली ही— हीरा महाराज रा विचेटिया बटा-वहू दिसै । सहर म नीररी करै है । बाल माघाजी गिया हा, ले आया है ।

पण राडा आने छाना ता करावो क डोवरा हाल जीवै है ।’ अेक साग वेई गुर उभरिया हा ।

दूजोडी बोली ही—'हो नै नी हो हीरा महाराज री तो उमर वध्मी—

'यू ई सफा बावळी होई ह, कदैई काई हवा रै फंटे झिल्यो की ई वचियो ह'

इतरं मे वा मे सू अेक आगै होय'र वा दावू घणी लुगाई नै छाता करावनी बोली ही— 'थे जिको सोच रया हो वीरा वा बात नी है । हीरा महाराज तो धाई ई जी अटकायाडा है । थारो इज रट लगाय राखी है । जद-वद ई ओखल खुल अर हरफ उघडै होठा माथ थारा ई नाव है ।'

'थे भागसाळी हो वीरा कै टेमसर पूगया । महाराज र जीवता रो मुडो तो देख लेसा । थारा वडाडा भाई घणाई लारल महीण भर सू भेळा ई हा नी कठै ठा ही कै उठीन वै बहीर होवैला अर अठीन ज माचो झाल लेवला ।

'खाघो देवणो ई लिरयोडो होव तो दिरीज । व आयोडा थका ई गया परा अर अ अळगै सू आय पूगया । तीजोडी बोली ही ।

'पछ ती रोवता रावता आसी अर रोय'र रैय जासी । कैवती-कैवती पणियारिया ज्यू ज्यू आप-आपरा घर जाया अेक अेक कर'र सगळी र्द्र विसरगी ही ।

वै दावू घणी लुगाई आपरी गुवाडी ताई जाय पूगया हा । गुवाडी गतागूम हायोडी ही । हीरा महाराज रो माचा वा र चेला चाटिया अर गाव रै वड वटेरा सू धिरघोडो हो । अर गुवाडी म हाथ तीबा मचियोडी ही ।

प्रभु नारायण जावता ई आपरी मा री छाती म माथा देय र बाग दे दीवी ही । डीव चढयोडी मा री आरया ई वरसण लागगी ही । घणी जेज ताइ दावू मा वेटा अेक-दूजे रै गळे मिळिया रोवता ई रैया हा । पछै हथेलिया मे झाल र 'हाला देवती प्रभु री मा उणज हीरा महाराज र माचा ताइ लेयगी हो । वा र सिराथिय वंठ बालण लागी—'देवो, आख्या खालो, थारो वगडावत आयग्यो है । थारो फुटरच प्रभुडो आयो है । थारो जीव इणी मे अटवयोडो हो नी ?'

वदळै मे हीरा महाराज री उपर उखोडो आख्या छळकर रैयगी हा अर ऊचा हाया वारा हाथ अर कान पाछी आपरी पैली वाळी गत पकड ली ही ।

यो देखै हा ठरकै अर हरदम सजधज र रैवणिया वीरा वाप अगै ई धुमळाइज'र अधगावळा होयग्या हा । काठी जंडो वारा डील बेमारी रै थपीड सू सपाई गळग्यो हा । या री ऊजळी वरू धाती जर बटी अगै ई मैली होयगी ही । मरोडदार पोतियो सिराणै वानी मसळीज्योडो विसरिया पडियो हो । गळ वाळी मणिया री माळा माच रै पाग म टिरै ही अर वा रै मुई सू पडती लाळा उणवर सू होय'र नीच पडै ही । आरया माथ आयोडा गीड वार मुई माथ उग्याड गत म रळ मिळै हा । पट आपरै सू तणमेल्यो हो अर व रय रय'र टसका करै हा ।

हीरा महाराज नै दगण रै सुरत फुरत वाद प्रभु री घरवाळी कटोरीभर पाणी ऊनो कर'र दोय-तीनव गोळिया घाळ'र माडाणी पाय दीवी हो ।

दवाई देयण र पैली वठ ऊमी दाय-तीनैय डोकरिया गाती पडती थकी हाड झपाट ई करी ही कँ हवा री ई वाण थुरय हाथै है । उणन तो गगणी ई पडती । हवा अर दवा रा वठै मेळ ? दवा सू जे हवा भिडवगी तो थारी घर गुवाडी सू उणरो प्रवाप गाव र घर घर ताई वधजासो । अर यू जद ई होयो है वा लोगा रा फीफरा ई विगेरिया है ।

प्रमुनारायण अेकर तो चायो कँ आनै म्याना देय'र वताय देवै' कँ अँ आपा रा वणायोडा ई गपोडा है । पण वो भूत धारयोडो ई रैया अर की जेज रै वाद कँ उ ठाडी मीठी होयगी ही ।

पण उणरी मा बोली ही—'आ री नो वेटा, इतीई उमर है । आ री तो आ जोळ है र । आ रा भाई, काका दादा, परदादा अर वाप ई साठै रै वार को निवळया हा नी । अबँ दवाई दवणी अकारय है, वेटा ।

गाळ्या रै वाद वानै गुळकोज ई पाया हो अर नी-नी करता ई री दूजी दवाइया ई देम दीवी ही ।

जेज होया हीरा महाराज र अगा म की हरवत होयण दूकमी ही । लोग समझण लागया हा कँ हीरा महाराज रो हसलो तडफटे । वा री विगडती लागती दमा प्रमुनारायण री मास सही को जा रई ही नी, हिम्मत बटोर र हीरा महाराज र वन जाय'र कवण लागी ही—'जबँ थारो हसो छूट तो सो छूटतो । अबँ जिणी म जी नी घालणो । अंक दिन ता सँगा नै ई जावणो है । माटी तो माटी म ई मिळणो है वाई वात मन म मती ले जावजो है जिको ई बोलो कोई दान पुन करणो होव गाया कुत्ता न की 'हाकणो हूवणा होवँ वँ सुवाभणिया नै की देणो-दूणो होवँ ।

हीरा महाराज रा बोल कठै सू उघडता, वँ नी बोल सकिया ता वा बोलती इजमी ही—'थे कठै सू बोलो, उमर भर काठो जीव रँयो है नी थारा म्है थान आछी तरिया जाणू हू म्है ई बोलू हू—'थार लारँ गायान चीपटँ रो पूरो पचासो चराऊना काल ई बाडी मे चोपँ र बीच हखवावणो सरू कर देवूला चिडी कमेडा खातर जठ ताइ म्है जीवूला दाणा पाणी मे कमी को राखूला नी । इतो ई नी, थार वारँ इ तिन सगत करवाय'र साद-आमणा नै जीमावूला । अर पछ वान सिर सू लगाय र नस ताइ दकूला । जिको थार आगांतर मे आगँ त्यार लाधला । थे सोच मत करो थारो ओ प्रमुडो थार लारँ वारँ दिन करमी नी तो म्है करवा सू गगाजळ । थारा अ चेला चाटी करमी । पूरँ गाव र मिंगरी 'यूत जीमावूना ।' वा रै माचँ रै मिराथिय बँठी बँठी प्रमु री मा प्रोलनी इज मयी हो—'अव थे जीव मत उठसावो । थारा तडपणो म्है को सह सना नी । इणर अलावा मन मे फरू इ की होव तो वतावो ।'

इणरँ विचालै हीरा महाराज रा चेना-चाटी इ आपर गहजी र लार दान पुन करण री बोलवा कर काढी ही ।

ओ सँ देह्या सुणिया प्रभु गळ ताइ भर आयो हा । छँवट भीमर र भाभराभूत

होय'र बोल्यो हो—'धा सगळाई भेळा होय'र नी-नी जैडी बाता कर रंया हो । अं नी मरता होई ताई धा आनं माडाणी मार काढो ।'

इण पर उणरी मा ई बोली ही—'दिख वेटा म्हें तो आ रं साग आसी उमर वाढी है । म्हें जाणू हू आनं ।

गुवाडी मे ऊभ नीमडै री छीया ढळण मे ही । सगळा ई इचरज मे हा । दवाइया आपरो कार जतावण ढूकगी ही । हीरा महाराज न डकारा पर डकारा आय रई ही । वारी मायली फुरफुरी जागी । अर डील हरकत मे आयग्यो हो ।

भेळा होयोडा सगळा ई लाग बाकी फाड फाड'र हीरा महाराज अर प्रमु वानी भाळ हा । अर हीरा महाराज आफळ र पसवाडो फोरता थका बोत्या हा—'वेटा, अवै म्हन सफाखानं ले चाल म्हन सफाखान ले चाल ।'

□

उलटी डाडी

रामकुमार ओभा

कई दिना बाद अक खवार हाथ लाग्यो हो । बलवि दरसिध उफ बल्ला री निजर बैगी बगी अखवार री ओळिया माथ भाजण लागी । छँवट अक खबर माथ आ दबी ।

खबर र च्यारू मेर काळो हासियो हो । विचाळ उण री फोटू छपी ही । खबर वाच र उण रो मन कियो, अखवार री पुरजी पुरजी कर हवा मे उडाय दे । फरू इरादो बदलियो । क्यू नी इण फोटू र विचाळ ई उतरा वेजका वणा दे, जितरा बम र घमीड सू उडता रागे जर सीसे रा टुकडा सा तो री छाती माथ घाल्या है ।

पण वो न तो अखवार रो पुरजा पुरजो कर पाया, नी ई फोटू री छाती माथ घाव घात सकियो । बस, कागद न मोड र आप री गोजी मे घात लियो ।

वो अब अंड चोरायँ माथ ऊभो हो, जठँ सू अक चौडी सडक वी स्हर कानी जावती ही, जठँ उण बम फाडियो हो । जर जठँ सात्तो अवार अस्पताल माथ दाखल हो । दूजै वच्च रस्तै चालतो तो आप रँ गाव पूग जावतो । पण गाव री काकड मील हो चुकी ही । चौफेर पुलिस रो जावतो, पोहरो हो । तीजी पगडाडी पाछी उण जुवार गुरगण्डा अर ईतर रँ खेता कानी पुगावती ही जठँ उण जाडी जुवार रँ ओटै तीन दिन रात बदीत किया हा । जर चौथी साकडी सडक वैन अमनकीर रँ सासर री ही जठँ सू वो अवार इज पाछो जाया है ।

लुकतो छिपतो निठासीक अमनकीर रँ दहजै हुको हो । बीर रँ पगा रा घमीड पिछाण, अमनकीर पाळ माथै इज आ ऊभी अर दुपट्टो गळ मे घात र बोली ।

'बीरा यू ऊभा-पगा पाछो सिधाज्या । थार वनोई री डूटी ण्णीज इलाक म है । वो अडा जनस मिनव है क बतन टाळ दूजो रस्तो नी माण । फमादिया अर देम र ररिया स वी री हमदरदी कोयनी । था दोयू जँ आपसरी मे भिडिया तो म्हारो मुहाग उजडैला का बीर री लास पडसी ।

रयँ सू क्यू बीरा । यू गुरदुवार री डाडी पकड । वाहै गुन री देवळी माथ गिर खुका । साच मरँ सू अरदाम कर पूछ । अब यन काइ करणो । साचो गुर धन ठावी ठोड पूगतो करमी ।'

पण प्रथी नी ता फाटक खोल्या अर नी ई वी मारू अरदाम की । आतर सू ^५

बोल्या। 'गुर रो घर दहसत पस'दा री तरगाह नी वण पाव। जिण र बहुवाये वियो वा रै क नै जा अर जे आप रै मत्ते वियो ता औरू कर देख। जै पछतावो हावै तो कानून री सरण मे जा। गुनाह वियो तो दण्ड भुगत पाक मन होय न गुरपरसाद छक्क। इमरत छकिया आचो मिनख वण जावला।'

बल्लो मन ई मन सोचै। 'सिय रै वेटे रो तो जलम ई गुर परगाद रूप मे होवै है। गुर नाव रो जाप करणा इमरत छक्को होव है। गुर री सिक्छा (शिक्षा) तो घणै री वरजणा करी ही। पण वर रो जैहर पावणिया हाथा मजहवो जनून रा घूटिया उण री घेन्की उतार दीया हो। उण हाथा नै पण वो कदै नी देख पायो हा। जिण हाथा उण र हाथ म वम पकडायो हो, उण रो मुडो पडदै री आट मे रैयो। आप र भायप बलिया री वो नै कोई ओळखाण नी ही। वो पगत आप रै उण बालमोठियै नै पिछाणतो हो, निण उणनै जनूनी पसादिया रै डरे पुगायो हा। डरे म फगत भीता बोलती ही। मिनख दीठ हैठळ नी आयो। वा इमरत रै नाव नी जाण वाइ छकाया क उण रा माया गिरण मेहर चढग्यो। भीता बारवार बालै।

'अक यारी कौम री पिछाण साह लडो। अक मुदमुरत्यार मुलक पावण मारू लडा। वा र मार्ग मिल र उडा जिको बिना लडै अक मादर मुलक (मायक भोम) वणाई है। अकल अर हथियार वा रा हौसलो थारो।'

मरू मे उण रो भेजो जवाब देयग्यो। 'कौम री पिछाण तो वाहै गुर रा दीघा पाव निमाण। केश, क'घा, क'च्छा कडा, किरपाण है। दसम गुरु हि दू हि'दवाण री रिछपाळ करण मारू अे निसाण धारण किया, त्रणीज हि'दू हि'दवाणै रै खिताफ लडण म काइ तुक ?

'अर जिका यारा देस वणाया व कडा सोरा मुखी। अक नारकी अकळहत्थी हकुमत रै इनावा काई पाया। मुलक जिको वण्यो उण रा वासि दा छान रोवै तो छाणग (छाण री जगत) माथ उघाडै पगा चलाया जाव अर चौडै रोवणिया री वडत् माथ कारडा सडवाइज। रोवणो कुफ, फरियाद करणियो काफर। नूवै मुलक रो अक इज धरम। नबूरी करो अर मजबूरी मे हासता रैवा।

पण भीता माथ उकेरीज्योडा वै आखर भाले री इणी ज्यू तीया हा। वा वावि'दरमिघ रै काळज म गहरो घाव घात दीयो। अर उणा रै मगज म अधार पय रा अधारो भरीजग्या।

जिण रै मार्ग पीटिया रो मीर हो। हेत हि'वळास चानता आयो हो। जिण रो लोही अक हो। जिका कदै उण नै बातभणकारो नी दीघो। सूई रा घाव नी कीघा। परचार री ज्ञान मे वी न लाग्यो जाण वी रा पाडोसिया वी न घायन कियो है।

घायल जिनावर आर्घ जोर सू हमलो कर। अठारहा वरम रो निछोर छोरो वेवात री बात नागो जारण क्षोठियै री गळाई मारकणो होयग्यो।

उपट उण हतप उठायो अर अणजाण हाथा उण न देस री धरतां री काकड र परल पास री धरती माथै उतार दीघो। इण वाट आई धरती सू खमीर जैची वद

उळटी डाडी

रामकुमार ओभा

वई दिना वाद अेक जगवार हाथ लाग्यो हो । बलविदरसिध उफ बल्ला री निजर बैगी बगी अखवार री ओळिया माथ भाजण लागी । छँवट अेक खबर माथ आ दवी ।

खबर र च्यारू मेर बाळो हासियो हो । विचाळै उण री फोटू छपी ही । खबर वाच र उण रो मन कियो, अखवार री पुरजी पुरजी कर हवा म उडाय दे । फर इरादो बदळियो । न्यू नो इण फाटू र विचाळै ई उतरा बेजवा बणा दे, जितरा बम र घमोड सू उडता रामे ज मीसे रा टुकडा सातो री छाती माथ घाल्या हे ।

पण वा न तो असवार रो पुरजो पुरजो कर पाया, नी ई फोटू री छाती माथ घाव घात सकिया । बस, कागद न मोड'र आप री गोजी म घात लियो ।

वो अबै जेड चोरायै माथ ऊभो हो जठै सू अेक चौडी सडक वी रहर कानी जावती ही, जठै उण बम फोडियो हो । अर जठै सातो अवार अस्पताल माथ दाखल ही । दूजै कच्च रस्तै चालतो तो आप रै गाव पूम जावतो । पण गाव री काकड मील हो चुकी ही । चौफेर पुलिस रो जावतो, पोहरो हो । तीजी पगडाडी पाछी उण जुवार, गुरगण्डा अर ईख र खेता कानी पुगावती ही जठ उण जाडी जुवार रै ओटै तीन तिन रात बदीत किया हा । अर चौथी साकडी मडक वन अमनकौर रै सासर री ही जठ नू वो अवार इज पाळो जाया हे ।

लुकतो छिपतो निठासीक अमनकौर रै दळ्जै दुवो हो । बीर रै पगा रा घमोड पिछाण, अमनकौर पाळ माथ इज आ ऊभी अर दुपट्टो गळ मे घात र बोली ।

'वीरा यू ऊभा-पगा पाछो मिधाज्या । धार बनोई री डूटी इणीज इलाक म हे । वो अटो अनेस मिनख है कै वतन टाळ दूजो रस्तो नी माण । फमादिया अर देस र परिया सू वी री हमदरदी कोयनी । था दोयू जै आपसरी मे भिडिया तो म्हारो मुहाग उजडेल्या का वीर री लास पडसी ।'

दयै सू क्यू वीरा । यू गुरदुवारे री डाडी पकड । वाहे गुरु री देवळी माथ मिर झुवा । साध मन सू अरदास कर पूछ । अब यनै काड करणो । साचो गुर यन टावी ठोड पूगतो करसी ।'

पण ग्रथी नी ता पाटक छोल्यो अर नी ई वी मारू अरदास की । आतर सू ई

वाल्यो । 'गुर रो घर दहसत पसदा रो दरगाह नी वण पावै । जिण रै बहुवाये कियो वा रै क नै जा अर जे आप रै मत्ते कियो तो औरु कर देस । जै पछतावो हावै तो कानून रो मरण म जा । गुनाह कियो तो दण्ड भुगत पाव मन होय न गुरपरसाद छवज । इमरत छकिया आच्छा मिनस वण जावला ।

वल्लो मन ई मन मोरै । 'सिग रै वेटे रो ता जलम ई गुर परसाद रूप म होवै है । गुर भाव रो जाप वरणो इमरत छवणा हावै है । गुर रो सिक्छा (शिक्षा) तो घणै रो वरजणा करी ही । पण वर रो जट्टर पावणिया हाथा मजहवी जनून रो घटियो उण रो घेत्की उतार लीया हो । उण हाथा नै पण वा बदै नी देख पायो हा । जिण हाथा उण रै हाथ म बम पकडाया हा, उण रा मुडा पडदै रो आट मे रैयो । आप र भायप बैलिया रा वी न काई आळम्याण नी ही । वो फगत जाप रै उण वानगोठियै नै पिछाणतो हा निण उणनै जनूनी पमादिया रै डर पुगाया हा । डर मे फगत भीता बालती ही । मिनस दोठ हैठळ नी आया । वा इमरत रै नाव नी जाणै काइ छवाया क उण रा भायो गिरण गहर चढग्या । भीता बारवार बालै ।

'अक यारी कौम री पिछाण सारू लडो । अक गुदमुग्त्यार मुलक पावण सारू लडो । वा र सार्ग मिल र लडा जिको बिना लड अक मादरै मुलक (मायड भोम) वणाई है । अबल अर हथियार वा रा होसलो धारो ।'

मरु मे उण रो भेजो जवाव देयग्या । 'कौम री पिछाण तो वाहै गुरु रा दीघा पाव निसाण । बेश, कघा, कच्छा, कडा, किरपाण है । दसम गुरु हिंदू हिंदवानै री रिछपाळ करण सारू अे निसाण धारण किया उणी न हिंदू हिंदवानै रै खिलाफ लडण म काइ तुक ?'

'अर जिका यारो देस वणायो वै कंडा सोरा मुखी । अक नारकी अकळहत्थी हकुमत रै इलावा काई पाया । मुलक जिको वणया उण रा वासिदा छान रोवै तो छाणग (छाणै री जगन) माथ उघाडै पगा चलाया जावै जर चौड रोवणिया री बडतू माथ कारडा सडवाइज । रोवणो कुम्भ, परियाद करणियो काफर । नूब मुलक रो अक इज धरम । सयूरी करा अर मजबूरी मे हासता रैवो ।

पण भीता माथ उकेरीज्याडा वै आखर माले री इणी ज्यू तीखा हा । वा खलकिरसिध रै काळज म मेहरो घाव घात दीया । अर उणा रै मगज म अठार पख रा अघारो भरीजग्या ।

जिण र साग पीडिया रो सीर हो । हेत हिंवल्लास चालता आया हो । जिण रो लोही अर हो । जिका कदै उण न बातभणवारो नी दीघो । सूई रो घाव नी कीघो । परचार री झाक म वी न लाम्यो जाण वी रा पाटोसिया वी न घायन कियो है ।

घायल जिनावर आघै जोर मू हमलो कर । अठारहा वरम रो निछोर छेरो वेवात री बात लागो जारण झोटिय री मळाई मारकणो होयग्यो ।

छेपट उण हनप उठायो अर अणजाण हाथा उण न देम री धरती री काबड र परन पाम री धरती माव उतार दीघो । इण बाट आई धरती सू खमीर जैडी बद

वोई आय रई ही । जद क उण री आप री धरती री माटा सू अेक सौंधी खुमवोइ उठनी ही । जिकी धरती माथ वा उतारीज्यो उठ हथियारा री फमल ऊगी ही, ज क उण रै खेता माय अमन री हरियळ फसल ऊगती ही । उण र आप रै दरियावा म धवळा कमन गिलता अर अठ ताही रा बुडबुडिया उठै ।

उण नै पण वतायोग्या—रुसवोई रै दरियाव लम पूगण सू पली वदळीज्योड पाणी री धार पार करणी पडै हे । अर पडद रै पाछै सू अणजाण्या हाथा उण र हाथ म टाइम वम पकटायत, निसाणो वताया । लक्ष्य री पिछाण कराई । नक्ष्य ! जिको बोई लक्ष्य नी हो । रस्तै चालतै मिनख नै निरी दहसत फलावण सार मारणो बोई लक्ष्य हाव ? धी री किण रस्त चालत सू दुस्मणाई ही ? जर, जोर, जमीन किणो सार तो धी रो झोड झपाड नी हो । अर वल्ला जा इज वद जाणै हो वँ अेन वगत पर मातो उणीज मारण सू गुजरली ।

धमीड उपडीज्यो । झाळ पूळो उठयो-शाखर री गळाई मिनख अगन री झाळिया माय भूजीज्यो । मास रा लोथडा पुरजी पुरजी उडिया । च्यारू कानी कूकणा माचग्या । भाजम भाज मे च्यार कूचीदडा मिनख वल्ल न जेक जीप मे बठाण अेक सुनर मे अेकलो छोड भाज्या । अवार कौम री तो काई उण री आप री पिछाण इज उण मारू जाखमी होयगी ।

इसडी अवखी वळा मे उण न रयाल आयो । 'ओ कुकाम उण क्यू कियो ? किण र वास्तै कियो ? किण र कँय कियो ? अवे कठ जावै ? मुडै माथ तो अडी कुछाप लागगी वँ कुज कोई पिछाण जाव ।

पुलिम हरकत मे आ चुकी होवला । जिण रै साथ रो जेसाम हो, वँ वूडपयी निमरघा । अव अठ ऊभा रवणै म काइ मार ?

साम्ही अेक वोड माथ लिखीज्याडो हा । 'गगानगर जिलो आप रा सुवागत कर हे । अवखी वँळा म इज उणनै हासी आई । तो अवार इज धी रो सुवागत करणिया मौजूद है । काळूठै मुडवाळा रो सुवागत ? तो भायला तो पजाप सू इ वार छोडग्या । पण किस्मत अजार साथ नी छोडघो है । अठै नेई इज (ढाणी) 22 एन टी मे उण रो नानरा है ।

वो भाज छूटो । पण फेर आ सोच'र क भाजणियो मिनख तो सुवै म जहर पकटयो जावै वा हाळ हाळ चालण लाग्यो । जाण कोई दीसक कास पण्ड चाटयो थाकल मिनख जा रैयो होव । मुड माथै लापरवाही रो भाव, आरया अर कान पण सावचेत ।

चक रै गोरम जाया तो भूसता कुतडा घेर लीवो । कुतडा री डार माय अुण रै नानै रा पाळेन जरमणिया अर जाळमडो इज हो । पैली उणन देव'र नटवा करता अर आज बटका सू ग्वावणा चावै है । कुतडा री अतस दीठ माडै मानस री जोळवाण बर लेवै । वटल रै कनै लाठी तकात कायनी ही । कारवाइन कारतूस अर मगजीन

ता जिण रा हा, व ले भाज्या । किरपाण गुर रो निसाण । कुतडा माथे कीकर बावै । वो भाठा मारतो, कुतडा न मजावतो थका नानेर मांड जा ढुक्किया । आडा गडकाया । नान बियाड खोल्यो । यत्ना भीतर दाखत हायो अर झट करतै किवाड बन्द कर लिया । अर आगळ लगाय दी ।

बूढो सरदार तजग्वैकार । वणत रा वायरो जिको वाज रयो है वी रै रख नै पिछाणै । समथग्या छोरो बयू ई कौतव कर आयो है । बत्लो घवरीज्योडो हा अर मुड माथे आव कायनी ही । नानो वी नै भीतर नी ले जाय दहजै री पूळा री काटडी मे निरायग्या अर बोल्यो । 'घू ई वगत री हवा री चपट मे आग्या दीस है ।

बत्लो री अडी मानसिकता नी ही वैं वो बूड कपट री भासा मे बोल पावतो । उण सगळी हकीगत ज्यू री त्यू माड बताई तो ई बूढो सरदार थिरचक रयो अर पूळा री चगेत न उभेरतो थकी बोल्यो । 'पुतरा, जिके घर म जावतै ही तरो मुडो धीव सक्कर मू भरीजतो उण मुडै नै थू पूळा म लुका र बठज्या । अवख वगत मे भीता इज वरी हाय जाय है । घर वारै रो बाई नी जाण व थू जायो है, इणी मे मलाई है ।

अर बूढ बत्ले माथे पूळा री चगेत ज्यू री त्यू जचाय दी । अर खुद वारणै माथेही माची ढाळ द्या बैठग्यो जिया सदा बैठतो हो । पण मन म दक्चुक ।

चाद, सितारा, सूरज पौन-परकिरति स्स ज्य रा त्यू मिनख नै पण काइ होयग्यो वैं आप री वावडिया रैं आप ई बटका वोडण लागग्या । आजकाल इण ढाणिया रा ई मूडो हवान । कद किणी रैं कुटळ मे मिलटरी रा जीव तो बम लाद जाय है । कदै फरार कतली पकडीजै है । गैर लायस सी हथियारा हत्यारा, काकड पार स आवणिया तस्करिया, भेदिया, भगोडा री सरण-सथली वणगी जा धरम धरती ।

दैम रैं सीवाडै माथ आ गगानगर री सीली सीचित धरती । चक गाव, ढाणिया । हिंदू सिखा री रळवा वस्तिया । मा सनातनी, बाप विश्नाई, बटोपण निहग अकाळी सिख । हिंदुजाणी मा गुरदुवार जावती । गुर किरपा सू बेटो पावती । केस बटावती, किरपाण बाधती अर बेट नै गुरदवार रा सेवादार वणाय देवती । सिख जुवक होळी रा चग बजावता, जट भगडो नाचता । हिंदू सिख बना मूरखडी वधा वता अर सिख भाई हिंदू वैन र मायरो मरण आवता ।

मान, कमधारी मे कोई भेद भावना कायनी ही । 'अक जोत रा सगा बदा । कौन बुरा को चगा ।' गुर री पादसाही । परमसर रा बदा । स्सै गळमिळ रैवता अर साझा गुर परव नै तीज त्योहार मनावता । पण अबार मना म तीणा (वारीक बेजका) पडग्या ।

अठ र जाया जलम्या मिनखार तो आज इज दोयण री भावना कोनी । वारै रा लोग आव अर कुबद किरमाणी रा वीज ताप जाव । जर उण रा खारा फळ जठै र लोग न खावणा पड रया है । अक दूजे बिवाळै फाटी घातणिया भाज जाव अर पुलिस री कारवाही रा सिकार निरमास मिनख होव । भला भला मिनखा री गिनरत फसादिया म होवण लागगी ।

चौबीस घण्टे लग बल्लो पूछा म लुक बैठ रँयो । आगली सुब नाना बोल्या ।
 '—मीवाडै रा इण गाव-ढाणिया रँ वासिन्दा रा सिनागती बाड वणग्या है । मेहमान
 आव तो पुलिस म रपट दरज करावणी पड हे । रात रा बपर्यु अर दिन री निगणरी
 री गस्त हावै है । मीमा मुख्ता दन रँ जमाना रा पोड वाजता ई रवै है । आछी वान
 तो जा ।

बूढो कय नी पायो क थू आप आप तँ पुलिस रँ हवान कर दे । उण घर रा
 दूजा नाना नँ खता कानी टोर बहीर किया अर बल्ले कानी मवानिया निजर नाखी ।
 वान ? पुतरा कठ जावणो चावै ह ?

अकर तो उणी सहेर मे जावणा चावू ह ।'

माता सू मितण रो मन करै है ?'

बल्लो हाकधाक । नाने कीकर जाणी ।

बूढे र मुड उपास सी मुळन जायगी । 'सगली हकीकत अखबारा मे छप
 चुकी । सान्ता जिको कँ घायल होई है, उण सार्गे तेरो प्रेम परसग चालतो पुलम जाइन
 जाण चुकी है । सर जवान रो दिल तोडणा ठीक कानी । भँ घनँ सहेर री काकड माप
 छोड आवूला । स्यात माती री हालत देव नँ थन मदबुधि आ जाव ।'

बूढे टेक्टर री टाली मे रुइ र वारा हैठे बल्ले न लुकायो अर सहेर री काकड
 माथे छोडतो थको बाल्यो । 'जा पुतरा, रव तँनू सदमति देवै ।

तद ई साम्ही सू दो जीपा जावती दीसी । 'वेगा सो जुवार म जाय न लुक जा ।'
 बूड आ केवल ट्रेक्टर टोर बहीर कियो । अर तन सू बल्लो तीन दिन रात जुवार म
 लुक रँयो ।

नाने रो दीयो काळा काम्बल डील पर लपेट परी बल्लो चाराया छोड सहेर
 कानी बहीर हाया । ठण्डी पून रा फटकारा । ओस जर धवर बीच-बीच म मेह झड ।
 अडे अवलै मौसम म सहेर सुनैड रो डरो । मिनग रो नाव नी । हा, जठे कठ पुलसिया
 जाटे म बैठ परी धुणी ताप रँया । काळी काम्बल र कारण बल्लो धवर मे जेकमेअ होय
 रँयो अर उणीज चाराय माथे पूगो जठ क उण धमीड कीयो हो । बी न बेरा कीनी हो
 क साती किम्य जस्पताल म हँ । पूछै तो की नै । अर पूछताछ मे खतरा ई ।

कठे जावै ? किण नै पूछ ? हरेक अस्पताल मे तूड तो पक्कीज जाव ।
 अचाणचक बी न आप र उण बोलगाठिये री माद जाई, जिण बी न उलटती डाडी री राह
 पात्यो हो । बो उण र घरा पूगो ता बूवाणो मच्योडो हो । ठा पडी क गस्ती-दल रँ
 मार्ग भिडत म लारनी रात मारीजग्यो ।

बल्लो ऊय-मगा मुडियो । भीता माथे उण री फोटू समत इस्तिहार चंपीज्योडा ।
 बी न ओम् यान आर्द कँ अरार वा इस्तिहारी मुलजम है जर वा दहळग्या ।

जगतारमिष ! उल्टी डाडी माथ चालण री उणने त्त्यारी वरत देण जगतारमिष वी न चेतावणी दी ही ।

'मुण मितरा । इण अधारी गळिया म वडण रा ता रस्ता है निकलण री पण वाइ राह वायनी । जिना इण म वडे, अधार म घाटीज र मर जावै है ।

पण वलने नै तद तकात अधार उजाळ री पिछाण वाणी ही । जगतार नै उण कोम रा गद्दार करार दीघा अर मारवणा मानसा रो मागीद वणग्या । जिण रा मीग वा अमीर तक नी देख पाया । मरता पण वाइ करता । वो जगतार रै दर्जे जा ऊमो ।

जगतार वी नै दर्जे सू लोटाया वाणी । हाल हवीवत न कोनी पूछी । नी सवाल किया, नी उपदम दिया । गहज भाव सू भीतर निरा लग्या । जद वलना सुगता चुबश ता जगतार बोल्थो । मुकर है गुर महाराज रै परनाप सू कदै बदै गळत वाला ई मिनस री मददगार वण जावै है ।'

वलना समजघा वाणी । बस, वाको फाट वी वाणी दग्यता रैया ।

'सहर म कफ्यू नाफिज (लागू) है । दर्ग रा हागत है । थू पुलिम री निजर अर दगाइया री छूरी री धार सू बच'र आग्या, मुजर है ।

'पण कफ्यू क्यू ?

जगतार बोई पडूत्तर नी द बस, हासता रैयो । उण री हासी चौड माड बताई क कफ्यू ता उण दिन मू ई नाफिज है, जिण दिन उण वम काडिया हा ।

जगतार धिरचक हाय वंठया अर ठेठाव सू वात वरण लाग्या ।

वलने सोच रैयो । 'आ कंडा मिनस । जाणै है जेव सुमार कतली न आप रै घर म पनाह दी है अर पुलम सू डरै वाय नी । म्हने पूछ कोनी कं म्है जो कुकाम कियो है क झूठमूट ई म्हारै पिलाफ इस्तिहार छपाइजग्या ।

छवट वरला इज वाग्या । 'जगतार थारी वरजणा रै वावजूद म्है जो इ कियो, वो रा जवाब थू म्हासू माग्या क्यू नी ? अवार म्हारी जरुगत काइ है आ बूझी क्यू नी ।'

'बूझणो वाइ । अवार धन लुक'र जीवणा है जद तकात राख पावूला राखूला । ज थू थारा पुराणा भायला स मिलणो चाव तो पुगावण री तजवीज करूला । और थू वाइ चावै है जिकी वताय दे ।'

थू अेक वार म्हन साती रै वन पुगाय दे । फेरू थू जिको चावला वा ई म्है करला ।'

जगतार वी रो हुलिया तबदील कियो, गाभा वदळाय अर जियान तियान साती स मिलामा । साती ठीक हवाल ही । घाव कमती पडिया हा, डरपी घणी ही ।

बल्ले नै दख र तो चीराळी मार भाजी । 'थू हित्यारा है । म्हान मारणो चाव । ल मार । जर वा वावळी ज्यू उण जाग ऊभी होयगी । बल्ल रा मन किया । घरती फाट जाव जर वी नै निगळ जाव ।

सा ती बालती रई । 'थू कुण सा पुरसारथ कियो । कुण सो पुन कमाया । ज मिनख मारया ई सवाब मिल, (मुक्ति होव) तो म्हान मार । थू कवतो सातो थू म्हारी साचली साती है तो काइ आ इ है थारी साती ?'

जगतार वी नै सात कीवी ता वा मुडो ढाक र रोवण लागगी । जगतार बल्ल नै बार लिरा लाया ।

बोल मिल लियो साती सू ?'

'म्ह थार साग हू ।'

म्हार साग ? म्है ता अेक जग लड रैयो हू । थू म्हारो साथ दे सकीला ?'

जवै जग जुद्ध र अलावै म्हारी जिदगी रो मकसद ई काइ रयग्यो है ।'

पण म्हारो जग जाती टाटी पगडाण्डी भाजतै नी लडियो जावै । म्हार साग ता सीधी सडक भाजणो है । सोच देख । आटी बाकी पगडाण्डी तो किणी हिफाजत री जग्या पुना ई दे, पण सीधी सडक भाजणियै नै कोई आ पकडे ।

पकडण धकडण री म्हन फिक्कर कोनी । धनै जे हयियारा री जरूरत होव तो, उण ठोड पुगाम दू जठ हयियारा रा ढिगला लाग्योडा है । अर जे लाठी, छुरी सू लडणो है तो वा था सप्लाई कराला ।'

नही । म्हारी जग हयियारा सू नी लडी जावै । फसादिया रो साथ देवणो म्हारो काम कोनी । म्हारो आन रो मिसन है । अखलाक (नैतिकता), इंसानियत अर ईमान जिवा म्हा कन है, वा इज काफी सबळो हयियार है । थू चाल दख । जवार ई दुनिया म नफरत कमती अर प्रेम घणैरो है । हयियार दूबळा अर मिनख सबळो है । जरूरत पण मिनख री सबदना न जगावण री है । आम सहाराती नी लडै है । की स्वारथ लाग्या मिनख लढावै है अर उण लढावणिया नै, न किणी मुलक री चायना है न मजहब री । आप री रोट्या हेठै खीरा दवणा उण रो मजहब है, अर वा रो तीर जठ तकात चालै उठै ताई उण रो मुलक है ।

थोटी ताळ वाद अेक मियाद सारु कपर्णू उठाऱज्यो । वो ई चारायो अर वो ई मिनखा रो रलो । पण अवार वै साग तरकारी रा तरीददार नी हा । वै जगतार र मितान रा मिनख हा । मिनख लुगाई, टावर, बूढा, जुवान । बड रा बड भळा होया । हिन्दू, सिख, मुसलमान । हकीकत मे वा अेक भीड नी, समूचो हिन्दुस्तान हो ।

बल्ला भीत ज्यू ऊभो । जगतार बोल रैया । लाग मुण रैया । न कोई मच न गभा सम्मनन । राट चालता मिनख मुणण लाग्या । जगतार चाल्या तो लोग चानण लाग्या । जगतार क्वया ता क्वग्या । जगतार बताई ज्यू बोल रैया हा । जगतार बोल

रया। 'अमना अमन।' अर लाग वोल रैया 'ओम सात्ता। 'अपनी धरती जाडती। फिखापरस्ती तोडती।'

लागा रा समवेत मुर मुपीज्या ता घरा रा दरजा खुलभ्या। दूकाना रा सटर उठया। तां कर्म्ये इज उठाइजया। रस्ता, नारस्ता, चोरया मडका आपमरी म गुथमी। अक दूजे रें गळ मिली ता वत्ता गद्गदीजती सीक वात्ता।

'तो म्ह जवार चालू।'

'अवार काई विचार है?'

'वदी री राह चाल दरती। काइ मिल्यो? वास्तू मुडा काळा करण रें सिवाय। मूष, म्हारें डील सू वास्तू री गिध आवें है। दिमाग म हथियारा री चगत चिणिजी है। नफरत रा भाला म्हार हीयें म छक्का कर छोडिया है। म्ह पराछित री डाडी चाल'र मरहम पट्टी साट जावूला। पण पैली वियें रा दण्ड भुगता र फेरू सूद्धताइ रें गेनें जा पावूला फेरू जे मन रा मेल घुपीज्यो तो था वनें जावूला।'

जगतार फेरू कोई सवाल नी कियो। वस इतरो वैया। 'सद्गुरु थन रस्ता दिवावता रवैला, जे जोत मे जात मिलावण री वासिम करसी। सब रें सिवाय ओरू का बमान नी करमी। म्हें था री पेरवी नी करू ला। पण दुआ जरूर करतो रेंवूला। परमेसर कर, जद थू पाछो वावडे तो अक गुलिस्ता वण्यें मुलक म लौट र जावें। जठ अक फूल दूजे री खुसबोई सू सनीज्याओ होवें। अक रूस री डाळी दूजी सू गुथीज्योडी हावें।

□

धनवीरो

वरणीदान वारहठ

धनवीरो म्हारें घर म वड्या ता म्ह रासा उदास हा । उण ता आवता ही टोक्यो—'काइ वात है किया मुडा लटकाया वठया हा, खैर तो है ?'

—'अरे भाई, काइ वताऊ ? आज तो भीत खाटी होई !' म्है कैया ।

—'किया ?' उण पूछ्या ।

वो साम्हे पडी खाली कुरसी पर वंठ्या ।

म्है वताया—'का' वात वताऊ ? वात न वात रा नाम । थारला पाडोनी है नी चिमनियो, म्हार गळें पड्यो । म्हारा माजनी ले लियो । डाग ता मारी कोनी, वाकी की कोर वमर राखी नी ।

—'कोई वात ता होवे ?' उण कया ।

— वात का' वताऊ थू काइ समय अर के वो समय । म्हारी एक कहाणी म वीरो नाम हा, वो ता पण्डे कोनी, किण ही बता दिया । फेर तो बस, आव देख्यो नी ताव । सीधा गळें जायो खावण कुतिय री तरिया, म्हारें माथ वरस पड्यो । म्हारा तो खेरो छुडावणा थोखा हायग्या ।

—'बस, इती सी वात है । वा तो मुसळ है, वावळी टाट है । सफा आडू है, किण ही लगा दियो लाग्यो । म्है याने किती बार कह दी, थे म्हारी कहाणी लिखा, थारी पोथी म म्हारा नाम छपावो, फेर देखा म्है धारा कित्ता कोड करू, धारा कित्ता गीत गाऊ ।'

—'म्हार तो थारला नाम ही गळ मे आरैया है । थू और कहाणी लिखावै ।'

म्हारी कहाणी क्यू नी लिखो, देखा, याने वेरो है । म्हार सात टीगरया हायगी एक ही छारो कोनी । म्है दिन रात कमार्द करू, म्हारी पार पड कोनी । एक ऊट है, एक गाडो है । बीस बीघा जमीन है त्रिकी धारो कोनी दे । झान्नरक उटू, आधी रात रो आऊ । कदै ऊटियो बाद म जुडग्या, कद भ्रमंडी मानी पड जावै । कदै लुगावडी र वडतू म पोड उठ जावै । कद की टीगरी र ताप सिखा हो जावै, एक जीव तू आप पोछै । म्है ता भाजतो भाजतो मेलरी वणग्यो । दस जीवा रा पेट किया मरीज । मागतोडा वावळा वणा दियो । कदै रामस्वरूप आ मरें तो कद फूसियो । बाला काइ

करू ? आ जि'दगी ई कोई जि'दगी है । लग मिनसजमारै री बडाई करै, ओ ल्यो मिनसजमारो । म्हासू तो अे चिडी कागला ही चोखा जिका र आ कास तो कानी । आ कहाणी कोनी लिख सको थे ? राज न पतो तो पड कै थारी जनता कित्ती दुखी है ?

फेर वो थोडा डरघो अर उण हेलो मारयो— 'अे काकी, जे काकी ।'

उण म्हारी घरवाळी नै हेला मारयो । वीनै वो काकी कव । गाव म सगळा ही अड रिस्ता सू जुडेडा है, आ मे जात पात आडी कानी आवै ।

हेला सुणता ई म्हारी घरवाळी नै आवणो ही हो ।

—'अरे धनवीरिया,' — वा आवता ही बोली—'धनै म्हारी तूडी कानी लावणी ?'

—'म्है ता इण सारू ही आयो हू, लावो रिपिया तीन सौ ।'

उण रकम देयदी अर तूडी सारू ताकड करी ।

पण धनवीरै री वा ही कहाणी — 'म्हारै सात छोरघा होयगी, आरा पेट किया भरसू, म्है ता अवै 'अपरेसन' करास । चावै की होवो । म्है तो नाक नाक आ लिया ।

म्हाउँ घर सू बोली— 'अपरेसन' तो रैवण दे, वीनणी नै की घाल, वा अेन सीख सी होय रई है ।

—'म्है ता घणो ही सतरै रो रस पाय देवू पण पावू किणर बाप रो, रावडी रोटी मिल जावै तो ई घणी है ।'

— दख । धनवीरिया,' म्है हसा मे बोल्यो, 'धू अपरसन मत करा, अेक मौको और दे ।'

— जे छोरी हायगी ता ?' वो बोल्यो ।

— 'तो ब्याव म्है करसू,' म्है कैयो ।

— तो थारो कयो मान लेसा । अवक और सही । सात री जगा आठ हो जासी ।'

फेर म्हारै घर सू नाव गिणावण लागगी । फलाणिय रै सात छोरूया रै पछ छोरो होया, फलाणिय रै तीन छोरूया पर होग्यो । ढीकडै र छोरी होई ई कोनी । गाव रा पानडा खोल्या पछै काइ नीवडै । धनवीरै पइसा लिया जर चाल पडचो पण चालता चालता फेर कैयग्यो — 'हा तो, म्हारी कहाणी लिखणी है । काई कैवू हू थानै भूलीज्यो मत ।

म्है धनवीरै नै दखतो रैयो, दखतो रयो । धनवीरो क्यारो घडेडो है राम जाण । छाटी-सी देह डीत पर हाडका ही हाडका दीसै । झीणी सी चादरडी लपटेडी जिकी मे सीधी पतळी आकतडघा सी टागडघा । कारी दियेडो कुडतियो जिकी पर सीरालीर होयडो कामळियो । ठड तो सतावती हासी इनै । झाझरकै कित्तो रठ औसरै जिकै मे

कोई मुरदें नै इ कोनी काढ पण जा तो कोनी चूकै। चाल ही पड। नीचै जूता ता तकडा पै'र है जिक्का मे पामोजिया ई है, पण पट धाधा, पट ई एक कानी, साथे दस पट और जुडेडा। बडी हिम्मत है इण छोटी सी काया मे। बडी मजे री बात एक और—ओ घर सू निकळै, निकळता ही लोगा न बतळावता चालै—'अरे मालिया, काड होरया है। ठीक ता ह, कामडा ता ठीक चालै। ओ रे खीवला, टावर तो ठीक हायग्यो होसी। काल वीमार ही नी।' फेर आपइ हसै, अगल नै ई हमाणै री चेस्टा कर। आपरी पीड न दावणै रो ओ ई एक रस्ता हे।

एक दिन म्है बार निकळया तो धनवीरो आपर ऊट न गुवाड मे बाध राहया हो।

—'अरे, काई बात है, धनवीरा?'

— बस, अवै मौत रा बुलावो आयो है।'

— क्यू मई?'

—'ओ, थारलो भगवान् है नी, ओ ई माटोडा सू डरै है, निबळ रो वेंरी है।'

—'बात तो की होसी।'

—'ऊट बादी म जुडग्यो।'

—'इलाज करा भाई।'

— हो लियो इलाज, जो तो मरसी, पण म्हान और मारसी। काम बंद अर खरचा सरू। मरणै म आग्या। टीका दिरा दिया, दवाया दीरादी, जा तो दिन दिन बेठया बग है, हाल ही कानी।

साच्याई धनवीर रा ऊट ठीक कोनी हाया। वा धनवीर रो गाडा कोनी जोडया, वो सडया हो कोनी होवै। वीरा गोटा जुडग्या। पण वीरो खानो-मीणो बंद कोनी, विया ही खावै पीव। धनवीरा हार नै म्हारै कनै जाया।

—'म्हूनै वैक सू लोन दिरादया, म्है और ऊट लेसू।

— आ ऊट?'

— ओ ऊट गया काम सू। टावरा न भूखा थोडा ही मारणा है।

—'की दवा दारू दिरावता।'

—'धान ती ऊट रा बरा नी इण री दवानारू रा। य ता आक जाणा हा, अक कलम ताडजै, एक वागज अर कलम री स्याही। क्हाणी लिखा अर मौज क्यो। पण म्हारी कलम ता ऊट है, मान दिराओ ता एक ऊट और ले आऊ। पारी वैक वाळा सू सैदमैर है।

म्है यो तै बैक सू जान दिरा दिया अर उण एक ऊट और ल गिया। गाना फेर धानण लागया, घर री गाडी ई मालण लागी।

एक दिन वो आपरें पुराणिये ऊट वन खडघा वीरा लाड करै ।

म्ह देखन कयो— 'जरे, क्यारो लाड करै है, इण ता धनै धाखा दिया ।'

—'अजी इण बडी कमाई करी म्हारै । वीमारी विपरै सारै । म्है तो इणन भूखा बानी मारु, विया ही नीरा गरु विया ही पाणी पावू । म्हारा ओ ही बेटो है । म्ह इणरा गुण नी भूल सबू । ओ ता ओ ही हो । म्है सोचू, जठ दस जीव पाळू उठ म्यारवा और सही ।'

मोह माया सू बडा होव ।

और फेर एक दिन धनवीरै रै घर थाळी बाजी । वीर घर रा सूरज ऊग्या । उण डोळ मारु खुसिया मनाई । लाबी उदासी रा बादळ फाटघा, मीठो बायरो चालण लाग्यो । जाडोस्या पाडोस्या रो ई जी सोरो होया ।

म्है नाव र दिन वीरै घरै गयो । धनवीरै रो घर काइ हो—एक छोटा सो दरवाजिया जिकै रै कीवाड कोनी । दो तार बाघेडा राखै । दरवाजिय मे एक बानी तूडो पडो । मायनै एक नाव रो आगणो । आगण रै बारै एक छोटी-सी गुवाडी जिकै मे एक बानी ऊट खडघा अर एक कानी भैस । दा कच्चा कोठलिया जिका म तीन तीन माची मसा नावड । एक छोटी-मी रसावडी जिकी मे चूल्है रै स्हार फगत राटी वणावण बाळी बैठ सक । छार्या सू आगणो भरेडो, एक ही साचै री घडेडो-सी पतळी पतळी, गोरी गोरी ।

पीढे पर धनवीर री बीनणी बैठी ही, घूघटो काड रारया हा गोडा ताड । पीळा ओढ रारया हो । बेटै री मा हायगी ही । पीळो ता आडणो ही हो ।

म्है बेटै र हाथ मे दस रिपिया दिया, धनवीरै ना करी, जद म्है बंया—अर हजार स सू ही लारो बानी छूटतो, अरै ता दस ही रिपिया सू लारो छूट है ।

जद धनवीरै कयो—'अजी थारा ही दियडा दिन है ।'

धनवीरो भोत राजी हो, वीरो मुडो चैळक हीरयो हो जाणै बीन एक साथ कठ सू धन मिलग्यो होवै । उण म्हारा नोड करघा, चाय-पाणी री पूछी, पण म्है ता रामा स्यामा करन घरै आयग्यो ।

आ घरती काळ आपरी विरासत मे त्याई है । जठ कदै कदै जमानो हाव, जमानो होवै तो अठै रै मिनखा रो रतबो ही यारो हो जावै, नी ता सगळा ही फीका फीका उदास उदास ही रैवै । अठै वेई साला सू एक नहर रो खाळियो आयेडो है जिको आ रो रठाण रो अघार है, नी तो अ ऊजडडा ही हा । इण खाळिये रै स्हार लोगा री मैणत मजूरी चाल जाव । कोरी बिरानी जमीन पर जि दगी गुजारै, वीरी तो माया पच्ची सी है । वारा महीणा बादळा बानी ताकता रवै, वरस जाव तो वाह वाह, नी तो जमी नागी पडी रैव । गाव ई भूखो अर धन पसु इ भूखा ।

धनवीरो बिरानी जमीन रो धणी है, जद ही ता ऊट गाडो राखै । जमानै म ईवो ऊट गाडो कोनी छोडै ।

धनवीर रा वारा महीणा एकसा ही वग है। जिसा दिन उण विसो ही छिज जावै। छोरचा जुवान हावण लाग रई ही, पर दो साल समे रा निकळ्या, उण एक साथे दो छोर्या नै टीबडिये चढादी। की घर रा सुवाज हो की मागत करली। वा मागता र सार कोनी रैवतो, काम हावणो चाइजे। वो जाणै हा क इण घर म पैरासूट सू तो धन ऊतरै कोनी, इण खीचाताण मे जाभ्यो हो, आ हो खीचाताण लारै छाडन जासू।

धणा ही दिन काइ वरस गुजरग्या, म्है म्हारै धव लागरयो हा। मारी रा वारणो साल राखयो हो। चाणचकै किण ही गळी मे चिरळी मारी—'अरे धनवीर रा हाथ कटग्या।

म्हारै काळजै धण री सी चोट पडी, चालता चालता जो काइ हायो ?

म्हन क्यारी ध्यावस होवै ही। म्है काम छाडचो अर वारै गया जद पतो लाग्यो—धनवीरो कुत्तर कटावै हो अर दोवू हाथ मसीन म आयग्या। हाथा रो चूरो मूरा होयग्यो। वीन जीप सू स्हैर र अस्पताळ मे लेयग्या—देखो काई हाव।

भोत माडी बात हाई, वापडो टाबरा रो पट भर हो, गाटली गुडक ही, अब काइ होसी ?

घरे वीरो लुगाई अर टाबर झरर झरर राव। वारा आसू थमे ही कानी।

वीरो ध्याहार समझा या गाव री अपणी रीत नीत, धनवीरै नै तो कोनी लाग्या क कठै सू तो रिपिया आया, कुण दबाइ ल्यायो, कुण आपरेसन करायो कुण दाळ दळिया दियो, कुण घर रा धन पसु नीर्या, पण वा एक दिन ठीक होयन घर आयभ्यो। लोगा बतायो वै पूरा पाच हजार रिपिया लागग्या पण दोवू हाथा रा पजा कटग्या, हाथ डडा सा रैयग्या। अब वो करसो काइ ?

म्है इ धनवीरै न देखण गयो। धनवीरो एक लाटली म सूत्या हा, दावू हाथा र पाटा बधरया हा। वो भाची र अेन चिपरयो हो। मुडा होरया हा धाळोघण्ण।

धनवीर म्हन देरयो हाथ जाड्या अर हस्यो। वीरी हसी ओजू उडी कोनी ही।

म्है वीनै बतळाया—'किया है धनवीरा ?'

— काइ बताऊ, काका, करमा रा दड भोगणा है। इण जलम म तो वीरो ही घुरा बोनी कर्या। लारलै जलम रो किनै बेरो। पण मालिक साथे लडाई होयडा है। बदळो लेव है। बदळो तो म्हा सू लेवा, आ जिलफा काई बिगाडचो।

धनवीर री वीनणा रा आसू ओजू सूक्या कानी हा। टाबरा री इ आरया भरीजगी।

वो फेर बोलयो—'म्है हारयो कोनी जीत्या हू। हारता जद म्है मर जावतो। पण आजू देखो अवार ही किसो लारो छुटग्यो।

— अ टाबर ? म्है सबाल करया।

—‘टावरा रा भाग तो धापने माडा, म्हारें घरे आयो जिकें पण तू ही मांडोः
अब अ खासी काड ?’ वो हसतो हसतो एकदम उदास होयग्यो ।

म्हें वीरें नानडिये कानी देरयो, वो पाच साल रोतो होतो । एक बाळी, ने
रावडी रोटी खावण लागरयो हो डील ई भरवा हो ।

म्हनें परदेस जाणो पडग्यो । म्है दूर चलयो गयो कोसी, कदे, कदे गावनें याई
कर लेवतो अर धनवीरें नै ई । इण आदमी रो नाव आवता ही, कई देर ताइ फिकर मे
डूग्यो रवतो ।

ठीक ठीक तो म्हनें याद कोनी पण सात साल सू गाव मे आयो । आवता ही
म्है धनवीरें रो फिकर करयो ।

म्है सीधो धनवीरें र घर कानी चाल पडघो । पण वो तो म्हन रस्तें मे ही
मिलग्यो । ऊट गाडें र आगें होरेंयो ही । गाडें पर तूडी लदेडी ही । आपरें दोवू हाया री
अकूणी रें यिचें ऊट री मोरी घाल राखी ही ।

उण म्हनें देरयो अर दोनू हाथ जोडनें राम रमी करी । हाथ तो बयारा हा हाथ
रा डडा हा ।

—‘काड हाल है र, धनवीरा ?’

—‘धे तो परदेस रमग्या, बारोठिया हाग्या । म्हानें तो भूल ही ग्या । हाल
ता देखल्यो, आखडयो जिसो पडघो कोनी । था लोगा स रामरमी करण जागा हाथ
राख दिया ।’

—‘जठे चाह है उठे राह है, भाई । काम तो कर ही ले है ?’

—‘हा, हा, आ देखो, इतो ही कट्यो, आगें सू ई कट सक हो, म्है तो खर
मनाऊ हू ।’

—‘जद तो मार देवता ।’

—‘मार काई देवतो, नरक भोगतो । पण अब म्हें किणरें सारें, छोरो कमाऊ
होयग्यो ।’

म्हें छोरें कानी देख्यो, वो तो पूरो जवान हारेंयो है ।

—‘दाई रें पगा ताग ।’ धनवीरें कैंयो ।

छारा म्हारें पगा जाग्यो, म्हें वीरें सिर पर हाथ फेरयो । छोरो धनवीरें सू
ऊपर निकळें हो । बारह-तेरह साल री औस्थ्या मे ई वो पूरो जुवान लागें हो ।

धनवीरो बतावण लाग्यो—‘सर रा दिन दोरा टीप्या, काका, पण दो साल
इकल गजमानो होयो, बसग्यो । दो छोरया नै और फेरा दे दिया । अब तो काकडा
लागरेंयो हू, छोरचा तीन रई है ।

‘बूढो तो होयग्या धनवीरा ।’

‘आछा ई है ।’ उणरें चरें माथे उदासी पुतगी । चालण सू पंली म्हें देख रेंयो
हा उण रें मुड वा मुळक नी ही । उण म्हनें कहाणी लिखण रो तकादो ई नी किया ।
म्है गाच रेंया हू—‘धनवीरें अर उणरें जुवान बेटे री कहाणी म परक काई हाबंला ।’

□

मायलो मिनख

हरीश भादानी

लारल छह बरसा सू भै दोनू माथै रैवा । च्यार-पाच घटा कालज मे, इकातर दूज घर री बँटव म अर दीतवार नै तो आग्यो आग्यो दिन मू ई सिझ्या होय जाव । कणै ई मा टाक ता कणै ई भाइजी दावल दयर जीमण न उठाव ।

दोना री वाता इसी क खूटण रो नाव ई नही । मधरी मधरी वाता री घाव अचाणचक भभकारा मार चातण लागै, मा सुणै ता भाईजी ई सुण, कठैई लड ना पड । जिया इ म्हारी क करमू री निजरा मा सू चोनिजरा होव, जाणै बिजळी गुन हायगी होवै ।

अरे हम थाकग्या होबोला की गळोमीलो करतो भाईजी छापो सावटता बोलै । मा गणमण करती जावै, पाछी आवै । थाळकियै मे बेसण री पूडघा अर कटोरा म दही । पोथ्या नै हाथ री बुजारी सू सरका र थाळकिया राग ।

‘या दोना री वाता कदई खूटै ई कोयनी अर वाता री ताण इसी क ए तडिया क वै लडिया पाडोसी सुण तो काइ समझै ताडी — मा र वाला सू ओळमै सू बेसी हेत दुळतो लाग म्हा दोना नै ।

करमू तो की नी बोलै पण म्हारी चरखी तो चाल इज ।

मा आ वाता स माथै री सोच साफ होवै । सोच साफ रवै जण काम ई साफ होव । नी जणै दखलै काइ करियो छाटे वासवाळा काकोजी जर अबै काइ कर है वारी जीवण ?’ तो थू वारै सोच सू क्यू दूबळो होव है ? अठै कुण दीस है थन काको जी जडा काम करणिया ?’ भाईजी छापो लिया बँटक म आय ऊमै । म्हारी तो मिट्टी पिट्टी गुम जर करमू ता साव भेळा भेळा ।

थू नही समझैली जारी वाता मा । पण म्हारी वात री गाठ बाधल आज । ई सू जिना पूडघा ना तो थू इ र ब्याव री सोच अर ना ई नौकरी री । आपरी करत न घापण दियै इनै कय र भाई जी हसता सरक जावता । मा आपरै कामा मे जर भै भळै रागता वाता मठारण । वाता राज री समाज री घर बिदरी । इया दिन महीणा वरम बीतता रैया । एक दिन वाता ई वाता मे करमू काम तपासण री वात कई । दो च्यार दिन जातर सू भाइजी नै कौयो भाईजी सुण र क्या देखसा

म्हा दोना री राजीना री एक ई रट इकातरे दूजे वाता रा घरकोतिया वणाणा

अनीतवार नै ढिग्या । काम री वात ना करमू दुसराई अर न ई म्हनै याद रई । भाईजी ही एक दिन हेलो पाडघो 'धरमू रे, अठी आई, ओ धरमू

याता री वगग-वगग न करमू ई धामी । 'जा नी, भाईजी हेला पाड रैया है' हू ई जचपळो सा उठियो । घर मे भाईजी ई है भाईजी साळ म मुडो ढाळया वठा हा ।

'थनै की याद ई रैव है कै नी, थू करमू रै खातर काम री बात कैई ही नी '

'हा भाईजी करमू ही म्हनै कैयो हो पण वी तो दूसरी की 'दूसरी भळ काइ हाव । थनै कैई तो थन ई याद राखणा ही खर सल्ला थू काल सू करमू नै म्हार दपतर भेज दिवै तीन घटा रो काम है भाईजी तो रमग्या आपर छापे म । म्हनै लाग्यो व म्हारा पग की भारी होयग्या है । बैठक म आयो करमू पोथी रा पाता पलट हो ।

म्हासू पण वालीजै ई नी मुड म जाण कवा । छेकड गदगदोज्याडो बोल्यो थू म्हन काम री बात कैई ही नी, थू तो दुमराई ई कायनी अर हू ई भूलग्यो । भाईजी धारी खातर काम रो जुगाड बिठाव दियो है । थू काल वाग दपतर जाये परो, ठीक तो 'म्हारी बात सुणता ई करमू हळफळार उठग्यो । म्हारै खाधा माथ हाथ राख दिया । 'साची कव है धरमू ? म्हन काम मिल जाती ? हू वी री जाख्या मे ज्ञाको घालू । झीणो झीणो सा तिरतो पाणी दीसै म्हनै । हू वी पाणी रो अरथ करण रो जतन कइ कै करमू ओ जा वो जा

इकातरं दूर्जे री वाता तो थमगी पण रवीवार तो नही ज चूकतो । थू पढी काई वाहली री रामकथा रूव ई चेपा लगाया है '

'काल ही तो सतम करी है, चेपा काकर कवे है, जहिल्या रो 'एलिनेशन तो अनूठो ई है फेर जनक रो पछतावो '

'टाळवी वाता ता जग्या जग्या है पण पूरो कथा सार किण अरथ म नूवो है ? धरम अर मिथक री कथावा न ता दोना मू अळगी करीजै जणई तो नूवी दीस । आदिम जात्या न जोडण री कथा तो इया लाग जाण विनोवा रै सपरदाय रो कोई आदोलन राम हावो व रावण, हा तो दानू राजा ई, राज रै बघाप पेटै वुणीज्या ताणा-बाणा नै ममझ री आख सू देखा कै नूवो राखण री कोरी भावना मे बैवा '

'म्हनै लाग करमू थू एकै समचै निरवाळो सिरा थाम'र तोलण लाग जाव '

'अरे तीन बजगी ! कपडा धावणा है । जच्छा धरमू अवार तो हू जासू । ई राम कथा माथ भळै वाता करसा । ई राम कथा रै लगोलग आज री राम कथा ई तो वुणीजै है '

हू साचू आज री राम कथा करमू कपडा धोवणा है करमू अर कया

धावी कपडा लाया है धरमू गिण र राखलै 'म्हारै मोच री बिणगट बिग्वर जाव ।

भै नही भैसाण मारे । निरा दिन याळजे मे घसियोडो रेया इम्त्यान रा भसाण । 'काई ठीक चाले है पढाई ?' 'परचा ठीक होयग्या नी' परचा पूरा हायग्या । पण भैसाण तो काळजे म बँठो ही हो, आज निसरचा है । हू छापी लिया बठो हू । करमू री उडीक है म्हन मा सीरो यणावै । भाईजी पचास रिपिया दयग्या है । म्हनै लाग हू कोड मे की फूलग्यो हू

हू पैले दरज पास होयो हू । करमू री जव्यन अर पूरे सूवे म दूजो नम्बर लिया है भाई होयो काई आज हाल ताइ नी आयो

धरमू आ लाडी, सीरो पडा ठडा होव, आ जीमल कितरो राजी होयो । धारो भाई रतनू धारो रिजल्ट देख र । थार यातर वपडा लावण गयो है । ल आ अबे किणनै उडीक है

'मा करमू को आयो नी आज, पता नी । काई होयग्या आज ? थू अबार ना पुरस हू वीरै धर जाय'र आळ । दोनू माथेई जीमसा टा है धनै मा करमू पूरे सूवे म दूजे नम्बर आयो है । वस हू ओ गयो र ओ आयो

हू करमू रै धरै कदेईसीक जाया करतो । कारण तो काई खाम नी हो । हा धर छोटे हो अर परवार बड्डो । एक दो वार बठा ई हा पण घणी देर वाता नी होई । म्हारो अम्पास ई नी पडियो । फेर म्हारो धर ई विचाळ पडतो । ई कारण करमू रो आव जाव म्हारै अठेई वेसी रैवतो । हू ता कोड सू भरीज्योडो हो जोरसू ई हलो पाड्यो

'करमू ! जो करमू ! करमू !

करमू री वैन वारण माय सू ई बोली— भाई तो वायनी ! आप आओ !

'कोयनी कठ गया है तो

'कदेई कैयर नी जाव वस आवै अर जावै, काइ करै काइ नी बगै म्हन ई टा कोनी कवता करमू रा बूडा पिताजी वारै निसरै । हाथ म नेडियो, सपेद मुक् मायो । डील माथै उमर रो भारो लदियोडो लाग्यो म्हन ।

'धोक बाबो सा, हू तो दिनुगै सू उटीकू हू करमू न रोगीना मिल पण आ नी आयो अबार ताइ देखो वीरो रिजल्ट आयो है वा अबल दरजे सू पास हायो है । अर सबसू बडी बात तो आ बाबो सा वो आखै सूवे मे दूजै नम्बर आया है '

'काइ कैयो थू भळै बोल तो काई नाव धारो थू धरमू है नी । काइ होयो पास होयो है काय मे पास होया है करमू बता ता चाल मायन चाल अरे सुर्ण है सतूनी । धारी मा न बुला सस तो हा वाच तो । काइ पास हाया है

म्हारो मुडो किण ई सी दियो है । हू करमू र पिताजी री फाटयाडी आग्या देखू । करमू री मा भीत रो सायरो लेयर गोडा थामता सा बठे करमू री वैन गूनी सी ऊभी है । हू बोल्यो क सरणाटो ढोळ दिया हू जचरा सू एक एक रा चेहरा देखू । साळ मे घूमती घट्टी घमगी । रमोई सू वारै आय र वरजी पूछे काई हायग्यो धरमू भाईजी

सतूडो झाड़ू लिया ई ऊभो है छेकड म्हनै ई तोडनो पडै मून रो मणीको 'करमू एम ए म पास होयो है । पंले नम्बर आयो है । 'करमू एम ए पडो है । पण क्या तो कदई नही । हा काम माथे तो जावै है कठई, रिपिया ई घर मे देवै । पण पढण रो तो कदई नी कयो । म्हार कन तो पढाण री गुजास ई कटै । म्ह सू परवार ई दौरो पळ ।' म्हन लाग म्हारै कोड माथे पाणी पडग्यो है । ह भोजग्यो हू । करम रै घर मे ई ठा कोयनी क करमू पडै तो हू चालू बावोसा मा उडीकतो हासी जावै तो कैया धरमू आयो हो बोली री ठक ठक सू टूटया मून रो मणीका पगा माथ जा पडयो पग नी उठै

'वठ नी घरमू, आवतोई होवला, म्हनै बता तो सरी वो का-काड करै घर म रवे ता पोथ्या सागै अर वार '

'अर घरमू थू अठ हू ? तो घरै जायर आयो ह । मा कयो कै थू तो म्हनै बुलाण गयो है । रिजट्ट री बात ता म्हनै मा वतार्ई । आज ता दपतर ले उठ चाला मा उडीक हू अवार आयो काका '

'करमू थू पढाई कर, म्हनै ता घरम् वताई आ बात घर म किणन ई ठा कोयनी । बस ठा है तो आ कै थू आवै अर जाव करमू । कैवता कैवता करम् रा काका गळगळा हो जाव

इण मे कैवण री काइ बात वाका जण्ता ई विराजी होवो सतू जा काका न मायन ल जा, ले आ, मा नै दवाई दे दे बस हू अवार आयो चाल घरमू । वठ मा कण सू उडीक

चीचतो सो करमू म्हनै बार निकाळ लै । राम्ते म की नी बोला । वैठक म आय वठा । मा हरखी हरखी थाळी राख जावै । म्हासू तो पण भळई नी वालीज ।

करमू म्हनै कवा देवै हू करमू न देखू । म्हनै लाग कुदण स चेरो उकेर दियो है— लखा तो किस्स सोच म पडिया है थू

करमू, थू बावासा नै ई नही बतायो क थू पडै है काम ई कर

वताण सू काइ फरक पडतो घरमू । वाको ता जूण रा विखा खेलता खेलता गाठा सू पला ई साठीकड होयग्या । हान ही खटै ई है । जिया तिया दमवी हू इज गाठ वाधली । घर रा हान तो सचत्रण हा ही । कइ कवता वाका नै मार ड तो बघता

'काम री खातर कितरा कामज वाळा करिया, दसू देवळवा धरकणा घाकी । चपरामी इ नी राखो किण ई । जठै जाऊ जठै कैनु, वठ-वठ दीस्यो लाव लाव रा पाटयोडा वाको । वाका म भरणवाळा भाठा हा कठ घरमू छेकड चरणदाम ई पसीज्या । छऊ घटा री होटल री लटणी ज्या त्या काडचा तीन वरस । चरणदाम री ई मायली मुनगी । सो रुपल्ली म दा काम मधै 'करमू एव सी पचास देसू पण काम तो हमै वाग्रह घटा ई करणा पडनी सुणता ई सीकम्प बैठग्या आ टूटी वा टूटी मकळप री डार मकतै सक्त ई तो थन क्या क की काम तपाम । भाईजी माघ दी

डोर होयगी नी आधळ घाटी पार 'भळ कार्टे साच है ? तो ले जीम, सीरो ठडा हाव '

'कास करमू हू पैला ई झाक लेखता थारै माय हू ई काई इयाई करतो ता पण म्है तो भाईजी अर मा रै आसर ई रयो । वार माथै भार ई रैयो ।'

नही घरमू, आ बात नही, मा अर भाईजी थनै बोझ मान'र थोडी पढायो । आरै कन साधन हा आ साधना नै वा थारै यातर बरत्या, जणै थारी पढाई होई । थारो सभाव इसो होयो । थारा म्हारो मेळ निभियो, साधन अर मोच तो छोटे बास वाळा काकोजी कनै ई है काई हायो जीवण रो । वारा साच जे सही हावता तो जीवण इया भटवतो काई ?

'करमू जिया जीवण एव छेकडलो सूट थाम्याडो लागै, वियाई थू जद जद ई रामकथा माथै बोल, त्रिसण चरित्र माय बोल, म्हनै लागै थू ई अति कानी जा रया है ?'

'नही घरमू हाल रे घडी तो आ बात म्हनै नी लागै । काका नै होटल मे बरतण घोवण रे बात वता देवतो तो वारो विरामण जाय जावतो । भलै ई वै म्हन की नी कंवता, पण माय सू तो टूट ई जावता । आ तो थू ई जाणै है कं आज काय रे जात अर काय रो घरम, फेर जूण र पटे किसो काम जोछो । पण सस्कार तो है ही । आसू जडियोडी है सोच, देखै ही है नी अेडै सोच रा नतीजा, लड रैया हा, मर रैया हा, मार रैया हा, पण नी उगत नी आय रैई है । क कुण मर है अर कुण मारै है । थन वाडो लागू हू नी हा हू वाडो, पण वाडो तो बोलू खुद नै बदळण सारू । पढाई रै नाव, शिक्षा र नाव । घरम करम रै नाव जितो साम्है दीस जितो दिरीजै । आनै बजा ठोक र नी लेसा तो स्यात किणी वगत थू ई, हू ई वा सिरसा ही होय जावाला । पढाई रो असली अरथ तो भणता गुणता माय सू नूवो मिनख निकालनो है अच्छा तो हू चालू ।'

म्हैसू उठीज्या कौयनी । रोजीना बँठतो अर बालता करमू म्हनै पैला तो इसो नी दीस्यो ? करमू तो वो ई है म्है इज नी देरयो ? आ उगत करमू कनै कठै सू जाई ? हू बँठा बँठो सवाला स उळमू साम्है देखू करमू तो गयो पण वीरी छिया म्हन म्हार साम्है साव ऊभी लाग । हू उठ र देखू म्हन लागै क करमू जितरो डीघो है । चाळ पजामे म म्हन नूवो मिनख दीसै । मिनख माय सू नूवो मिनख काकर निवळै करमू, वता करमू काजर निवळै ?

□

सारस री जोडी

हरमन चौहान

सहर सूरु म्हारो गाव प्रस कोई बमोम डाढे व आतर होवना । जो उगूणी दिसा म अेव भावरी री खाळघा म बस्योडा है । इणरें घुराऊ जर लवाऊ दानू कानी तळाव है । गाव र साम्ही तळाव री पाळ लारें आवा रा हबडा ऊभा है । एण अवराई रो ओ दरमाव जठे घणा सावणो लागें । म्ह इण अवराई रें हठै वेंठो हू । जद जद ईं म्है जठ जायो हू म्हन जाण क्यू मन री सायत मिलै है । अवार व अठ सायत रें वास्त इज आया हू । आ आवा री डाळया माथें मीजरिया बोरावता म्है वेईं दफै देखी हू । भाळाप री आळू केई वार ताजा हाय जाया करें ।

म्है अठे इज भाई भीमसिंह रें सागें रमतो हो । म्हारा कावाई भाई सा सागें अचपळाया करतो हो । दुपारी रा तपता तावडा म बदे बदे तळाव म भैस्या माथें चढ'र गग बीडता हा, व मीडकया मारया करता हा । उ हाळें म म्ह गाव रा छारा साग जठे रा रखवाळा कूजडा न चकमो देयर वरी रा गुच्छा माथें 'तऽ' करतो भाटो वगावता अर भाटा रें सागें दठ दठ वरया हैठै पन्ती, म्है पुरती सू चग र चाटी दे जावता । खूब हसता खेलता रैवता हा

वै दिन जवै कठै ? भाई मद्रिक म फँल होवता ईं छानें फौज मे भरती होयग्यो उणरो वागद आया इज ठा पडी ही । म्है पास हायर जाग पढता- 'वी अे ' कर लीवी । फौज म भरती होया पछ भाई रो तो दो वरसा माय ब्याव ईं होयग्यो । जिका जेक साग रवता हा, या लोगा न अब मिलण रा इ जादा पडग्या । म्हारें साथ रा सगळा लोग आप जाप रा घघा पाणी मे लागग्या हा । जेक अेक करनै भायला विछडग्या । म्है अकनो गाव मे गिडक मारया करतो वरारी म । कोई ठावी नोकरी री जास करें हो । राजिना सहर जावता अर वेंवेंसी रा कालम अखवार म देखतो, अरज्या लिपतो । जिण तिन सहर जाण रा मूठ नी होवता ता अवराई री इण छीया मे जायर वठ जावतो ।

भाई रो नूवा नूवो ब्याव होया तो उणरो रामो इज विगडग्यो । वा पालतू गाव म नी जावता अर नी ह्याई माथें वेंठता । घर सलामत हा या फेर आ अवराई जठ दा महीणा म्ह सागें वठर काटया हा । म्है सहर जावतो तो गिझघा पाछा वावडर उणमू मिलता । वो डोलिया माथें पाडघाटो लाधतो । चाणचक वल-वद जावता ता भाभी-मा म रौळ व कातक करताडो लाधतो । म्हन देखर भाभी-मा घूघटा काट निया करती ही । भाई घणोईं वरजतो कें देवर सू काट घूघटो काटै ? पण वा रा वेंवणा हो व

‘देवरजी आपरें सायना है, म्हें घूघटो काढण सू किसी घिस जाऊली ? देवरजी फेर टावर ई ता नी है, लूठा है अर लूठा देवर सू वात करूला तो लोग काइ कँसी ?’

अन्सर म्हे तडकें तळाव री तीर ऊमा-ऊमा बाता करता, उठें री दरमाव देखता । मिनान करणें री मूढ होवतो ता पाळ रें विचवें आयोडी मोरी परसू गठा वोडता । तीर मे कदै सारस री जोडी कुरळावती तो म्हें कवतो—‘भीमा ! वा देख सारस री जोडी, अकें साग कित्ती फूटरी लागै है ?’

‘हा, र । जोडी जोडी सारस री । हर टेम अकें सागें रवें, अकें दूजा रें ताइ मर जीवै है । रामजी सू म्हारी इत्ती इज अरदास है कें आगलें भी मिनव-जमारा नी देव ता म्हा घणी लुगाई न सारस री जूण दीज ।’—भाई वोल्यो ।

म्हें कँया—‘भाई अवार किसी कमी है ? सारस री जोडी इज तो होयें । इत्तो हेत प्रेम है क जातरें होवो जद तो वस दोनू कुरळावण लागो हा ?’

‘नी रें रोल मत ना कर ।’

रोळ विण वास्तें करूला ? भाभी आप विना अर आप भाभी विना नी रेंग सके हो । भाभी धारें विना जीमै कोनी अर आपन तो वा विना काई अच्छो वज नी लागै । अठें तळाव ताई फिरणें न म्हें जबरईसू आपन लाया करू हू । ठा है ? ब्याव रें पली स्टैर जावता तो रात ताड नी आवता, जवें कदै स्टैर जावो तो कित्ती ऊतावळ मचावो हो तौटण वास्तें । सारो दिन साळ म घुस्या रेंवो, गाव रा मगळा लोग आपन चिढावै है, कय बात मलत है काई ?

अिसी बात सुणेंर भाया मुळक जाया करतो । अेकर तळाव मे छली कानी कोई घोवण री चीस पडी । तळाव मे अेक धोवी मुळच्या खाय रेंवो हो । म्हे लोग दोडर उठें पूग्या तद ताइ तो धोवी बापडा डूवग्यो हो । घोवण हाय भराय मचावै ही । घडीक भर मे गाव रा लोग भळा होयग्या हा । कोई टावर घर भाभी नें समाचार दिया क तळाव मे जेक मिनस डूवग्या है । भाभी तो तुरत भाखरी नाघती इज आई अर घूघटा न थोडो सोक ऊचो करर म्हार बानी आगळी सू इसारो करतोडी म्हन अेक कानी बुलायो । पछें घूघटा म इज म्हारें सू लडण दूकगी । पली दफ उणरो म्हार सू बोलणो होयो । म्हन भाभी रा गुस्मा माध मजो आव हो । म्है मून मून मुळकें हो । वा वोनी—‘हीडीकाढिया नें हमी आय रेंई है, म्हारा तो अवार जीव निकळ जावतो जे आन की हा जावतो तो ? खबरदार, जे आम सू आनै तळाव माध लाया ता ? अवे अठ काई तमामा देखो हो, चालो घरा, आपरो भाई सा नें ई बुना ला ।’

‘भाभी ! जवार ता चालणो मुसकल है, भाई तो पुलिस मे खबर देवण गया है, अवार पुलिस आ जामी । वयान हावैला । पछें लाम री चीड फाड होवैला । घाणा म म्हा नागा रा दमवत अर मवाही हावना, जल जाघर ।’

‘राम ! जा विंगी आपत ? ये जीम र तो जावता ?’

मरया माध कदै जीम्या करे है काइ ? जा अे जा भाभी ? म्ट सिइया न जीमग्या । तोगी फिर करी ?’

‘चौखो म्हारा कुणवहघा ।’

इत्ता म भाई आयग्यो हो । सागै पुलिस ही । भाभी नै दखर वा सीवो
म्हा बन आया अर भाभी नै बठै देखर उणनै जचरज हाया । भाभी घरै चालवा
रो जिद करवा लागी ता उणनै भाई समझाई जद वा घर बहीर होई । लास रै
साग म्हे ई स्हैर गया । थाणा म मोडा हायग्यो । रात म्हैर मे इज पडगी । घरै पूगा
जद सगळा लोग सूयग्या हा । भाभी आग उडीव करै ही । म्ह दानू दादोसा वनै
बारोठी म गया तो उठर बैठा हाया अर सूब डाट लगाई । पछै भाई रै सागै वारी साळ
म पुस्या ता आगै भाभीसा बैठी बैठी रोवै ही । भाई उणनै डाट लगायी—‘काइ
होयग्या ?’

‘होयो जापरो माथो । फिकर करती अठ मरगी हू अर पूछा हो—काई
हायग्या ? देवरजी रो सागो छोड दवो ।’

—‘क्यू ?’

—‘अ कदै ले टूवैला आपन ।’

—‘अर म्है कद लडाई मे इज मरग्या ता ?’

—‘तो पछै म्है जीवती कोनी रबूली । जीवती रई तो सती हा जावूली ।’

—‘सती हावण रा जमाना गया, दूजो माटी कर लीजै ।’

—‘सरम का आवै नी कवता न ? म्ह ता इत्ती उमर भैमाता सू लिखा’र नी
साई हू । आप सू पैली मर जावूली ।’

—‘म्हारै सू पैली जे थू मरगी ता म्हे उण दिन भरपेट फाफरा खावूला ।’

—‘झूठ ! म्हन देरया विना तो आपन चन कोनी पडै अर फाफरा खास्या ?’

—‘बैडी, दूजो ब्याव रचाऊला । कळदार खरच करर क्षमक लाडी लावूला ।’

—‘चौखो ! कर लीजा ब्याव, ल आईजा लाडी ! अब जीम ता लो ?’

—‘थू जीमी कै नी ?’

—‘जीम लेस्यु ।’

—‘हू ! भाभी तो थ्हारै साव बडी आयगी ।’ —भाई म्हनै ठमको दिया अर
पछ आगै कयो—‘इणरा तो टका करणा पडसी ।’

—‘व्हा हा । रैवण दो अब, देवरजी बैठा है नी तो अवार सुणाती कै
टका करता ई जावता ?’—भाभी बाली ।

म्है दोनू जीम्या जद पछ वा जीमी ही । दावू इया इज ममकरिया करता रैवता
हा म्है दोवा रो हेत देख-देख राजी होवतो हो । भीमसिंह रो दादा अर म्हारा दादो
सा सगा भाई हा इण वास्तै कडूरो ता म्हा लोगा रो अक हो, पण सगळा यारा-न्यारा

रैवता हा । उणर अेक मोटा भाई हा, जिंका सती वरतो हा । भीमा रो बाप ता कदई रामसरण होया । अेक वन्ही मा ही, जिंकी जिघवा हा, हाल पपत्राडा पैली पीयर म वेरा म घमकगी ही । म्हारा दादा सा हाल ई तदरूस्त हा । काकाजी सती वरता हा । भाई सा नौकरी करे हा । उणारा डर सू इज म्है थाडा पढ लिखग्वा हा । पण रासा अरसा सू व चिट्ठी पत्री नी दीवी ही । मा, वैन भार् उणार सागै इज हा । कठ म्हार नौकरी री ई तजवीज नी करी । जेक तरै गृ इण घर मू काई मतलव इज कानी हा ।

पण राम री मँहर क नारला तीन वरगा सू म्है दिल्ली नौकरी कर लीवी । कद कद घरँ जावणो होव है पण म्हा दानू भाया रा मिलणो उज नी हावता हा । म्है इण मियाळ गाव छुट्टी आयाडा हू । लारला वेकारी रा दिन इण अवराई री छिया म इज काटया हा, अवै याद आय रैया है । वित्ता उदासी रा दिन हा व । आज म्है इणीज अरराई रे हैठै पुराणी रणका नै कुरदण सारू पाछो जायो हू । पण इण वगत म्हारा मन घणो अणमणो है । तळाव री तीर म कठै सारस कुरळाया है, पण इण वार उणर कुरळाव मे दरद है ।

दिन आयूण मे थाकर दूर चाग री पहाडचा माथ काई अेवड हौळै हाळ उतर रैयो हो । ठडी ठडी पून वाजै है । पाळ माथे कोई अेवड रो पाली डिचकारा करता लरडचा नै हाकल रया है । लरडचा री मिणमिणाट म्हारै काना मे मोळी पड रई है अर कोइ मित्रेद्री बँड री धुन गूज रई है । म्है पछै म्हारी ओळू मे थोटी थाडी-सी ताळ म इज उतर रैया हू । म्है थाणा मे वडी मा रो मामलो सळटावण सहर ग्यो हा । उणरै सळटायर पाछो फिर हो, जद वजार म अचाणचक इज भाई सू भँट हायगी । दोनू अेक दूजा नै गुटळ गुटळ देखता रैया । पछै म्है इज अणमावता माद सू कँयो—‘अर ओ भीमा ? यार, कद आयो थ ? काई छुन्टी आयो ?

—‘नी तो ?’

—‘तो काई ?’

— दख नी रयो है—म्है वरदी मे हू ?

—‘अरे वरदा मे ता थू हमेस इ आया कर है । सगळा फौजी जल छुट्टी आव ता वरदी मे ई जाया कर ह ।

— इण सू रोव पड है नी । —अर वो रोव सू म्हारै गळ लागग्यो । पछ अळणो होवतो म्हार कानी नाळण दूनो ।

—‘आ जीप कुण री है ?’—म्है पूछिया ।

— म्हारी प्लाटून रो है । इण टम म्है ड्यूटी माथ हू । साव रै साग सरकारी परचेजिग करण वास्त वजार जाया हा । म्है लोग चाग री पहाड या म लटाई री प्रेक्टिस करण आया हा ।’

— क्यू तडाई छिडवा री गुजायस है काद ?

—‘नी र । प्रेक्टिस चानती रैव है । अठा सू पठाणकाट जास्या, पछै उठा सू सीवाडै विणी चौकी माथै ।’

—‘ता थू घरै नी चालैला ?’

—‘घरै ता आज दुपारी मे जाय’र आयो हू । थू ई कानी मिल्यो, नी साळो लुगावडी मिली ।’

—‘म्हार मिलण री थान किया आस ही ?’

—‘दीरा ! जापरै आवण रा समाचार बजार मे इज मिलग्या हा । पैला थू आ बता, थारी भाभी घर सू कजिया करर क्यू चली गयी ? जर वडी मा बेरा म किया घमकगी ?’

—‘आ वाता रो बैरा म्हारै कने कोनी । घरै काई बात बताइ कोनी ?’

—‘बताई तो ही पण ‘यारा ‘यारा मुडा, यारी वाता ।’

—‘तो बडोडी भौजाई जी सू पूछ लैवता ?’

—‘बी सू काई पूछतो ? जिकी अक लुगाइ री जान ल लीवी अर दूजी न घर सू भगाय दीवी ।’

—‘थू ई बिस्वास कर है ? साव झूठी बात है ।’

—‘तो फेर सही बात काई है ?’

म्हे दोनू फुटपाथ माथ अक कानी खिसक्या । पछ म्है कैंयो—‘भाई ! वडी मा ता विया ई दुखी ही । वापडी रडापो काढ रई ही चैन सू, पण अँ स्स घर रा लोग काढ कुवाडघो लार पडग्या हा । कठ ताई वा बरदास्त करती ? तग आयर सेवट पीर चली गी । पण वठ ई चैन सू कुण रवण देवै हा ? उवरा दारूखोरया भाई वीनै इण डळती उमर माय भी कठै वेच दीवी । आउठै जाणो नी चावती ही अर नी दूजो घणी करणा चावै ही । जद उणरै साग जबराई होवण लागी ता वा कायी हायर बेरा मे फदाकगी । मामला थाणा मे पूगो । आपा र कानी रा नाव ई लिखाया गया हा, पण आज म्है थाणैदार सू तीन सौ रिपिया मे सळटार आयग्या हू ।’

इत्ता म उणरा अफसर आयगो हा अर वीसू म्हारी ओळखाण कराई । पछ म्हन दानू जीप म धठार आपरा कैंप मे लेयग्या । भाई पछै दूजा फौजिया सू ई ओळखाण कराई । म्हे दानू तथू म वैठर वाता वरण लागा ता वो पूछिया—‘दूजी वाता पछ, पैली ता थू आ बता क थारी भाभी पीर किया चली गी ? म्हनै नी कोई चिटठी, नी ममचार ?’

—‘म्हनै पूरी बात रा तो पतियारो कोनी, पर इत्ता जाणू हू कैं वा थारै कारण इज गी है जर थामू वा घणी बैराजी है । कवे ही कैं ई सू ता चोखो हावता घरवाळा म्हारा गळा ममास देवता, दूपो लगाय देवता ।’

—‘इसी काई मुसीबत आय पडी उण माथ ?’

—‘यार ! जद डावडी माइता रा घर छोडै, उण टम सासरा म नूवी जिनगाणी सरू वरण वास्तै नूवा सुख री कामना करे है । वा सुख जे उणनै नी मिलै ता उणरी

काई दुरगत हाय है ? जा बात आपा छारी हावता ता अदाजा लगा सक हा । सासरा म उणनै धणी रा प्रेम मित जाव ता वा दुख नै इ जिनगणी माय सुख समझर काट सक है । पण धणी रा सुख ? यू कित्ताक सुख दिया है उणनै ?'

— थू सुख री बात कर ह ? म्ह दानू ता जेक दूजा न दख-दख जीवता हा । वा म्हन बतावै ता सही, उणन काइ दुख है ? घर म वासण ठीकरा ता सगळा र अठ खुडकै है इणम तो म्है ई काइ कर सकू ?

म्है गुण्यो हू क जद सू नसीरावाद छावनी छाटी है, थू छुटटी ई नी आया कर है ?

— 'जम्मू-कश्मीर री पास्टीग है म्हारी, किया जाय सकू हू ? फेर ई अडो बात नी है । अँ ता मन रा चाळा है, उणरो बँणा है कँ बीनै साग राखू । अब थू ही बता म्है हमेस तो साग राख नी सकू । फौज रो मामला हे । आज अठै ता काल कठ ? की ठा तो रवै नी पछ सागै राखू ता किया ? आजकल वा बिगडर कतीर हायगी है । भाजाईजी बतावती ही कँ वा घर म चारी करै, धान बेचै है अर पराया मरदा सू आर्या ई लडाया करै हे । बता, जा रुळियारगी म्है कद बरदास्त करुला ? घरँ दो महीणा री छुटटी आराम र वास्तै आया करू हू । जर अठै जाग महाभारत मच तो म्है राड री चोटी पकडर सूदी नी करुला ?'

— 'थू पइसा नी खिनावै तो वा चोरी करला अर धान ई बचेला ।' रई पराया मरद वाळी बात जा बात तो साव चूठी है । भाभी उण माथ रीसा वळ है, इण वास्त वापटी रा झूठघाई काळो मुडो करै है । लाग रा बणा मे लागो ता घर भगावलो । भाभी-सा रो म्है पगस लियो ।

— 'आ बात झूठ हो इज नी सकँ । बडी भौजाई चूठ बोल सकँ है, पण दूजा सगळा ई लोग चूठ बोलला ?'

— 'गलतफैमी रो सिकार मत हा वापडी धार सू इत्तो हेत राखै है अर थू ?'

बात अधूरी इज छूटगी ही । म्हा लोगा न उणरो अफसर बुलवा लिया । म्हारी वै लोग खूब सेवा करी । बाता मे टम रो पतो इज कोनी रयो । खाणा आरोग लियो तो म्है भाई सू जाण री अरदास करी । अफसर रा डेरा सू म्ह लाग उणार डरे म कदैई सू जायग्या हा । भाई म्हारी धात री हामी भरतो बोल्यो— 'चाल ! म्है धन घाडो दूर ताइ छोड आऊ । पतो नी अबे फेर कद मिलणा हासी ?

उणीज टम अेक जवान आय नै भाई नै कया— 'मीम सिंह ! धा सू मिलणै बोई लुगाई जाई है ।

— 'लुगाई ? कुण है ?

— 'म्हने ठा कानी । —जवान बाल्यो ।

भाई म्हन बँया— थू अठ इज घठ, म्ह जाऊ अगार ।

—'म्हन मोडो होत्रै है, घरं दादा-सा उडीक करता हासी ।

—'अ नी, जाये मत ना, अवार आऊ हू ।'

म्है टेंट म बँठ'र जवाना सू वाता करण लागग्यो । कोई आधेक घटा पछे वो लोट'र आयो । उणरो लिलाट माथे सळ पडघाडा हा । गुस्मा सू आस्या राती चठ ही नै मुडो तमतमावै हो । आवता इज कैवण लागा—'साळी, बमीणा री जीलाद अट्टे ताइ चली आई ।'

—'कुण ?'

—'घारी जगत भाभी । और कुण ? पैली ई आसा मुलक म नाव कमा रायया है । लोग उणरा खसमा रा नाव नी बतावै है, नहिर अक-जेक न सूट कर दू । वा रँ साग इण रडी नै ई । यू तो बता इण रदाचा र खसमा रा अक दो नाव ?'

—'म्है सुणी-सुणाई वाता माथे बिस्वास नी करू । यू इत्ता बीमरयाडो बिया है ? वात काई है ?' म्है पूछियो ।

वो और कडक अवाज म बाल्यो—'रडी बोलै है कँ म्हनँ सागँ ल चालो । अव साग किया ले जाऊ ? सागै राखूला तो पातर-राड दो-च्यार खसम वठे ई वणावैला । म्है अव उणन राखण वाळो नी ह । छोरो पगा चालण दूक जावै तो म्है उणन मगवा लेंसू ।'

—'आप दाया रँ विचै इत्तो हेत हो परम हा, ओ अचाणचक इत्ता आतरा बिया जायग्यो ? आ कुण वास्ती लगाई है ? जर था दोवा र विच गलतफहमी होयगी है ।'

—'अर, राड नै घणी माथे चढाई, उणरो आ नतीजो है । लुगाई जात रँ अवल ता अेडी म होया करै है । चाटी पकड'र राखो ता सावळ रँवे । म्है डील बरती उणरो इज आ पळ है । राड ऋळियार होयगी है । चोरी वा करै, धान वा बचे, अंस वा करै अर तुरीओ है क म्है उणरी परवा इज नी करू हू ? हर महीणँ साळी न सौ रिपिया भजू हू, काइ इणी वास्ते म्हारो जोब तो अठे लागो रँवै है । आ हाला सू म्है देस री काइ सवा करूला ? घर री लडाई तो लड नी सकू अर देस री लडाई लड सकूला भला ? मन करै है क वीन सूट कर'र खुद नै गोळी मार दू । म्हन घमवी देवै है कँ टावर नै ल्यर किणो बरा माय पदाक जाऊली । इण घर म काई लुगाया बेरा माय इज पडवा न आई है ?'

—'भाई म्हारा अवे यू बालता इज जावैलो कँ म्हन जाण वास्ते ई की कबला ? देख चाद उग आयो है, कदाच रात रा इम्यारा बजता हावैला । घरं सगळाई फिर करता होवैला ।'

—'चल्या जाज्ये । पण जाणँ सू पैलो वी कुत्ती राड न घरं ता उणरें पूगा बाळ । साळी ठोड सू हिले इज वानी । टावर ठड सू घर-घर धूज रयो है । मर ई जाव ता वीनँ काइ ? देखे वीनी, ठड किसीक पड रँई है ? काल उणरा घाप म्हन सडव माथे मितग्यो हा । कव हो क—'आपरी जुगाई नै सागँ ले जायो । छोरी नै गाव म अकली छोड रागी

है, लोग तर तरै री बाता बणाव है। वीनै झूठमूठ ई वदनाम करता रैवै। अबै म्है तो काठा कायो हायग्यो हू। कोई दाडै लुगाया लड मरो जर म्हारी वेटी नै की हायग्या ता पछै आपन लेणा रा देणा पड जावैला।' पछ म्है सुसराजी न काई बँवता ? आ कप री ठोड उणनै वै इज बताई होवैला ?'

म्है घरै जाणै री उतावळ मे उभो होयो तो वो बोल्यो—'चाल, उणन छोडतो चल्यो जाईजै !'

—'बीरा, म्हनै मोडो होव है, धू इज छाड आ जावै नी ?'

—'यार ! म्हारी डूटी लागणै वाळी है रात री। फेर म्है बगर इजाजत इया वेप छाड जाय नी सकू हू। हुरामजादी चालै कोनी तो धक्का मारता ले जाइज !'

म्है दामू नीद मे थोडा तगाळा खावता भीर होया। सडक माथे अेक चूना री भट्टी कनै भाभी छोरा नै खोळया मे दवाया बँठी ही। भाई उपरै कन जाय'र कैयो—'रडोचा ! अबै तो उखल ? भाई नै थारै सागै खिनाय रयो हू।'

—'नी, म्है नी जाऊला।' —भाभी घूघटा मे बोली।

भाई नै और गुस्सो चढग्यो हो, वो गुस्सा म कैयो—'क्यू नी जावला ?'

वा बोली—'म्हनै आप सागै ले चालो। आ जोवन इया इज बीत जावैला, पछै काइ बुडापा मे राखोला आपर सागै ? पैला तो छुट्ट्या ले'र भागता आवता हा अर अब ? म्है इसी काई गळती करी ? अठै म्हारो जीव अमूझै है, अेकर साग ले चालो, नी तो पछै म्हारी आस मत करज्यो।

—जा जा ! आ फौज री नौकरी है थारै बाप री नौकरी नी है।

—'दूजा फौजी ई तो आपरी लुगाया नै सागै ले जाया करै है। थ किया नटो हा ? म्हारै सू अब और ज्यादा नी सैन होवला। खमणो हो जित्तो खम लिया। लुगाई री जात हू। मिनख रो काइ, मिनख तो चालतो यको हर कठई बाड मे ई मूत सक है, पण लुगाई ? जेकर उणनै आगै पाछ रसै देसणा पड है।

—'काइ बसर राखी है ? जणा-जणा रै साथ रोवती तो फिर अर बडी स्मानी वण है ? वापडी जीर ई ता लुगाया है, जिवै रा घणी फाज मे है।

—'हा हा ! म्है जणा जणा कन रोवती फिरू हू। इत्ती मिरचा लाग है ता साथ क्य नी राखा हो ? ब्याव करयो इज क्यू हा ?'

—'रडी ! थारा बाप नै जार पूछ ! घणाई गाठिया हा फळती फिरती ही न ? साळी नै ओत्तर करवा री टेव पडगी है। ज्यादा बक करी ता चेपा वाळ-वाळ सुदी कर दू ला ! उठ ! सूदी-सूदी हूर सागै वळ ! नीतर अबै दसा खाटी जाई हाव ता बोल ?

—'क्या नी, नी जाऊला !' —भाभी जोर दिया।

भाई न जारदार गुस्सा चढ आयो—'अर वदजात ! मान जा ? अवार जूता सामी ! बूट री पन्गी तो घणा दिना सूदि हळदी घिसती फिरैला।

—‘अबै ठोड वाकी इज किसी राखी हा, जठ हलदी घिसू ? हाथ लगा’र ता अब देखो ? अबार इज आपरा साव वनै पस हाऊली अर रसै वाता बताऊली ?’

—‘काइ बतावैली ?’

—‘बताऊली वँ म्हारा घणी म्हनै पइसा नी भेजै है, म्हनै राखणा नी चाव है अर दूजा ब्याव करण वास्तै म्हनै जान सू मारवा रो घमकी देव है । —भाभी रा इत्ती बँवणो होया कँ भाई तो दुका जतराणै । भाभी रोवण दूकी । साग टाबर ई रोवण लागा । म्है भाई नै ढावणै री कोसिस बरी, पण वो तो ढबै इज कानी हा । म्हन अचरज हावण लागो कँ जिवा कद लडणो समझता नी हा, वँ आज इण तरघा लड रया है ?’

भाभी और बिकरणी—‘मार मार हाख जान सू । पापो कटैला, पण याद राखज्यै वी सोक राड रा लोही नी पीऊ तो म्हारा नाव गगली नी है ।’

—‘छिनाळ राड ! किसी साक राड री बात करै है ?’ —भाई उणरी चाटी पकड’र पूछयो ।

—‘वा चुडैल साति और कुण ?’ —भाभी वाली ।

—‘कमीणी ! म्हारी मा जिसी भाभी रो नाव लेव है ?’

—‘हा हा ! थारी गोड भाभी ! आपरा उण सू काई रिस्तो है ? म्हन स्म पतियारो है । म्हँ इज काइ आसा गाव दवर भाभी माथै थू थू करै है । अबै म्हे और वरदास्त नी कर सक हू ।’

म्है चुपचाप दावा री बात सुणै हा । फगत तीन बरसा मे दावा र बिचै इत्ता बलगाव आयग्यो ? अर म्हन ठा इज कानी । अे गलतफम्या कीकर सरू हायगी ? म्है बीच-बचाव करण म लागो हो पण दोयू म्हारी बात सुणण म तयार इज नी हा । अिसी गाळ्या री रीठ म्ह दोवा रँ मुड सू कदई नी सुणी ही । भाई उणनै घमकाव हो—‘राड ! म्हारी मा बराबर भाभी पँ झूठो इलजाम लगाव है ? सरम कानी आवै ?’

—‘सरम ता आपनै आवणी चाइजै ही ! अँडा खोटा घदा करिया इज क्यू ? म्हँ तो राड नै जतरायी ई ही । मालजादी कबूलोज ई नी ही ।’

—‘अरे, थारी राड री ! थू उणनै जतरायी ? ले, म्है थनै जतराऊ हू ।’—अर भाई पछै उणण जतरावा दूको । म्है फेर बीच बचाव करिया पण म्हारी बात वँ सुणणनै तयार नी हा । भाई भाभी नै बूटताडा कँवै हो—‘गीडक री जीलाद ! खुद विगडेल अर दूजा माथै बदनामी रो ठीकरा फाड है ? आखा गाव मे घूमती फिरै थू ? अर म्हारा कानी मूडो कर है ? हिंडडी राड ।’

—‘हिंडडा आप अर आपरा कडूबा ।’ —भाभी वाली ।

—‘म्हारा कडूबा माथै मत ना जाव नीतर थारै कडूबा री सगळी वाता अजार सुणली । थारी मा राड ई तो थार ज्यू रोवती फिरती ही ?’

—‘अर आपरो मा राड घणी सत वाळी ही ? वा ता ।’

—‘जागै वाली तो धोबडान भान’र चूरो कर देऊन ।’

—‘भला ई मार’र गाड दा ।’ —अर भाभी रोवती आपरा नाक नै सिणकर छारा रा वावटघो पकड’र अेक कानी वगायो । पछ वा ऊभो हो’र कमरन आपरा पल्ला सू कसबा लागी । म्हैँ छोरा नै जा’र गाड मे उठायो, पछे भाई रा हाथ पकडघो । अठीन भाभी बिकराळ रूप धारण कर लियो हो । भाई न बोली—‘जामण राड का ? अबै मार’र देख ? नी मारैला तो धू धारा बापरो नी है ?’

—‘अरे, नीच राड ! छिनाळ मालजादी ?’ अर भाई ता पछे बूट री नाक सू भाभी रो भुरतो बणावण लागो । धोडी टेम तो भाभी सामनो कर सकी, पछ वा दठ करती हैठे पडगी हो । पछे लागी चीखबा । म्हारी खाक मे छोरो हो, उणनै अक कानी बिठार म्हैँ भाई रो बावटघा पकड्या लारै खीचवा नै, पण वो फौजी जुवान अर म्हैँ चार पासळया रो मिनख ? काइ कर सकै हो ? वो धूळ री मूठी भर’र भाभी रै मूड माय ऊर दी । भाभी रो अेक पळ कूकावणो वद होयग्यो हो । वा धूळ नै हाक थू करती थूकबा लागी, पछ जोर जोर सू बोबाडा मारणै लागी ।

अेक सुवेदार अर दो जवान दौडघा आवै हा । भाई वानै अठीन आवता देखर मून मून ऊभो रैयो अर भाभी नै होळ सोक कयो— तिछमी ? डब जा ! म्हारी जामण, कठैई साव नै पतो चलग्यो तो म्हारी नौकरी ।’

म्हैँ टाबर नै गोद म उठायो । भाभी रोवती की ई माळी पडी । सूवेदार वन आवता इज पूछघो—‘कौन है ? क्या बात है ?’

—‘यह तो मैं हू साव ।’ —भाई जवाब दियो ।

—‘भीमसिंह तुम ? यह औरत कौन है ! क्या बात है ? —सूवेदार पूछियो ।

म्हैँ बीचैई बोल्यो—‘यह मेरी भाभी है भाई स मिलनै आई है । वच्चा बीमार है । इसलिए रो रही है । हिवडा माय ता म्हैँ खुद रोवै हो—‘हाथ रे लुगायी जात । धारी आ दुरगत ?’

भाभी घूघटो काढ र बँठगी हो । सूवेदार बोल्या—‘भीमसिंह । कल हम पठानकाट जाना है, तुम तैयारी कर चुके ? अभी तुम्हारी ड्यूटी भी है । चलो, बहुत ही चुकी बात । वच्चे के इलाज के लिए इस कुछ पसा वँसा दे दो और रवाना करो । जल्दी आया, कही साव को पता चला तो अच्छी बात नही होगी । —इतो कयर सूवेदार अर जवान चल्याग्या हा । म्हारैँ धोडी सास म सास आई । भाई आपरा खूझ्या सू रिपिया काढ र म्हन देतो वाल्या— ल, द बाळ इण राड नै ! और जरूत होसी ता पठानवाट सू खिना दू ला ।

म्हैँ रिपिया भाभी र हाथ मे धमाभा ता वा अेक कानी रिपिया फक’र चुपचाप वहीर होयगी म्हैँ रिपिया उठार भाई नै पाछा ग्या । भाई कैया—‘जा, उणनै ठेठ धरैँ पूगा र गाव चन्या जावै । तडक आज्यैँ, मिन्नया न म्हैँ लोग चल्या जास्या ।’

मैं भाई सू सीख लेयर तेज पावडा भर्या परलाग भर आग जा'र भाभी रं साथ होयो । टावर म्हारी गोद मे सूतो हा । आग आग मैं चाले हो अर लार लार वा । सियाळा रो चानणी रात ही, रीफेर सू-याड ही । भाभी रो गाव महर स आयुणी थाक म कोई कोस भर आतर हा । मैं दायू मून मून जाय नैया हा । मैं भाभी न बँयो— गुस्मो धूक दो भाभी ।'

—'मरगी धारी भाभी ।'—वा गुस्ता म बोली ।

—'अठ आपनै नी आणा चाइजे हो ।'— दु गी भाव सू म्ह कैयो ।

—'तो कठे जावता ? विणी पुअे वावडी मे जा धमवती ?'

मैं मून हांपर आग चालण दूवगो । मडक रं दोयू बाजू ऊमा खूखडा माय साथ कर हा । इण मुणसान गानणी रात म भाभी र पगारी पायला अर चादी रा आवळा रो खणगणा'ट वाज ही । म्हन दादा-सा याद जाव हा । व वारोडी मे बठा बठा म्हारी उडीक बरता होवला । बारती रा खीरा न टोटका सू घाल देता तपता हांबला व चिनम पूवता, नासतोडा म्हारी चिता कर रया होवला ।

भाभीसा क्षुरमुटया रा अधारा म अचाणचक डर'र ऊभी रयगी अर बोली— 'म्हन नखाव है व फाई चुडल म्हार लार नार चान है । थे म्हार सार सार चालो, म्हन डर नाग है ।'

मैं एक र उणर लार लारं चातण लागो । वा अचाणचक पावणे वढाण सू रक्की अर वाली—'छुळयावण । छुळयावण ।।'

—'कठ है ?'—मैं पूछिया ।

'आ माम्हे आय रई है । —भाभी नवा हाथ बर'र बोली ।

म्हन कोई घोळी घट जिणस माम्हे आवतोडी दीखी । काळज घचको तो अेक पळ म्हार ई नागो पण थाडी इज टम मे मैं देख्या—कोई गघा मटवतो ठाठ सू आय रया हो । मैं भाभी ने धीजो वधावता भरम हटायी —'भाभी सा ! आ तो गघेडो है माळा ।' उणन धीजा हाया तो आग वढी । गाव वन आयग्यो हो । मडक सू रस्तो फाट र सीधा गाव बानी जाव हो । गाव परलाग भर इज आतरो हांबला । मैं भाभी मा मू जरज करी— भाभी मा ! मैं जाऊ काई ? अवं आप चल्या जावो ता ठीक है ।'

—'नहि नहि । घर ताई चाला । अेकली गई ता वं लाग काई कभी ? पली ई म्हनै घर म राखना त्यार नी है अर आज ता उडीक बरती होवला म्हारी मा राड ।'

—'ता झट चालो भाभी ।'

मैं मडक सू गाव ग गना माथ उतर आया हा । ने चार पावडा वढाया हावाला व वा डरप र रक्की । पछ बोली—'दबो, वा छुळयावण बेरा माथ ऊभी है । म्हन हाथ ग झालो देय री है मानजादी ।'

मैं क्या—कठे है भाभी ? आप र मन रो बेम है ।'

वा म्हारी बात न अणसुणी वर दी अर वेरा कानी जाण ठूकी। पलीतो म्है छानो मानो देखतोरयो, पण पछ म्है आग वढ'र उणरो हाथ पकड'र ढाब दी। वा म्हार माथ रीस करती बोली—'सरम को जाव नी, भोजाई रो हाथ पकडता ? औरत रो हाथ उण टम पकडथो जाव है, जद वा सेमूदी वेआसर होव व आग-पाछ कोई नी होव। हाल ता म्हारो धणी जीव है। कोई रो दियोडो नी खाऊ हू छाड म्हारा हाथ ?'

म्है हाथ छोड दियो, धडीक भर म्हार डील मे कपकपी छून्गी, पसीना-पसीना होयग्यो ठड म ! वा इत्ती हीमत र पाण बान कयगी व म्हारी सगळी सवावा वायरो वण र उडगी। म्हन वा लुगार्द, लुगार्द लागी। अक घरमपरायण सत री लुगार्द लागी। हाथ छोडता इज वा वेरा कन आग वढगी अर पछवेरा र जोळयू दोळयू फिरवा लागी। म्हारो काळजो घब धक करण लागी। उणरा आखो सरौर धज हो अर वा केस विसेरती वेरा री डोळी माथ चढगी। म्है धूजतोडो उणरो पुणचो फुरती स पकड'र हेठ खीची जर कयो— भाभी गलाया क्यू कर है ? चाल, घर चाल !'

रा बोली— मन ऊ वस्ती जवरी मती लेई जा ! खोटा सुगण वगा ! आ म्हारनी जग पिसाव करके नी म्हार ऊपर थूको हो ! म्है भगली न वरजी भी हो, पर आ म्हारी बात प हस र रूवान वगी ! जव इण भुगतणो इज पडगा ?

भाभी री जुवाज मे अकदम फरख आयग्यो हो। वा काळवेळया री बोली बोलण लागी ही जिका म्हारै वास्त हैप री बात ही। उणन होस जराई कोनी हो। ठा नी आपर मता काड-काई बोलती जाव ही। म्हन लागो कदाम मार पीट सू दिमाग भमग्या है, इण वास्त वा गलाया करण लागी है। म्है भाभी न पूछया—'भाभी, जा थारा म कुण वाल है ?

वा जवाव दियो—'म्है जमनी काळवेलणी हू। कर री जगा म्हारी है। म्हारा अठ रवास है। आ क्यू कर र सामे धोळा-दुपारी अठ पिसाव कीयो ?'

भाभा रो बदल्योडो टान हू व हू काळवेलण्या ज्यू हो। म्हनै भूत परत डाकण व छुळयावण प बिसबास कम इज है। भाभी नाटक ई कोनी कर। म्हार बात की इ समझ नी पड रई ही। वा बोलती जाव ही जर म्है उणन जबराई खीच र गाव मे ल आयो हो। गाव मे धुमताई गळी मे भाभी रो घर हो। घर म दीवा वळी हो। म्है कूठियो घटखटाया। किवाड उघडथो अर उणरा मा-वाप दोयू वार निवळचा। भाभी हाल ई बीमार ही। वेटी रो व हाथ पकड'र भायने ली अर छारा न उणरी नानी गाव म म्हार स ले लिया। हाल इ भाभी न होस बरोवर नी हा। म्है वठ र वियाई-व्याणजी न सगळी बात वनाई। म्हारो बात सुण'र व्याणजी बोली—वियाईजी ! दिन म इणन धणी

परजी, पण फेर ई वठ उखली। मादगी व फट-चोट री हालत मे आपर घर सू वार जाणा व क्यू ? धणी न लुगार्द ले जावणी होवैला तो अठ आसी आप इज ! पण वाप इणने धणी रा ममाचार काद दिया तद सू मिलवा री ऊगम चढे ही मन मे। जिद्ध वर र मत सू पाधरी हाठी वठ ? माग जावण रो म्हारी हीमत ही नहिं जर वाप वापडो

‘मिल’ री रातपाळी सू थाडी टेम पैली इज आयो है । घणा दिना स अंक चुडैल इणनै लाग राखी है । जाणतेर बुलार तावीज वधाया, डोरा डाडा बरवाय, देवळियै न थान लयगा, पण दिनू दिा इणरी हालत विगडती इज जाय रई है । कदै कोई काठो बोल जाव तो लडवा डूब जाव अर पछ वेहोस हो जावै ह । सावळ रव जद जमाई रै वास्त मगज खराव बरया करै है । कव व माग जाऊना ता वठै इलाज करा देसी तो ठीक हो जाऊला । पण चुडैल लाग्या पछ निकळया करै है काई ? कोई माया ऊपरला जाणतेर हाव तो वात यारी है ।’

म्है कयो—ब्याणजी ! ओ आप लोगा रो कोरा भेम है, कोई चुडल-मुडल कोनी । घर धराणी र काण्णा सू इणरो मगज भमग्या है कवाच ! भाई न समझा बुपा’र वठ अंक जागा पोस्टीग होवला जद भिजवा दस्या ।’

—‘अरे जमाई री वात मत करा, उणन आपरी तुगाई री फिकर थोडी है ?’

—‘नी, इसी वात कानी । वो आवतो इज तो इणर सातर गाव नाठ’र गयो हा, पण आग लाधी कानी अर पछ जणा जणा उणन भर दियो खाटी वाता वतार । काळ म्है उणन जा’र सावळ समझा देसू, आप लोग फिकर मत करा ।’

इत्ता म भाभी रो जाग्या भमगी ही, दाता कसी मिलगी अर होठा सू झाग उगत हा । ब्याणजी अंक चीमटो लेयर दाता-कसी खोली अर पछ मुडा माय पाणी छिडवयो । वा कोई सू वाचा लव ही अर बालवा, मागण्या माम ही, पण टौन सारा काळपलणी रा इज लाग हा । जाध घटा पछ उणन होस आयो । वा ठीकसर वाता करण लागगी ही । पछ मून हायर वठगी । म्है उणन पूछिया—‘अब किया तबियत है ?’

वा होळ सीक वाली—‘ठीक हू देवरजी !’

म्है कयो—‘भाई तो नालायक है लखणवायरो है । म्है उण नै समझा देसू ।’

—‘नी नी । व म्हारा घणी है, देवता है । म्हार वास्त उणर हिवडा मे घणी जागा है । वान की ओळमो कोनी ।’—अर वा मून होयगी ।

चुप्पी दवर म्है कयो—‘तो भाभी, अब म्है जाऊ ?’

‘जावो ।’—वा धीर सी वाली ।

म्है इण वात री वाट इज नाळ हो । ऊभो हो’र वा लोगा सू इजाजत लेयर म्हार गाव वास्त वहीर होयो । चाद ढळ हा । चौफेर सुणसान हो अर इक्ल्लो म्है ठड म घूजताडो सडक माय चल्यो जाव हो । म्है तेज पावडा भरतोडो गाव पूगो । पोळ मे पुसताई गिडक भूस्या । दादा सा खास्या । म्है सीघो उणा वन वारोडी म पूगो । दियो जगर भगर वळ हो । दादो सा वास्ती सिलगा र तप हा । सूवा तक मोरा माय कावळो आदियाडो हा । खुडका सुण र पूछया—‘कुण, हह ?’

—‘हा, दादा सा । म्है हू ।’

‘इत्ती देर कठ लगा दी वटा ?’ व वास्ती म टीटका रो ओरू झावो दिया अर धुआ करताडा धीरयान रास मे ओठ दिया । पछ आपरी मुलपी जरदा सू भरी ।

साफी भीगो परी, उणर लपेटी न अंक खोरा माय मेल'र सुठ खच्यो । मुडा सू धुओ काढ'र पूछयो—'घाणा सू तो सगळाई लोग बढवाई आयगा, थू इत्तो मोडा बठ करयो ?

म्ह कैयो—'बजार म भीमो मिलग्यो हा । उणर साग धीरो अपगर ई हा, म्हनै पबड'र आपर कॅप लेयगा हा । आज तो वेजा फस्या ।'

—'काइ होयो र ?'—दादो सा पूछिया ।

— होयो यू बठ भाभी आयगी ही । उणरी लुगाई । जोरदार बजियो होयो अर ।' म्हँ दादो सा ने पूरी बात विगत वार बताई । चाद आयग्या ही अर ऊगणी माग फूटवा लाग ही । म्हँ पछ साल मे जाय'र सूयग्यो हो ।

दुपारा कोई वारा बजिया काकी सा म्हन जगया । म्है मटकी सू लोटो भर'र जोटा माय मुडा हाथ घोवे हो । माम्हे नीबडा हट्टु बंटोडा मिनखा र बिच काकाजी निग आयगा । व म्हनै देख र पूछियो—'रात न थू भीमा र सासर जाय'र आया हा काइ ?

म्ह आरया प छपका भारतो बयो— हा हा । जाय र तो आयो । काफी मोडो होयगो हो ।

— भीमा री लुगाई री बाई तवियत जमादा खराव ही ।' —काकाजी पूछियो ।

—'की नी ! थोडी दिमाग री कमजोरी है, वैडी ज्यू वाता बढ-कढ करवा लाग जाव ।

काकाजी बोल्या—'घन ठा है ? तढक वा फौत खेलगी ।'

इत्तो सुणताई म्हाऱ मुडा माय सू कुल्ला रा पाणी छवाक करता वार पढयो अर हाथ सू लोटो नाळ मे गुडकतो बो जाय । म्हँ भारी अचरज अर हैप सू पूछियो—'काइ बात करो हो ? म्ह राजी खुसी छोडर आया हू । वा मर किया सक है ? नी नी इया हा इज नी सक है ।

पण म्है मौत न झुठलाय तो नी सक हो । बात तो जिकी होवणी ही हायगी ही । पछ काकाजी सावळ बात बताइ अर बयो ब उणर दाग मे जावणो है । म्है पूछिया भीमा न इण बात री खबर है क नी ? आज वा पठानकोट जा रया है ।'

—'जाचक जाया हो वो बतावता हो ब वठ खबर कर र इज अठ आया हो । थू चालला ?'

— म्हँ अवार फटाफट निपटर आऊ । —अर म्हँ निपट निपटार तयार हायर नीबडा हैठे आयो । इणीन टेम जाचक हाफनोडा आयी अर बोल्यो— 'अनदाता । जेक खाटी खबर लायो हू । माफ करज्या । आपरो भीमा, उणरी लुगाई घाईसा सगरी रा उणियारो दगता इज फात खेलग्या । रामसरण हावण र पला बठ मिलट्टी रा

हागदर ई आयग्यो हा, पण की नी होय सक्यो । रामजी री आ इज मरजी ही कदाच । सगळा क्व हा क कुवरजी ता लुगाई री पीड मे अमूयणी खायगा ।

इतो क्वता पाण इज काकूसा अर भीमा रा बडा भाइ दानू अेक साग काठी बाग पाडी—‘ओ म्हारा भीमना 555 आ ?’

कन वठा दादा सा गीली आख्या सू घमकावता वाल्या—‘अरे, माव इज ढाढा हो काई ? वो अेक मरघा, थ माग मरोला काइ ?’

भीमा रा बडा भाई तडाछ लायग हैठ पडगा हा अर सुणावणी सुणताई घर म लुगाया ई मळी होयर रावण ढूकगी ही । बडा भाई र मुडा माथ दा चार खुणच्या पाणी छिडक्या जद वो बठो होयो । दान्ने सा दाया न घमकावता घणी मुमकल सू ढाब्या । म्हारी हालत ई खराब ही । वठै बठा सगळा लाग रा मुडा उतरघोडा हा ।

घोडी सायत होई तो म्है लोग सलाह करण लाग क दोया न अठ लायर आपा रा मसाण म दाग देवा । पण जाचक वताया क वा दोया र दाग रो वदावस्त बठ इज हाय रया है । भीमा रा अपसरा री आ इज मरजी है । व वाकायदा फौजी रीत मू दाग न्वेला । सगळा लोग आप लोगा री उडीक कर रया है ।’

इण बात माथे घर म वमेडो ऊभो होयगो, पण दादोसा ई तो फौज म रयाडा है, सा बात समथ हा । व सगळा न डाटताडा समझाया—‘बडा हो थ ता । फौजी जाजा मरघा पछ तक्दीर वाळा न इज मिल है । चालो सगळा ई वठ । तक्ची ल ना कपन तो स्टैर सू लेता चानाला । अय जैज मत ना करगे ।’

सगळाई दादो सा री रात मानग्या । म्है सगळा वहीर होया, उठ जद पूगा ता फौजी अर अपसर सगळाई ऊभा हा । कने इज वरो बड काई दरद भरा धुन बजाव हा । वारण दो अरधिया कने कन सज्योडी ही । मायने घर म लुगाया रोव ही । दोवा रा मडा उघाडा राख रायया हा, ताकि आखरी उणियारो लोग देख सक । म्है सोच रयो हू—कदाच सारस री जोडी मिनग जूण म आयगी ही । अरधी उठायी गइ अर म्है नाग वारी वारी सू दाया न काधो दिया । मार्ग बड री धुन मसाणा ताई वाजती रै इ । अरधिया पछ धू धू करती अेक साथे घधक उठी । दा यारी-यारी अरधिया री लपटा बायरा म बळ सावती जेक दूज स् लिपटै ही जाण अठ ई वै कोगत राळ कर रया हाव । जाण व झगडो अर प्रेम कर रया होव ।

उठा सू म्है लोग उदाम उदास घर पाछा आया । आग हाल ई लुगाया रोव ही । म्हारा दादो सा छोरा न आपरी खोळघा सू उतारर काकाजी न थमायो अर व मायन लुगाया मे देयर आया । बडी मा री गोद मे जावता इज रोवतो थमग्या हो । सगळा लाग मुम मुम हायर बठा हा । अठ म्हार मू हनयो नी ग्यो । इण वास्त अवराई र हैठ जायर वठग्यो हो । बठ अेकला बठर म्है खूब खूब रोयो हा अर सिझ्या न काकासा अर कग भाई म्हन हैरता हैरता जायगा हा । म्हारो काळजा पाट हा पुराणी यादा न लयर । म्हन बडी मुमकल सू व लोग घर लयगा हा ।

अवार आवा र मीजरिया कोनी ही अर नी करिया लटक ही पण यादा म

महने लसाय रयो है—महै दोयू अठ अचपळाया तर रया हा। काफी साला र पछ अठ आयो ह—पुराणी आळू रा लवडा उभेलवान। अचाणचक पाळ र उण कानी तळाव मे सारस बुरळाया। वा री अुवाज का मे पडता इज म्हारो हिवडा भर आया अर आरया सू झर झर मेह बरमवा नागा। मूरज आयग्या हा अर मिइया आपग पल्लान फेलावतो अधारो कर रई ही। हाल चाद गी उगो हे। ज्यू-ज्यू अधारो बघ रयो है— म्हारी आरया म ई जाण अधारो धिरणै लाग रयो है। इत्ता म म्हारा कावासा आज ई महन हैरता हैरता अठ आय पूमा है अर म्हारा वाचटघा पकड'र महने ऊभो करता कैया— पढया लिन्यो समझदार होवता थका ई बडो बडा उण है ? अब भाई अठ पाछा थोडी आवला ?

अर म्ह वा र खुवं माथ फूट फूटर रोवण लागग्यो हू। आरया मू रळा ई रळा ववण लागग्या है। जाणै वै रैळा वाऽळो धणर तळाव माय जावै है, जठ काई मारस री जोडी ऊभी है—अर म्है दोघा न भाई भाभीसा समझ'र आतरै सू ताळीम करतो जाय रैयो हू। भाई भाभी रा उणियारा म्हारी गीली आरया मे आज उ भम जाया करै है। आज ई काई मारस री जोडी नै देग र म्है प्रसक-बसक रावण ढक जाऊ हू।

□

मायनै होवै राखस

यादवेन्द्र गर्मा 'चन्द्र'

वी रै होठा माथ अक अरथाऊ अर तर तरै रा चिलका दिखावती मुळक नाठगी ! अँढी मुळक कूटनीतिज्ञा र होठा माथ ई मिल का फेर कुटव करणिया र होठा माथ ! अडो मुळक रो आप ठीक मतळव कोनी लगा सको । आ ई नी बताय सवा क वा कवळी है क करडी ! काळी है क गोरी । हा मे है क नाम ! साची बात तो दूजी ई निवळ क था जिका अरथ लगावो, उण मू वो उधो ई निवळ ।

वकिम र होठा माथ घडी घडी रग पलटणी मुळक नाच ! वी री उमर पचास र नडी ! दा छारा । दोनू मोटघार ! दोनू न वो जिया चलाव ज्यू चाल ! लाग व दो घोडा होव अर वकिम दोनू रो कोचवान ! इणन वकिम आपर लारन जलम रा पुन मान !

वकिम घणोसीक चुप रव ! जद कदई मुडो खाल तद वो मोटा मोटा चोखा, फूटरा अर ओपता वाक्य बोल ! आदरम रा वाक्य ! कदई कदई साधु सता ज्यू वाता कर ! पण म्है जाणू क वी रै कवण मे अर करण म घणो ई अतर होव ! वी रो ओ जतन रव क की ई होव वी र बळ पडतो होव ! फायद रो होव ! पतो नी, कुण मी कुठा वी र मायन कुडाळिया मारियोडी वठी ही क वी न जापर फायद र सिवा वी ई मूततो कोनी ! अठ ताइ क आपर घरवाळा र बाबत ई वा आई सोचता क व वीन फायदो पूगाव क नी ! मौव टौव वी आपर टावरा टीगरा री जस गाथा गावतो तो ई वी र होठा माथ वा ई अरथाऊ मुळक रवती जिण सू वी र घरवाळा आ नी जाणता क वो स्तुति कर क मूड ! वा सफा अकलखारो हो । किणी सू भालेपो नी राखता ! किण सू भेंटा ई करतो तो जापर डिपाटमटल स्टार म !

वी मे अणमावती नरमी अर सालीनता ही ! वा आपरी अमेट मुळक रसाग पावणा री अगवाणी-करता ! पावण न लखावतो क उण न देख र वी न मोकळो हरख हायो है ! आ कबत साळ आना वी माथ जचती—मु मे राम बगत म छुरी । वा इत्तो सुवारथो क जिक सू फायदा होवतो वी सू भौत ई चाव सू बालता—'कं भाई धान म्हे पुर सात दिना सू उडीकू हू । थे तो बीच बीच मे भूत पलीत ज्यू छाइ माई होय जावो ! विस्वास राखा इणगी आपरी घणी ओळ आव ही । अक दा दफ कवो फलमयो हिचक्या ई आई ! आपरो डील ता चोखो हासी ?'

पावणो वी री वाता सू गळगळो हाय जावता ।

जे वो किणी परम रो परचेजिम अपमर होवतो तो वो पटावदेसरो चाय पीवण रा नोरो वाढता ! फेर फोर्लिङ चेमर न खोलता ववतो— 'आप विराजो । फेर उणरो प्रसमा मे मरदा रे हीगली नगायन रवतो व की न की आडर देयर इज जावो ! जे काई माधिया भाई आय जावतो, चाव वो ची रो सगो ममधि ई वय नी होय, वा थोथा चणा ज्यू वाजन रामा माभा कर लेवतो ! फेर मूळकता रवतो, गाली फीकी फीकी मुळक ! वी न वो चाय पाणी रा नोरा ई नी वाढतो । आपरं काम-वाज रे जडो-आडी पोळावतो व वापडो आपरो दस्तो सा मुडा लेयन वूवो जावता ! जे काई वडो अपमर उण र अठ ममान ठेवण न आवतो उण मूममान रा पट्टमा नी लेवतो । आपरी अरथाऊ अर फीकी मुसकाण र साग ववता, 'ज चीजा जापन गिपट ! ओ स्टार ता थारो ई हे कोई लूठो ओडर दिरावा नी सा ! फेर उण सू आपरा ऊधा सूधा काम वढावतो रवतो फेर ज्यू ई उण अपसर रे वदळी होवती 'व सगळी चीजा रा विल वणाय'र आपर छोरं वन मू दस्तवत करायन भेज देवतो । जे वदई वो अपमर जोळमो देवता तो आपरी सदा सुवावणी अरथाऊ मुळक र साग ईसर रे सौगात गायन आपरो अण जाणपणो वतावतो ।

वो विरया सवदा न नो उगळता ! किणी न रपफूचकर करण वास्त वी रा मुळकणो ई मोकळो हो !

वी मे मूगत्रो सुवारय हो । घणी आगली साचतो । चाव ईसर रे विरया ही वा वो रे सावचेती, पण वी न सुगन स ई पत्तो लाग जावता व की आपा वृणवाळी हे ! वो घर वार रे सगळी वाता रे निगदास्ती रावतो कुत ज्य वान ऊचा राखता ! वी रे दीठ सू सात ओरा मे होवतो काम नी वचता । गिरज दीठ ही उण रे ! जे कोई वी र ग्विलाफ काम करतो न चुगली खावतो ता वो सीधो सट्ट व धीमा होयन वी न घणी सावचेती सू माता खाना चित्त कर देवतो जर वी रो दुममण तो पाणी नी मागता ! तद ई वीर हांठा माथ मुळक पकायत रत्रती !

जद वी रो वाप डाकरा होयगो अर वी म घर चलावण रे पूच नी रई । तो ई वीर वाप सू धन रा मोह नी छूटिया । धन माथ नाग ज्य परो देवतो ! वी न आ वात चोली नी लागी । वा पटाफट आपरं भाया न भेळा करिया ! आपर मुळकण र मार्ग दुख जतावत वो वयो आपा चार भाई हा । आपारो वापू डोकरो होयग्या । जब व कारोवार नी सभाळ सक ! सूक्ष वम । घासी ई लारो ना छोड । घामती वगत आ नी ल्खाव क ज किती दोगप पाव ईमर-सू विनती करू व अे डोकरा सी वरम जीव पण आ तो परभु हाथ है । पण यान आ नी ल्खाव व मिरस्तु इणा र उणियार मार्ग डरा नाव दिया होव ! ईमर इणा न सोरा-सुखी राव ! माइता रो छावोलिया ता बडभाग्या न ई मिल ! फेर आपा चार भाई राम लखण भरत, सतुरधन जडा अवार हा ! धन चोखा चोखा र वर घला देव ! काल इण धन न लेय र मना म मेल पड जासी । आपा र विचाळ नेठ बाजण नाग जावला, आ वात काइ फूटरी लागसी ? इण वचत न कुण जाण कानी व जर जोध जमीन झगड रे जड होव ! वी फर नूव टग सू मुळक र वया' म्हा की ई नी चाइज । वापूजी मार जी सू हाय उठाय न द

देमी तिर भाय राख लेवूला । पण पाती इणार जीवत थव होय जावणी चाइजे ।'

'पण बापू न इण सू चोट पूचसी ।'

'दिवलाडा ! म्हारी वात न गराई सू समक्ष' राजी-सुमी 'घारा हावा जिव म वा भूड कानी । जिता भाई उता घर ।' वी लावो सास लय न कया आ कळजुग है । आ की ई करवा सक । भाया मे राड करवा सक । वा न काट कचेडी चढवा सक । वाप र साम्हे बेट री जुत्रां गुलवा सक ।' वा चुप । फेर मुळक्या वा मुळकणा काळा कुट्ट हा । पछ वी रो मुळकणा चिलवा मारण लाग्या । आपर हाठा माथ जीभ फिरा'र वा वात्स्यो, 'अरे भाया, जमानो चात्तो नी ! अवार ता भाया भाया र विचाल इत्ती यूकफजीती होव व माइता रो जमारो ई विगड जाव । काट-कचेडी मे जायन देखा कुण किण री पाग उछाळ । लेवता ई लेखो है ! वगत थव फुटराप रा काम हाय जाव जिकोई चात्तो । साचो आपार बापूजी रा धन आपर बूकिया रो कमायोडो है । इण वास्त इण रा कमलो अे खुद करसी । अे जिव न चासी, वी न आपरी मरजी र मुजव दसी । इण सू घर मे मीता नी पडली । आपा रा भाइपा छोटा नी हावला ।

वो सर्वेव आ नाटकजाजी बरतो रंवता । छेवड भाया मे जारदार वतळ हाई अर वी सगळा सू चोखी पाती ओ टिपाटमेटल स्टार ले लिया । अमल मे वी निराति म आपरें वाप न वूक्षा दिया रं वो खाली वीन ई चाव । वं चाव तो स्टोर मे आपरा सीर राख सक । व आपर ईसर अर टाबरा रो वूडी सौगन खायन कयो । 'थे माना ता कानी पण म्है साची ववू हू व अे घारा तीनू जायाडा थार मरण री माळा फेर । आग्या फाडन उडोव राख व कद वापजी सुरग सिधारसी । थे जाणो व फेर म्है सगळा आपस मे जूतमजूत हावाला' । वी बरडेपण सू कया ।—'व तीनूवा अेकठ बरली । सायत छान औल दवाई री जगा विस द देव । म्हन ता ओई लागे व अे थाने नस री गाळी तिलायन वागदा माथ थसू अगठा अर दस्तकत नी करा लेवें व विचार'र दसा । वो उण वगत ई मुळकियो । वी र हिय रो काळमस अर जाळियो मिनख वी रो मुळक मे लुकग्यो । सेवट वी र आळ जाल म वाप आयग्या । फेर वी अंडा कवाडा करिया व वापार म घाटो होवण लाग्यो असल म वो खोटा करपरा सगळो माल ठकारग्या । फेर आपरें वाप सू अणजाण वणग्यो । पिछाणनो छाड दिया । घडी घडी होकडा वदळने में वो घणोई चतर हा ।

जद वाप ने सी वरग पूगग्या तद भाया म सामोडी यूकफजीती होइ पण वा खाली मून धारयोडः मुळकना रंवतो । थावस खावता कोनी । मायली बात बतावतो कानी । कोई पूछता तो बंवतो, म्हा भाया मे तो की झगडो कोनी । बडा हेत है । अर डाकर मरत पाण जिव नै राजी राजी हाथ उठायने दे दियो वें वो ले लिया । सवट सारो धन ता वाप रा ई है ।

वो विणी री ई निदा नी कर । माय री माय भाया रा पग दाडें । घणी हुसि यारी सू वा न भिडाव जिबें सू वें 'घारा-न्यारा रंव ।

वो चौसठ घडी अर आठा पौर आपर अभावां रा रोयणा रावता रव ! अठ ताइ व आपरी धणियाणी अर टावरों न ई साची बात ती वताथ ।

वा गाली आपर ना हा नाहा गुवारथां रै वास्त जीवता हा । भोत ई मन रा मैला हा । सायत वो र जीवण रा आ ई लिता हा न वा जिफो ई करला, मुळवन करला चाव वा मिनस न ई वयू ती मार ?

इया व तिरा न मारधा ई है । उणा री हित्या करी है ।

हित्या ? निमका नी ? हित्यावा ई भात भात री हाव । तीर तरवार सू, चाकू छुरी सू, लाठी व दूक सू गळो मसास परी ई ! पण वो जिव री हित्या कर वी र डील भाथ सराच वानी हाव । वो जिव री हित्या करता वा हाथ पग चारो लागता पण माय सू मर जावता ! थाथा होय जावता !

वकिम आपर हिय री प्रूरता अर जिनावरण सू आपर चाकरा री हित्या कर नासी ! जेव बूढा नोत्रर लरपत हो, दो माटघार नोकर हा । अेव वी री आदमण बरजी बाई ही अर अेव वी रा पस्वा भायला हा !

बूढे नोकर न वी फूटी वौडी दिव विना ई वाढ नासिया । उण सू घास सू वूडी रसीद वणायली ! जद हिगाव रा समे आया ता वो जेवदम उटग्या ! जीवती माती गिटग्या ! डोकरो वाणडो रावता रया हाथ पग पडता रयो पण भाटो पिघळ ता वा पिघळ ! वाई समपायव पचायती करण आवता ता वा मुळक'र भाळपण सू ववता— वयू माथा खावा म्हारी डोकरै सू वी ई लण दण वानी । मुड री बात रो वाइ मोल ? वागद साचा ता बात साची । जावो वाट-वचडी रा वाढा रटपटावा !

सगळा घणाई ऊचो-नीचा लिया पण वकिम मुसकियो ई कोनी ।

इण तरिया उण री प्रेस रा दो करमचारी अेव दुरघटना म पागळा हायग्या ! वी जापरी मावणी मुळक सू चीन मावत वव वया, 'इण म म्हारी वाइ वगूर ? आ ता हावणहार लाग ! थे जद सावचेती सू मसीन चलावता तो आ अणूती ती होयती ! पण होयगी जिवी होयगी ! म्है धारो भाई हू रासत नी । इण वास्त मानस न धरम मान'र म्है था लोगा री सायता व्हला ! धारै इलाज रा सरचो उठावूला । अर धान नोकरी सू नी वाडूला ! था जाग घध री जुगत विठावूला ! ज म्है अडा नी व्हला ती धारा टात्रर टीगर गळया म रळ नी जावला !'

करमचारिया निरो ई धमकायो ! फोट-वचडी रो डर दिताया ! मूनियन वाजी रो आतक वतायो पर वा सायती सू सग बात रा गुणता रयो ! व घडी घडी आ ई वयो, म्है मिनसपण सू सोचू ! था जिया पतावळ नी वर ! फोटोव विचारा फोट-वचडी रा याव सस्ता कोनी ! माटघार सु बूढा हो जावाला चक्कर पाडत वाढत पगा री पगररया घिस जावली ! फेर पसला धार पल नी हाया ता वाइ कराला ? आस्या अगाडी अधारी आ जावली ! टात्रर टीगर रळ जावला थे भूगां मरता मर जावोला ! म्है आपांर देसटल न याव न चानी तरिया जाणू ? जीवत

धक मिनख रा जीवत रा परमाण भाग ! म्हारी माना परेम सू हायाडा कोई काम फलदायक हावे ! ' फेर वी वडी वडी वाता सू उणा न जो नहचा करा दिया क हू कवू जिको ही सौळ आना ठीक है ! '

आपरी जूनी आदमण न ता खाली सौ रो नाट झलायन रामा-सामा कर लिया । जद आदमण क्या क थागे मा म्हन आ क्या हा क थू ऊभी जाइ है अर आडी जावली । तो बकिम मुळक'र कयो, 'डोक्री ! मरग्या जिका री वाता वा र साग ई गईपरी ! फेर दूजा र आगण मे पसरणा पाप होव । खुद रा आगण चाव तूटाडा ई क्यू नी होव पण वी म पसरणाडो सीधा सुरग सिधार ! जाव मावड जा मिरत्यु आपर आगण म ई ओपती लाग ! थै सू हाथ पग ता हिलाइज कोनी फेर जठ क तदूरा वजावली ! जाव परमु थारा मला करे ! '

अर भायल री हित्या करण म ता वी नूरता अर राखसपण री काकड ई लापली ! वी रा भायलो रजन इ'कमटक्स डिपाटमट मे हा ! सागीडी घूस लावता ! मोकळा रिपिया भेळा करिया । बकिम धी न गरी अपणायत सू जापगी मुळक म फसायन क्या, रजन ! थू म्हन रिपिया ब्याजूणा दे देव धन म्है म्हार नूव फरम 'ब्रदर एड ब्रदर' म सिरवाळी बणायलूला । म्हन सायरा मिल जामी अर थारा रिपिया धीम धीम 'व्हाइट' हावता जासी ! बकिम वडी चालाबाजी सू रजन री बऊन आ भरोसा करा दिया क वा उणा रा हेताळु है ।

चोर री मा कित्ता दिन खर मनामी ! सवट अकदफ घूस लता रजन पकडी जग्या । नौकरा सू वरखास्त होयग्या ! आ वात अकदम साची है क घूस लेवतो जिका पकडीज वो घूस देयपरो पूठो छूट जाव ! पचास हजार म मामला तय हा ! वो नाठ'र बकिम कन गयो ! वी रा बकिम माय अस्ती हजार रिपिया जमा हा !

वो जाय'र आकळ वाकळ हायन कयो, 'भायला म्है काळीघार डूव जावूला ' 'के हायो !'

रजन सगळी वात बताय र कया, 'म्हनें अबार रा अबार पचास हजार रिपिया चाइज !'

'अबार रा अबार— रिपिया रूख र थाड ई लाग्याडा है क क्षिडकायन भेळा कर लू ! दो दिन लाग जासी !'

व दो दिन फेर पूरा नी होया ! जेक महीणा बीतग्या ! वा टाळमटाळ करतो रया ! भात भात री मुळक साग टाळतो रया !

रजन रा धावस तूटग्यो ! अक दिन वी बकिम रा गळो अपडन चिरळा र कया ! थू मिनख कानी राखस लाग ! वूडा-क्पटी ईसर स् डर म्हार टावरा अर बऊ माय दया कर ।'

वा तद ई मुळकतो रयो ! फेर वी रजन न आपर चपडासिया सू वारण बढवा दिया ! वो चिरळायो गाळघा काडी पण उणरी मुळक माय कमी नी पडो अर रजन वापड न जेळ होयगी !

बकिम उण री बऊ र साम्हे सपफा नटग्या क वी रिपिया उण सू लिया ई कोनी ।
डकारग्या अस्ती हजार न । गिटग्या जीवती माखी ।

पली दफ इण बात माथ उण रा छारा रिसाणा हाया । वट छार कया, 'पापा !
ईसर सू डरा ! उण र घर देर हाव पण अधेर नी ! थान डर लाग चावै नी लाग
पण म्हारो काळजो धूज ! लाग इण पाप सू ता नरग म भी जग नी मिल । '

वो उणी तटस्था सू मुळकियो, छोरा ! पाप पुन नै थू किया जाणनै लागग्यो ?
अँ ता म्हारी समथ री वाता है । थनै के ठा केँ म्है रजन सू रिपिया लिया हा ! की
भेजै सू सोच ! कै इकमटैक्स रो अपसर इत्तो मूरख होवै ? वो पक्का धूरत हो ! वी
दोनू हाथा सू परजा न लूटियो । उण रो फल वी नै मिलग्यो ! अठ ई नरग होव अर
अठई सुरग !

छारान लखायो केँ जाण उणा रो वाप बाप नी, पुराणा रो दैत्य हायग्या
हाव ।

फेर छोटोड कया । 'पापा ! जीवती माची गिटणी सोरी कोनी ।'

वो मुळकियो । उण रै होठा माथै अडी मुसकान ही जिया वो बोल क अर म्हारा
लाडेसर निबळ री ता माताजी ई सीर हाव वानी !

पण इण भीम माथ की अडे पकायत लाग जिण सू पाप पुन रा पतडा बरोबर
रव ! काय कारण रा जाग हाँ या सजाग पण कुण इ मिनख न चेताव पकायत है !
अँक दिन बकिम आपर दोनू छारा साग मोटरडी म बठ'र जावतो हो क मोटरडी नोरी
सू भिडगी । मोटरडी 'बकनाचूर हायगी दुरघटना मे उणरा दोनू छोरा रामनाम सत
हायग्या । वी रो खुदरो दोनू टाग्या तटगी जिण सू वो पागळा होयग्यो ! चैरो इत्तो
मूडा होयग्यो जाण वो राखस रो वाप भडभाखस होव ! ताग अथ उण री वा अरयाऊ
मुसकाण सदव र वास्त मरगी । उण री बीनणी अणमणी अर आसूडा ढळकावती
रवती । कदई-कदई उणरी पासो इया जोवती जिया वा उण र होठा माथ अरयाऊ
मुसकाण देखणी चाव ! सगळा सू वेसी दूखणी बात आ ही क जिण र साग वी चूक
किया उणा र होठा माथ भात भात री मुसकाणा दोसण लागगी ! उण रा अरय बकिम
अक इज लगावतो केँ उण सगळा री मुळक वी न दुरासीसा देव ! फेर वो पछतावता
आपर खाटा करमा माथ रावतो पण उण र भावा सू लागतो क उण न आ पत्तो ई
हासी क वो रोव है क न ई !

पण वा वापडो साचली रावता ।

८

खेल

सावर दइया

अदीतवार ।

म्है तीनू भेळा होया । भेळा होय'र खेल (सनीमा) देखण रो प्राग्राम बणायो । गाडी पूणी दो बजी आया करती । बी दिन ढाई बजी आई । दीपलाण सू बठ्या । गाडी टुरी । रामगढ रकी । गोगामेडी रकी । भादरा रकी ।

म्है भादरा उतरघा । खाया-खाया चालण लाग्या । सनीमा हाल बन पूग्या । बठ पूछताछ करी । फिरम मरू होई न पूण घण्टा होयगी ही ।

—'चूल्है मे पडण दो, कानी देखा ।

—'और नइ तो ।'

—'अव फालतू ई है ।'

—'घोडी ताळ मे इटरवल हाय जासी ।'

—'आ स्साळी गाडडी लट बळी ।'

—'बगतसर होया तो काम बण जावतो ।

—'बगतसर होवती किमा आज आपनै आवणा हा नी ।

—'अवै ?'

—'आ ई अेव मुसीबत है ।

—'गाडी पाछी तो सात बजी आसी ।'

—'पण जित्तै ?'

—'लाइब्रेरी म बँठा ।'

—'वद है ।'

—'गानीजी मारघा गया ।'

—'मारघा जावण री काइ बात है । खुली हावती ता बगत काट लेवता ।'

—'बगत काटणो है ?'

—'काटणो ई है ।'

—'ता पछ मिदर चाला ।'

- ‘कुण सै ?’
- ‘रामदेवजी रे ।’
- ‘क्यू ?’
- ‘चाल र तदूरा बजावा ।
- ‘हा हा हा ।।’
- ‘मजाक छोडो ।’
- ‘हा, कोई ढग री बात करो ।
- ‘चाय पीवा ?’
- ‘आ ढग री बात होई ?’
- ‘तदूरा बजावण करता तो ठीक ई है ।
- ‘ठीक है जणा ठीक । चालो पीवा ।’
- ‘कुण पासी ?’
- ‘आई कोई पूछण री बात है । ये ई पासा ।
- ‘म्हें ई क्य ।’
- ‘बोल जिकोइ आडो खोलै ।’
- ‘म्हें बोल्यो, म्हारी भूल होई ।
- ‘भूल रो डड भुगतो परा ।’
- ‘पचा रो हुक्म सिर मार्ये ।’
- ‘आवो ।’
- ‘तीन चाय वणा । अकदम बढिया ।’
- ‘पत्ती तेज, मीठो कम ।’
- ‘अर दूध ?’
- ‘दूध ? दूध सरधा साह ।’
- ‘हा-हा-हा ।’
- ‘दूध खातर लारं कोनी देखै, ओ आपणा चेलो है ।
- ‘जणा सवा की सावळ ई करसी ।’
- ‘सवा रो मीको देवो ।’
- ‘अरे रामू ।’
- ‘बाइ गुरुजी ?’
- ‘बढिया मिठाई कुण-सी है ?’

- 'बवार ता गाजरपाव ताजा है गुरुजी ।'
- 'ता, बाटा चगा दगाण ।
- 'नो गुरुजी ।
- 'हां, चागो भाद ।'
- 'है तो ठीक ।'
- 'अबदम बड़िया है गुरुजी ।
- 'भाव बाई लगामो ?'
- 'भाव रा छाटा गुरुजी आधा बिला लय जावू ?
- 'बावळा हापया बाद ?
- 'कित्तो ताव ?'
- 'गो ग्राम चगा पंली ।'
- 'गो ग्राम मू बाद हागी गुरुजी बाई तो ग्राम ता लुवाई ।
- 'बेल री जरी बर भाई ।
- 'ध मरवासो म्हेन ।'
- 'भाई, धारा चेलो है आगला ।
- 'हां, गुरु सवा रा मौषो राजीना पाडी मिल ।
- 'बर भाई, तोवा बर । आज म्हारो चन्द्रमा इगोई है ।
- 'चन्द्रमा तो ठीक ई है ।'
- 'धारो काई ?'
- 'धारा म्हारो बांटघोटा पाडी है ।'
- 'बाता बम, भाई ।'
- 'हां गाजरपाव बानो ध्यान देवो ।
- 'गुरु, धारै चेलै नै हेलो पाड ।'
- 'बयू ?'
- 'हेलो पाड तो सरी ।'
- 'अर रामू ।'
- 'काई गुरुजी ?'
- 'अठ आव तो सरी ।'
- 'हां जी ।'
- 'गाजरपाव म चीणी ज्यादा है ।'

- 'ज्यादा तो कौनी अठौन इत्ती चालै ।'
- 'मुण्डो खराव होयग्यो ।'
- 'भुजिया मगावो ।'
- 'ला, सौ ग्राम बढिया भुजिया ला ।'
- 'बढिया लाइजै, बवीणीदार ।'
- 'भुजिया तो ठीक है ।'
- 'घाय ठीक वणारै चेलो ।'
- 'आ काम तो सलटघो ।'
- 'हा ५ ।'
- 'अठै सू चाला ?'
- 'चालणो ई पडसी ।'
- 'चालो, बारै चाला ।'
- 'अवै ?'
- 'सडका माथै घूमा ।'

ढाई-तीन घण्टा ताइ घूमता रया । कणाई इ सडक माथै, वणाइ वी सडक माथै । दा-च्यार दुकाना माव छाटी मोटी चीजा मोलाई । ब्लड खरीदी । सावण खरीदी । साग-सब्जी खरीदी । स्टेसन बन आवता अेक दरजन अण्डा खरीदघा । गाव पुग'र आमलट उणावण री साची ।

स्टेशन पूग्या जणा च्यार पाच मास्टर भळै मिलग्या । जेक टोळी सौ वणगी । वगत सोरो बटसी, आ सोच'र सैण राजी हाया ।

- 'आवो अगल डब्व म बँठा ।'
- 'बठै ता अघारो है ।'
- 'आपा नै चानण मे मोती पावणा है वार्द ?'
- 'पूण घण्टा रो ता रस्तो है ।'
- 'आ डब्व म भीड है ।'
- 'म्है कँवू हू नी, आग चाला ..।'
- 'चानो ।'
- 'अर रामदवा घू विन्ने ?'
- 'रामगन् जामू ।'

- दिन्नूँ दीस्या कागी गाडी म ।'
- 'नीट म ध्यान बोरी आयो होयूला ।'
- 'जाव नि— ?'
- 'सामे दा-तीन जणा भीर है ।'
- 'बोन ई बुलाम ले धागन टब्बे म बँटपा हा ।'
- 'गाडी तो गीटी दवण लाग रँई है ।'
- 'भाग'र चडा ।'
- 'हो चडा ।'
- 'ले बठ भाई रामदेवा ।'
- 'अर, अठ ग बँटपा ।'
- 'ब्यू पारी रोवयाडी है काई ?'
- 'अर मादर ।'
- 'तुभाई हा र गाल काई ?'
- 'मै ब्यू, मरै का ना बँटपा ।'
- 'आ गुण मूत्या ह ? उठ र ।'
- 'मै बव ह उठया ता मायो वाग जावला ।'
- 'आ है गुण ?'
- 'म्हारा जादमी है ।'
- 'ता था घगी-नुगामा रँ अँ दातू मीटा रिजव करायोडी है काइ ?'
- 'पगर'र मूत्या है लाटया व ।'
- 'आ राण जायो गुण मरै ।'
- 'तू मुण्डो सम्भाळर वाल भला ।'
- 'रामदेवा । गुण है जा ?'
- 'काइ टा भाई बनवारी ।'
- 'सुण है रामदेवा ।'
- 'का ?'
- 'क्षाल बूकीयो र बँटी कर इ न इत्तीताळ होई है लपर चपर करती न ।'
- 'दारुवाज भडुवा ।'
- 'रण्डी बववाम करे उठा इ नै अठ सू ।'
- 'घार मा-बना कागी काई ?'

—'धार धाप भाई बानी काई ?'

—'स्माळी वनवास वरण लाग री है ।'

—'ई र आदमी नै ता दया, स्माळो घग्घू कट्टे ई रा ।'

—'इत्ती ताळ होयगी मुण्ड म भूग घात्या बँटा है ।'

—'भाई, आ ता इ री हिम्मत है क चुप है अर जीव ।'

—'ये चावो काई हा ?'

—'रता भाई रामदेवा ।'

—'नई थ वता भाई वनवारी ।'

—'म्है वतावू ?'

—'हा ।'

—'धार म्हार इसी लुगाई हाव तो मरणो पड भाई ।'

—'राण्ड रा मईवाळ ।'

—'भाईजी, घासू धारी घरवाळी न चुप कोनी कराइज काई ?'

—'कमाल रो जादमी है ।'

—'चुप बठो है ।'

—'देवता चुप है ।'

—'देवी घट मे आयोडी है ।'

—'जरे आ लुगाई जात रयगी जे आदमी इया गाळ काढ तो बत्तीसी भाग नाखू ।'

—'आ कथ छाड रामदेवा ।'

—'धू जाण कोनी वनवारी नागाई कर स्माळी ।'

—'छोड यार लुगाई जात स वयू माथो लगाव ।'

—'भण ।'

—'आ माथो फुडा र रसी लाग ।'

—'चण्डी चेतगी ।'

—'कोई ओपरी छीया तो नइ लागणी हाव ।'

—'दो जूत पडघा अबार सीधी हो जाव ।'

—'माथ चढाघोडी लाग ।'

—'जकण्डखोरी ।'

—'नागाइ जमा-जमा र हिलघोडी लाग ।'

—'रामदेवा जावण द नी दस मिनट रा वाम है ।'

- ‘दग मिाट री वात षोती म्है बठ स अटई ।’
- ‘बठ र दस तो मरी असल मा रो है ता ।’
- ‘ह स । आ बठषो ।’
- ‘बठग्या भाई रामदेवा ।’
- ‘अव भचीठ वा नगी ।’
- ‘बालग्या ।’
- ‘म्है बपू आ पू ई बानी करे ।
- ‘अवार इत्ती तन-तन कर ही ती ।’
- ‘घाली जित्त करली आगती ।
- ‘अर अव ?’
- ‘बुगवार ई बानी ।’
- ‘आ ता पू बई जिवी हाई ।’
- ‘बाई ?’
- ‘बुप हागी वेटी ।
- ‘आपणा बगत टीक बठग्या ।’
- ‘घो गेल नट, आ मेन सही ।’
- ‘बिना टिगट ।’
- ‘आ ई ता मजा है ।’
- ‘इ रा जस घनवारी न ।’
- ‘हा ऽ इ टव्य मे वा ई लामो आपा न ।’
- ‘घार मुण्ड म कीडा पडसी ।’
- ‘ल भाई, मेन मळ चालू होयग्या ।’
- ‘आ इटरवन हो बाद ?’
- ‘हा ऽ ।’
- ‘मूफळी तो ग्यामी’ज बानी ।
- ‘अव ग्या परो ।’
- ‘धले मे है बाई ?’
- ‘हा ऽ ।’
- ‘बाढ देखाण ।’
- ‘ल भाई रामदेवा, पू ई मूफळीग्या ।’

- 'नीच रमीण कुत्ता !'
- 'नूवा मटिफिनेट ऐवा भाई !'
- 'पण आगा ता मटिफिनेट अणिया हा - ।'
- 'ता अवा परा कुण अरज घात ।
- 'कुतडी ।
- 'तू ऊ तू ऊ ऊ ।
- 'ह भगवान ! आ री लुगाया न विधवा कर ।'
- 'रामदेवा ! धारो टिगट ता अणर गातर पटग्यो ।'
- 'राखा है ता ! इ र भरतार दाइ जीवण मू ता चागा है मरणा !'
- 'धारो यात ता ठीक है रामदेवा !'
- 'राम हाव आ रा यस मिट मुद्दा रो ।'
- 'अव रामदेवा ?
- 'भाई उमा देवा वम म बध ता काइ फायना ?'
- 'वनवारी ।
- 'काइ ?
- 'मल म गति कौनी आई ।
- 'कनाइमैवस मू पत्नी वेई दफ कहाणी ढोली पडघा कर ।'
- 'ढीन चालण दो ।
- 'पण घणी ढीन काम री कानी हाया कर ।
- 'तेल दियाडी है जणा ई तो आ इत्ती लपर चपर कर ।'
- 'मिनख म राम कानी ।
- 'खूटा कमजार लाग ।
- 'माचे म सड र मरसा सगळा ।'
- 'ल भाई रामदेवा चीज विस्तार खायगी ।
- 'अव ना कया कहाणी ढीली चाल ।
- 'अज है तो ढीली ।'
- 'थोडी ताण दवू काइ ?'
- 'क्यू माथो लगाव ।
- 'जावण द नी दो मिनट री बात और है ।'
- 'धार नइ जची तो टाळ महीं ।
- 'हीरा ठण्डो पडग्यो ।'

- ‘भायना री बात मानली ।’
 —‘भायला स्याणा हे ।’
 —‘अर भायली ?’
 —‘नाम हाव या मुडदा रा ।’
 —‘हा-हा-हा ।’
 —‘ले माई, रामगढ आयग्या ।’
 —‘उतरो परा ।’
 —‘अच्छा देवी, राम राम ।’
 —‘कीडा पडसी मुडदा रं ।’
 —‘हा-हा हा ।’

रामगढ पछ ढव्व म स्याति वापरगी । अेक दो दफ वी लुगाई र मुण्ड सू फूल झडघा । किणी उघळो कोनी दियो जणा मत्त ई चुप होयगी ।

दम मिनट म दीपलाणो आयग्यो । म्है व्वाटर म आया । साग नानकजी हा । गपसप करण बठग्या ।

म्है अण्डा फेंटघा । स्टाव जगाया । तवो मत्या । आमलेट बणाई ।

- ‘हा, करो सरू ?’
 —‘दवाई वाढू वाड ?’
 —‘दवाई ?’
 —‘गुटको ।’
 —‘जठ बठ सू आयो ?’
 —‘आ ना पूछो । काढू ?’
 —‘वाई करसा ?’
 —‘ठण्ड मिट जाती ।’
 —‘गाडीवाळो खेल देग्या कोनी मिटो वाइ ?’
 —‘वा तो बगत बटी खातर ठीक हो ।’
 —‘हा ।’
 —‘दो गिलास वाढो ।’
 —‘अ लो ।’
 —‘किसी है ?’

- 'इम्पीरीयल !'
- 'चुपचाप कणा क्या आया ?'
- 'जादू सू भगवाँ है !'
- 'ता जादू चानण दा । पण !'
- 'पण वाट ?'
- 'विणी न ठा नइ पण्णी चाइज !'
- 'आपा दाना न ता है ई !'
- 'म्हारा मतलय विणी और न ।'
- 'का पछ अ भीता जाण ।'
- 'भीता भनई जाणा भीता र काण हाय, आंग कौनी होव !'
- 'सरू करो ।'
- 'हा करो !'
- 'चीयम !'
- 'चीयस !'
- 'आमलेट वन्धिया घणी है ।'
- 'घम, काम चलाऊ वणगी !'
- 'नइ, बढिया है ।'
- 'इम्पीरीयल ?'
- 'नइ आमलेट !'
- 'दानू बढिया है, घम !'
- 'हा हा !'
- 'घरा जाय'र काई कहमो ?'
- 'बूड बोलसू !'
- 'काई ?'
- 'मादरा जीम र आयो हू !'
- 'इ री खुणबू आसी नी !'
- 'भलाई आवो !'
- 'ठा है ?'
- 'हाऽ होळी दीवाळी लेवण री ठा है ।'
- 'पण दीवाळी तो गई अर होळी अज अळधी है !'

- 'छटठै छमासै भायला सागै ई चाल ।
 —'धारी म्हारी आ आदत अेक ।'
 —'चालो, अेक सू दो तो होया अेक आदत वाळा ।
 —'इणी मिस बदैवदास सागै बठीज जाव ।'
 —'हाऽ जा तो है ई ।'
 —'सिगरेट पीसो ?'
 —'नई, सिगरेट कोनी चालै ।
 —'पान तो चालसी ?'
 —'लाया हो काऽ ?'
 —'हा ।'
 —'खावो । पण थे तो जरदो गावो ।'
 —'थार खातर सादो बघवायोडो है ।
 —'थे तो पान रोजीना ई खावो ।'
 —'आदत पडगी ।'
 —'ठीक है । काई सौक ता होवणो ई चाइज ।'
 —'अच्छा, अवै म्हें चालू ?'
 —'पूगा'र आवू ?'
 —'नटै जी, गाडी आयगी नी मवारचा रो सागो होयोडो है ।'
 —'ठीक सा ।'

गाडी आयगी । सवारचा उतर'र गाव कानी टुरगी । अेक दो दफ आ आवाज सुणीजी—अरे कोई बडविराणै जावणिया है काई ? पण कोई उघळो बोनी सुणीज्यो । पछ वा अेकला ई टुरग्यो होवला ।

म्है माच माय पसवाडा फोरें हो । नीद जाव-आवू ही । की खुसर प्रसर सुणीजी । म्है चमकयो । बँटरो जगाय'र हाथ घडी देखी । सादो इग्यारै बजी ही । गाणी गई नै डड घण्टा सू ऊपर होयगी । अवै कुण मालै ? आ आवाज तो क्वाटर २ वन आवती लाग । चम्प री दुकान कनै लागै काई । आवाजा ही तो दब्योडी, पण रात र भरणाट म सुणीज ही । म्हारा कान खडा होयग्या ।

- 'ओ हसा ।
 —'के है ?
 —'माचिस दिय तो ।'
 —'काइ करमा ?'

—'बीडी पीसू ।'

—'फालतू चानणो होसी । किणी रो ध्यान जासी अठीन ।

—'अब अठीनै कोई कोनी आव ।'

—'जे कोई आय जाव तो ?'

—'गाव रँ अेव नाव है आ चम्पै री दुकान ।'

—'अर ओ ववाटर ।'

—'हैडमास्टर रँव ।'

—'खुडका सुण'र जागयो तो ?'

—'दिनूय छव वाळी गाडी सू पैली कोनी जागे ।'

—'थन काइ ठा ।'

—'म्है अठै ई तो रवू गाव मे अठ कुण कद सोव जाग, म्हन ठा है ।

—'फूलकी नै दुकान म भेज दी काइ ?

—'वा खुण मे वठी है नी ।

—'अघार मे काइ ठा पडै ।'

—'वो खूमलो अजै मरघो कोनी ।

—'वीनै तो अठ ई लाधणो चाइज हो ।'

—'घोडी ताळ और उडीक लेवा ।'

—'नइ तो पछै सरू करू ।

—'ठण्ड पडै ।'

—'अेक गुटको तो लेय ई लेवा म्हारी मानै तो ।'

—'सरू करघा पछ लार काई वचसी ?'

—'आ बात तो है ।'

—'खूमै नै बुलाय लावू ।

—'रात नै गळघा म कठै गोता खासी अघारै मे कठ ई पड र गोडा फोडसी

यारा ।'

—'खूमलै मे आ ई तो कमी है । अेन वगत माघे काम रिगाडै ।'

—'बैयगयो माल लाया । अबै खुद रो ठिनाणा कानो ।

—'पग बाजै दीस ।

—'सूमा ई हावणा चाइजै ।'

—'लागै तो इमो ई है ।'

—'कुण हासी र ।

- ‘म्है खुमा ।’
- ‘उडीकता उडीकता थाक्या ।’
- ‘चोरी जारी तो ओलै छानै ई होवै ।’
- ‘हा ऽ आ बात तो है ।’
- ‘माल लाया हो नी ?’
- ‘अेकदम धाकड ।’
- ‘बोतल खोला ?’
- ‘हा ऽ ।’
- ‘चम्पो आ दुकान ठीक वणाई है ।’
- ‘आपरा गुजारो करै वापडो ।’
- ‘अर अडी-बडी मे आपा ऐस ।’
- ‘हा-हा ।’
- ‘कठ धुख्या पाणी बोनी काइ ?’
- ‘अठै पाणी बठै लाघै ?’
- ‘दुकान म घडो राख्या कर है नी चम्पा ।
- ‘काल बोई चार’र लेयग्यो बताव ।’
- ‘घडो चोर र लेयग्यो ?’
- ‘ओ गाव जबरो है ।’
- ‘सर, इया ई धिकासा ।’
- ‘आ लिया कर है काइ ? पूछ ता ल ।’
- ‘फूलकी ।’
- ‘काई ?’
- ‘लेसी काई ?’
- ‘दा गुटवा लेय लेमू ।
- ‘पाणी बोनी है भलो ।
- ‘काइ करणो है पाणी रा ।’
- ‘जीवती रह ।’
- ‘द भाई, दा गुटवा द इण न ई ।
- ‘ल, इन आव ।
- ‘लावा अरे । इया काई करा ।

—‘काइ कर खुमला ?’

—‘की कोनी ।’

—‘थाडो खटाव कानी काइ ।’

—‘देखो, अबक पत्ती म्हारा नम्बर ।’

—‘तय होयोडी बात मे कदई गोळ पडघो काइ ?’

—‘अखरायोडो ठीक रव ।’

—‘नसो इत्तो घणा ।’

—‘बस अेक-अेक गुटको और ।’

—‘बातल पूरी होयगी ?’

—‘अेक बोतल मे काइ बच ।’

—‘बठ खुण मे म्हारलो खेस बिछाय ल ।’

—‘ओ खेस कित्ती दफ बिछघोडो हे ?’

—‘ई फाइव स्टार मे तो ओ ई डनलप बड है ।’

—‘थारी कल्पना सगति ऊच दरज री ।’

—‘म्हारी परख ई कम कोनी ।’

—‘देखसा ।’

—‘अबै देख परो ।’

—‘ये थोडा बार घूम आवो ।’

—‘अघारै मे बठ गोता खासा ऊभा हा जेककानी ।’

—‘ठीक है ।’

—‘हसा, पछ धू तयार रहीज ।’

—‘हू । अर थे ।’

—‘था दोना न घरा जाणा है । म्है म्हार गाडी आसी जित्त मतई सलटवा
करसा ।’

—‘गाडी तो छव पूणीछव ताइ आवं ।’

—‘पण अठै सू पाच सू पैली भागणो पडसी ।’

—‘क्यू ?’

—‘चम्पा आपरो समान पाणी ल्ये’र आ जाव ।’

—‘बीखल ।’

—‘वाई है र ?’

—‘धू साचो पारखी है ।’

—‘मातृमा तो ?’

— हा कित्तं म गादा ?’

— वषाय ।’

— गो म द्द वागाय ।

— अन्तः म्हे अर गुमा तो घान्ता ।

— हा ।’

—‘ये गया काद् ?’

— हाऽ. ।’

—‘अबे आपा ?’

—‘पाप बजो ताद् अडेई ।

—‘अबार कित्ती बजो है ?’

— अेक बजगी ।’

— रात गागा पढी है । गोया मरु म्हे ता ।

—‘गाभा पैर स ।

—‘माषिग जगा दगाण ।

— क्यू ?’

—‘अगिया बाना लाधी कठं बगार्द भेण ।

—‘गुमला पार है । समयमा होसी ।

— मर र राण्ड रा ।’

—‘नूवो ल आदुर्जे ।

— पण ?’

— दग-योग यारा ल त्रिय जान क्यू राय ।

— याटी दारु है काद् ?’

—‘गटाव राग । अढा पडघा है । आपा साग ई पीबाला ।’

— जोवा दिया त ।’

—‘तजाम रातणो पढ ।

—‘अढा राल म्हे धवगी ।’

—‘त, पी परी .ताजी हा जा ।’

हा ता अब मुणा भाद् वाचणिया ।

अघारं मे चालतं द्द गल री वाता मुण र म्हारी नीद उडगी । इच्छा हुई, बटरी
रुप र जावु अर चम्प री होटल म अडो चलावणिया न ओळपू । गाववाळा साभै

जा रो खेल चवडै करू । पण आ सोच र टाळ करग्यो—इ दुनिया म बाइ ठा कठ-कठ
इसा खेल हावै अर नित होव । इण सू ई ऊचा मल होवै ।

दिनूगै चम्पै नै बतासू ।

महै पसवाडो फोर'र सोवण लाग्यो । दापारा खेल दसण नै भादरा गया । गाडी
लेट होयगी । खेल कोनी दख सकया । पाछ आवता गाडी रै डब्बै मे अेक खेल देख्या ।
दारु आमलेट रा अेक खेल ई कमरै मे होयो । अेक खेल अघारै मे होयो ।

दिनूगै ऊठघो ।

गाडी गई परो ही । पाच सात सवारघा चम्पै री दुकान माय चाय पीव ही ।
चम्पो हाथ मे चोळी लिया ऊभो कँवै हो— 'रात न आ अठ कुण नाखग्या मादर ।'

बाता रै नूव खेल सारू मसालो ताघग्या लोगा नै । लोग भेळा होवण लाग्या ।

बाता रो खेन चालू हो अर म्है देखै-मुर्ण हो ।

□

सैलीनेशन

मालचन्द तिवाडी

मिसेज साहिनी किचन म हा, हा वा किचन ई ही, रसोई नी ही । अेक रसोई मिसेज साहिनी रँ टावरपण म ही जिणम थेपडघा री भोभर हटँ सकरकदी आटीजती अर प्याज जिणमे वजित हा । जूत्या तो खर कोसे'क बळगी ई खोलीज जावती । दादी जीवती रँई जित्त वी मे सिनान करया टाळ वडनो ई जुलम हो । वा रसोई, असल मे तो अेक रसोवडो हो—जिणरा सँग छोंक-बघार चाखता थका मिसेज सोहिनी बडा हाया अर सासरँ जाय पूग्या । सासर सू चाल'र मिसेज सोहिनी जँपुर आयग्या अर और वडा होयग्या । टावरपण री उण रसोई रो तो जवँ मिसेज सोहिनी नँ हेसण कं खीषणं टाळ की अरय ई नी समय आवँ । साची ई बात है । सा की कितरो 'एवरेज' हो—घुआसँ मे छीकल्डा करता वूढी होवती दादघा, नाया अर मावा ! इण पत मिसेज सोहिनी री समझदारी बढती ई गई ।

अवँ इणनँ आप मिसेज सोहिनी री समझदारी नी, तो काइ कैवोला क अबार व आपर किचन म हा टेलीफोन डाइग रूम म हो, घटी पूरी बजण री ठौड फकत अेकर 'ट्रिग' कर'र रयगी अर मिसेज सोहिनी समझग्या क फोन किण रो है ।

'आऊ आऊ ।' मिसेज सोहिनी मळाई री कटोरी माथ चीणी बुरकावता बँयो ।

निस्चँ ई ओ 'आऊ-आऊ' टेलीफोन सास् हो । फोन री आ अेक अथसास्त्रीय तजवीज हो । फोन चित्राजी रो हो । वार प्राइवेट कनवशन हो, मिसेज सोहिनी रँ सरकारी । चित्राजी नँ बात करणी हावँ तो वँ फकत अेकर 'रिंग' कर र धर देव । लोकल काल रा पइसा बच जावँ अर खर्चों सरकार र खातँ मे मड जावँ । चित्राजी रँ सुभाव री अधीरताई किणी सू अछानी नी है, इण खातर ई मिसेज सोहिनी झट उत्तर दियो । मिसेज सोहिनी रँ 'सकिल मे सग तरँ री बानगी है—कलावती, मोनिका, अभिलासा, ऊमा, देवयानी अर हे भगवान ! सग नाव जेकँ समचँ चेतँ आवणा कोई सेज काम है ?

मिसेज सोहिनी कटोरी लाय'र डाइनिंग-टबल पर मल्ही अर फोन बानी मुडा करजो कँ गौड साहब 'हाय'र वारँ निकळघा । मायँ म ऊत्र्याडा थोडा घणा गीला केसा मे आगळघा फेरता गौड साहब री निजर आपरी घरवाळी सू मिली अर वँ मुळक खिडाय दीवी । गौड साहब दाता आदमी हा । वँ मुळकता ई रँवता । वँ जँ आपरी घरवाळी री किणी बात नँ आख मोच'र मूखता समझता, तो ई हसर दात ई दिखाय

देवता । जितरी मधरी वारी मुळक होवती, उणरो म्यानो उतरो ई ऊडा होवता—आ वात जाणनी भात मुसकल ही ।

अवार ई वै जेकदम ओपती अर मधरी मुळक मुळकया क

‘काइ मतलब ? ‘मिसेज सोहिनी आरया तरेर’र पूछ्या ।

‘की नी म्है तो कवू वै रात धारै माथं म कित्तो जोरदार दद हा अर अवै आ वाम वाळी फेर नी आवैला ।’ कैय’र गौड साहब गीली आगळ्या लपेटयोई ताळिय रें पूछ लीवी ।

‘धारै ता ठडी लीक पडगी । मिसेज साहिनी रें जाण टाटिया लडग्यो, ‘पण सुण लो वान खोल र कै चावै बीरा हजार नखरा सहन करू, पर वा आवैला जरूर वा नी, तो धीरी बैन कोई और जावला । म्है अवार चित्रा सू वात करू ।’

गौड साहब नै दपतर पूगणो हो । वै किचन मे बडग्या । अक सेंची रें खूण मे दोय-तीन देवतावा री तस्वीरा ही । साम्ही मामूली पूजा पाठ री सामग्री ई । गौड साहब हरमेस दाई दोय अग्रवत्तया भळी मुलगाई अर अपार चक्कर तस्वीरा रा देय र स्टण्ड पर टाग दीवी । चटपट हाथ जोड र वै वेड रुम म गया अर वपडा पर’र डाइनिंग टेबल वनै आय ऊमग्या ।

‘हाय राम ! इण बिचाळी मिसेज साहिनी फोन मिलाय लिया हा, हलो केय दिया हो अर चित्राजी री किणी वात पर चिमक’र कयो, ‘अवै म्है इत्ती खाली बोतला-कठ सू लाऊ ? म्हारै अ तो पीवै कोयनी ।

आ कैय र मिसेज सोहिनी आपर आ कानी देरयो ।।

गौड साहब तो जाण इणी न उडीक हा, शटव सागै आरुया मीच र व नाड न जेक खम दय हारया ।

समचो कै हद ई होयगी ।

जो पोज वणावणो गौड साहब री पुराणी आदत । वै घणी दफे मुडै म पान री पीक भर्या इण तर आरया मीच देव अर फेर वान की कवण सुणन री दरकार इ नी हाव । मिसेज सोहिनी वारो अक-अक पेच जाणनै रो दावो राखै । इण तरीकै न व हद दर्जे री मखोलवाजी मानै । इणन देख’र वार माय तेल पाणी पडग्यो हा पण पली चित्राजी सू वात करणी घणी जरुरी ही ।

अवार गौड साहब र मुड म पान नी, मळाई ही ।

खाण-पीण री पोस्टिकता र वार म व मिसेज सोहिनी र नजरिय मे कोई भिजाग नी घाल । मिसेज साहिनी री इण पर खास नजर । काइ नखा साट है, किण सू दात अर हड्या निराग रेव किसी चीज खास लुगाया रा खाज अर काइ मर्दा साट पणा भुपीद —जा मामला म व मुद्द रूप सू मिसेज साहिनी रें ज्ञान पर निभर रेव । इण निभरता म वानै सैत रळ्यो दूध, उडद रा लाडू व किणी बुरकायोडी मळाई मौसम

मुजब मिलवो कर । हा, डिब्बा-बद चीजा नै व कदैई-कदैई 'माडन दनियानूसी' कय'र मिसेज सोहिनी रै क्षेत्राधिकार मे पग जरूर भेल देवै, पण पछ बान सुणनो पड, 'आ डिब्बा रै ताण ई दोवू सपूत आपर बाप दाई माय वार सू लोह लकड होयग्या । म्हारी ठोड कोई दूजी मा होवती, तो बूबडा ड रैय जावता ।'

'दूजी मा' र नाव पर गौड साहब बोल नी जाव, जा सावचेती ई मिसेज साहिनी पूरी राख अर पत्नी ई कैय देवै, 'देखा, अब फालतू बोर मत करया । म्हनै निग है क थारी मा तो बस थारी मा हा । वा कथा म्हन याद होयगी । व हपतै हपतै तूळी नी वाळता । चूल्है मे बासदी अर पणीड मे पाणी नी निबडण देवता । सिझ्या पडी पछ झाडू र हाय नी लगावता । रात नै अंठा बतण छोडणा पाप समझता आद इत्याद धयवाद ।'

पण अबार गौड साहब कन अगै ई पुरसत नी ही । पूणी दस रो सायरन बाज हो ।

गौड साहब न पक्की साय ही क सरकारी फोन पर हाल वाता रा पच लम्बा बघसी । वै बारै निसरता जरूरी समझ'र इत्ता ई कया, 'स्यात् दो बज्या आज फेर मिस्त्री आवैला । चौथो चक्कर हासी । घरै नी लाधी, तो धू जाणै अर थारी वाशिग मशीन जाणै । फेर म्हनै मत कई ।'

'हा-हा धू आव री ।' मिसेज साहिनी पलका र ऊपर डाळ गौड साहब कानी देखता फान मे कयो, 'टमाटर ई धू लेवती आयजै । थैला घर सू लेवणा ना भूली । म्है खाली बोटला खरीद लेसू । म्हारा भाग ई इसा है । हाय राम । म्है तो फेर भूल जावती, रात भर म्हारो माथो सुओ नी होयो । आ मरजावणी कामवाळी क्यू नी आई ?'

गौड साहब अंकर फेर मुळकया अर बार निसरग्या ।

'डिब्बा बदी प्राशिक्षण-केंद्र' सू आठ-जाठ पूरी सोळै वातना तयार करवाय'र मिसेज साहिनी अर चित्राजी दोवू रिक्स म बठग्या हा । रिक्स वाळा जुवान छारो हो फूटरी अर इतर सू गमकती सवारी देख र घणी विबोळ करघा बिना बाजिव भाड मानग्यो ।

उहाळै रो च्यार बज्या रो सूरज काळी सडक पर चिलवा मार हो ।

जम'र बँठघा पछै मिसेज साहिनी आपरै 'स्लीव-लेस' र वार ऊनर्योडी चामडी पर कवळास सू साज करता कयो, 'टाइम भोत लागग्या, है नी ?'

'टमाटर बिसा थोडा हा ।' चित्राजी ऊथप्योडा-सी कयो, 'केई दिना रो गीत मिटघा । म्हारै तो लोपा अर षटी साम बिना अब पग इ नी मल्हे । अब पद्रै दिन हायग्या म्हारा बान खावता ममी माम, ममी साम ।'

'अच्छा चित्रा, थारै ता बी सी पी आयग्यो नी ?' टावरा रा नाव आवतै ई मिसेज सोहिनी नै जाणै विण तरै ओ सवाल मुझ्यो ।

फियो, 'अरि अरि वनाइन् टिन्नाया। वाद हावम

आ यत।' चित्रा जी गुमान सू
अली है, दाहू रा ठेनेदार।'

'कित्ता पटथा ?'

चित्राजी चिडकणे रो वाणी म उत्तर टिया।

'आठ हजार। टपूटी ममत।
अेवर वई ताळ चुप रंय'र मि
पूछथा। मलोत्रेठ नी करेला ?

म मुजत्र आपरी गाडी रं पल्ले न वाना लारं

'व्हाई नाट ?' चित्राजी जादोवा। पण बी माण्टरनी नं दुपारं टाडम किया
दाव'र वया, अेव दिन मगळया भेळी ह
मिलसी ?'

साहिनी पूछथा, 'वीरी वाता छाड। वा राज

विन, अभिलासा ?' मिसज री गाय घाडी ई है। आ गास्वामण्या री ता
ई पाट या कर। पारं म्हार दाई गूठीद लिया पछ जाण अेवाघा टावर जणनं रा
दुनिया ई तिरवाळा है। पला सग सुवअठ, माची वेवू चित्रा म्हारं ब्याव री फोटुआ
सुवाद लेवण सारू ई ब्याव करं। अर तिडवण लाग जावं। वाइ ही म्है, गाय सट, अर
वणाई हाय म आय जावं, तो वाळजा वूड नी ववू, अेवर जै कियाई कर'र कवारी होय
माइता लपेट दीवी वासदी र चौफर। म ता नी परणीजू आदमी माइ है अेक सिक्को
जाऊनी, तो पाछी आ गौड साह्य माणछें दो तीन दिन ता सौरा निक्ळ—अर अचाण
है। दिन रात तडा, पण दीरं पर गयाण'र याद आवं क पूछ मन। पण आ बात धन
चक अं म्हन इत्ता भला, दत्ता प्यारा व्हाई मरू होय जाव।'

कऊ, वान वताय दू नी, ता दूणी रास। घारा साह्य ता म्हारं की समझ म नी आव।

'भाई साहिनी, डोण्ट माइण्ड अजीव सो डर लागतो रवं। म्हें वान छोड दूजो
म्हन तो गौड साह्य री प्रजेंस म अेक रा विचाळें ऊम्यो ई की नरम पडघाडो नी दीलें।
जाण्मी नी देरया, जिवा फूटरी लुगास गौड साह्य वणाई मुलायम निजरा सू निरखता
खैर, म्हारो जावण द, थू वता, थन तहिनी री उघाडी वमर पर हवळें-सी'क चूटियो
होवैला। कय र चित्राजी मिसेज सा।

भर लिया।

।।लण सारू मुडो सोल्यो ई हो कं जाणं रिक्स मे

मिसेज माहिनी विदक'र

भूचाळ आयायो।

ममचें खडवडीजी।

पगा हेर्ट पडी वातला अेव साडक पर आयग्या। वा आपरो अगाछो हाय में
रिक्सवाळो सीट सू वूद'र रग्यो। फेर वो पहिया लारं छूटघोड 'स्पीड ब्रेकर
लेय'र लिलाड रो पसेवो पूछण ला

न वगनी-सी निजरा सू देख्यो।

री सगळी बात ताड र गरज्या, ओ भाया, चालणा

इत्ती ताळ मे मिसेज सोहिखण री धन काई जस्त कानी। म्है विना भाडो
है, तो साम्ही देख र चाल। लारं अेवचो ?'

दिया उठ'र नी भाग जावाली सनेयग्यो अर आपरा पग पाछा पडला पर मल दिया।

रिक्सवाळा पाछो वहीर।

हाणिया

मिसेज सोहिनी अचाणचक बोल्या, 'जरे हा, चित्रा देख, म्है तो फेर भूलगी । आज वी मरी कामवाळी रै काइ होयो ! सगळा तो बरतण पडघा हे । झाडू बुहारी ई उडीक । वाशिंगमशीन यारी सराव पडी है । स्मा घर ऊध माथै लाधसी । की वतायो धारी मामती ?'

गोमती चित्राजी री कामवाळी रो नाव हा ।

मिसेज सोहिनी सारू कामवाळी वा ई सोध'र लाई ही । कामवाळी नी पूग्या वीरा समाचार चित्राजी र माफत वीन ई पूछणा पडता । अवार चित्राजी वतायो, 'दिनुग फोन करघो जित्त ता गोमती ई नी आई ही । फेर म्है अठीन जायगी ।'

'इण रो मत नव ।' मिसेज सोहिनी बात विचाळि छोड र अणमणा होयग्या ।

च्यार दिन बीतग्या, दोनू कामवाळया नी आई ही ।

दिनुग रो टाइम । मिसेज सोहिनी डाईनिंग टबल कने बुर्सी माथै जेकला बैठया की सोचै हा अर निरायती साग चाय री चुस्वया ठेवै हा ।

टावरा न स्कूल बहीर कर दिया हा ।

गौड साहब काल ई दोरे पर दिल्ली गया परा हा ।

मिसेज सोहिनी रै साम्ही अेक वडी पिडकी ही । पर्दा हटायोडा हा । तावड रा हाय अजेस रूण विडकी लग नी पूग्या हा । ठण्डे वाचा रै मायकर अेक लाम्बो-चीडो दग्साव हा—जिणम अेन पिडकी र नजीक छीदी डाळया अर नुकील पाना रो अेक दरखत, वाउण्डी बाल बनकर बगती सडक, सडक पार स्टेट बँक र क्षेत्रीय कार्यालय री टणकोर लाल इमारत अर इमारत रै चौफेर विड्योडी हरियाळी अर फुलवारी ।

मिनख जेम्स इक्का दुकाना ई दीखणा सरू होया हा । दो-अेक घडी पछ तो भात भात रा मिनख अर खुगाया स सडक अर इमारत नै चेळवै हावणो ई हो, पण अवार फकत अेक घुघळी-सी क तुगाई साथा पग भेलती जावती दीस ही । मिसेज सोहिनी अचाणचक वीनै पिछाण लीवी—गोमती !

मिसेज सोहिनी नै लखायो क व अवार हेलो पाड लेयसी, पण इत्ते म तो गोमती अक कानी मुड'र अदीठ होयगी ।

'मरजावणी, अेक तो जीवती ई है ।' मिसेज सोहिनी बडवडावता थका अेक उम्मीद री निजर सगळ घर पर पसार दीवी ।

आज दुपारं चित्राजी र वी सी पी रा मेलिअशन हो । तै हो क दोय बग्या सग मिसेज सोहिनी र अठ भेली होयसी । खाणो पीणो बार-सू आयसी । वी सी पी अर कसट रो खर्चा ई चित्राजी रो । चाम पाणी मिसेज सोहिनी कानी सै फुडसी, सविसे हावैला । काल ई गौड साहब रो दोरा बग्या अर गळती व आ करी क दुपारं ई चपयसी, भेज'र श्रीफवेस दपतर मगवाय लियो । चपरासी रै घर सू निकळी ई मिसेज सोहिनी र पली बात आ इज दिमाग म आई । फटाफट चित्राजी नै फोन करघो, व आग सग न नूतो देवण री जिम्मवारी तबड लीवी ।

गोठ साहय रै दोरै पर निबळ्या पछै मिमज मोहिना अही गोठा वर लखता । गोठ साहय घवा आ चात बदई नी होय सक् । कारण यँ अेक ता मिमेज सोहिनी री 'फ्रेण्ड्ग' गोठ साहय री मौजूदगी म 'ईजी नी हाय गक अर दूज—बावजूद लुगाया री सुततरता अर बरावणी री तमाम जुवानो डिहाळ रै—मिसज माहिनी गोठ साहय सू माय ई माय बुरी तरै ठरै । चायत यक ई घारी पसद-नापसद सू घणा अठीन उठीन नी होय सक् । स्यात गोठ साहय मिमज मोहिनी रै मामलै इण डर न ओळख अर मुळवै । घारी मुळव सू ओ डर-चालू पत्रिवावा म छप्याही दलीला रो भेन बढळ'र—मिसज सोहिनी री जीम माथ आय बँठै । गोठ साहय दणन आळयता घवा काई महान दप्टा होय जावै आरपार अर अपरपार निजरा सू मा यी निरसता निरभे पुरस, जिणन उणर आसण सू मिसज सोहिनी जडी लुगाया बदई नी डिगाय सक् ।

अर फेर अही ताकुछ सुततरता रै लावा साह मिसज सोहिनी सुदोसुद वन स ई सासी श्रीमत बगूल लव । और ता और, वै आपरै दावू लाज्जा नै बेजा 'बाफीडेंस' मे राखै ताकि वारै पाषा साम्ही इण सुततरता रा दरसाव उघड नी जावै । इण तरै मिसज मोहिनी आपर मायलै डर साह आप ई साह-पाणी रा पक्का इतजाम रागै ।

आज ई अडो इतजाम हो ।

कामवाळी र नी पूगण सू मिमज सोहिनी रा जाव यी उडार पडघो हो । हे भगवान ! दोय बजता किसी जेज लाग अर सगळो घर उध माथ पडघो हे । घर चावै सेजा उडीकती परणी रै उनमान सज्या घज्यो अर अवाट दीयो भनाई, कामवाळी नी पूग ता मिसेज सोहिनी न वो हर घडी उध माथ ई दीतै । आज घर री माथा चोटी घणी जहरी । सग भेळ्या होयमी । मिसेज मोहिनी र मग रै आव जावै पण जा कामवाळी तो स्थान लेवण नै तयार ।

दुनिया भर री शिकोळ पछै ता कामवाळी मिली अर आ इज वरण होयगी । साम्ही मुडै अेकदम गळ री जात अर घरै पूग्या पछै पक्की मतरण । इधको ओ वै इत बडै सहैर म इसी मुची-नुडी लुगाया रो इत्तो टाटा । घणी दफै मिसज सोहिनी न आपर चेत र परवार कामवाळी साह अेक तुलना सूझ जाव --आपरै छोटै थकै देरुयोडी जेक एल्म्युनियम री देगची, जिणम सापती थका घर भर रै मिनान साह गण खण पाणी उकळया करतो । अेक दिन वी र पद म सीणा होयग्या । पछै वा टावरा रै रमतिया मे रळगी अर फेर रूडती पडती विडरूप होय र काश ठा वठै गमगी ही । पण आ मरजावणी कामवाळी तो जीवती होयला, मिसेज सोहिनी साच'र उठ्या अर टेलीफोन लग जाय पूग्या ।

'हेलो चिना अवार की ताळ पला म्है थारी गोमती न देखी । जज पूगी'क नी ?'

फोन सुणता मिसेज साहिनी री लिलाडी म तीन सळ पडग्या । वान धूजणी-सी मैसूस होई । व पूछघो 'कद ?

फेर और कई ताळ पछ वै फोन न डाव कान सू जीवण कान पर लिया अर हाफता सी व कयो हा हा प्लीज चिना द्याई ठीक रयती ।

इणी पल कान-बेल बाजी टिंग ।

मिसेज सोहिनी री छाती धक् होयगी ।

व फोन पकडघा पकडघा दरवाजै कानी देरयो व आ कीकर होय सकै ?

तुरत फोन रप'र वै दरवाजो खोल्यो ।

'मम्मी ।' साम्ही बस्ती र भार मू दोलडो होयोडो सुमित खडघा हो ।

'बदमास ' मिसेज सोहिनी झिडकता थका पूछथो, 'इण तर घटी क्यू वजाई ?
में जाण्यो धारा पापा आयग्या । घन ठा नी, व दौरै पर गयोडा है ।

सुमित जोर स हस्यो, 'मम्मी पापा सू डरै मम्मी पापा सू डर ।'

'चुप्प वत्तमीज चाल, कपडा बदळ ।'

मिसेज सोहिनी पूछणो भूलग्या वै सुमित स्कून सू जल्दी कीकर आयग्यो ?

आज रां गोठ टळगी ।

सुमित राना-पी'र दोस्ता माग खलणनं गया परो ।

दो अजेस नी बज्या हा, वज रया हा ।

मिसेज सोहिनी आपरै ई घर नै नूवी निजरा सू देख हा । वान लखावै हो वै
कोई नई चीज घर म आयगी है जिकी सगळै सामान री भीड म कठई गम्योडी है,
सापटतीक दीख नी रई है— पण है जरूर ।

बीच-बीच म जाण थक र मिसेज सोहिनी आरया बीच लेवता । तद काना म
टेनीफोन पर चित्राजी री बतायोडी वाता अर सुमित रो आपरै पापा री स्टाइल म
काल-बेल वजाय'र चिगावणा— सीटी रै उनमान भूजण लाग जावता । फेर अक
दरमाव माय रो माय घेरा घालण लाग जावतो अक आदमी, दाहू म धुत्त, भैस दाई
फूफाडा करतो दरवाजो पीट रैयो है अर जियाई दरवाजो खुलै, दाहू रै भभक साग
सुणीजै 'हरामजादी राड, माथे चढे यू है काइ वता ह, यू है काइ ? पग री
जूती बता, किता पइसा कमाया आज ? अ साहब लोग आपरी मेमा री गोरी
चामडो अर इत्तर-फुलेन सू उथप्योडा है । आनै चरकास चाइज । ठीक है दिया कर
पण पइसा तो म्हन द । अर धारी जा छोरी आ ई कोई साहब री औलाद लागै
जा ई म्हन देय दे । ला ला नही ? तो ले-ले ले ।'

मिसेज सोहिनी जाणै इण मार सू वचण सारू ई लार सिरकै अर वारी आरया
खुल जाव । वै सोचण लाग जाव सुमित रा पापा तां कदई दाहू नी पीवै, फेर म्हन डर
क्यू लागै ? गाळ तो आपरी ठौड कदई ऊचा ई नी बोल । म्हारी किसी माग पूरी नी
करी ? म्हारा गेणा, म्हारा कपडा, ओ घर, ओ फर्नीचर जो टेलीफोन, अ परदा—
सग जग्या वै ई तो है फेर म्है किण सू डरू ? काइ म्है सुमित रै पापा रै मुळकण सू
डर ? काइ होव जे वै जिक गास तरीकै मू काल-बेल बजाव तो । इणम डरण री
काइ बात ?

अचाणचक मिसेज सोहिनी नै दीखै क गोड माहुर कामवाळी रै दरवाज पर खडघा-खडघा मुळक रया है अर वा हाथ मे कची तिया रणचण्डा ज्यू साम्ही गडी है, 'आव आव रागस म्हारै नजीक तो आव !'

मच ! जाण खून रो फवारो छूटै ।

'ट्री ई ई ई ग ।'

लम्बी काल-बेल सू मिसेज सोहिनी री आस जजाळ म खुल जावै । वै घडी कानी देरयो पूरी दोय बजगी । स्यात् अमित स्कुल सू आयगयो । थाकन डोल सू उठ'र मिसेज सोहिनी दरवाजो खोल दियो ।

'जरे ! अभिलासा यू ?'

'क्यू बिना बुलायोडी भैमान तो हू नी, इतरो अचभो काई वात रो ?' रगीन चस्म नै आग्या सू माथे पर सिरकावता अभिलासा हसी ।

'आ मायन आवरी ।' मिसेज सोहिनी नै जाण अभिलासा रै आवणै सू आपरै माय ई माय की जग्या मिली हाव—वै अक सोरफ मसूस करता कयो ।

अभिलासा पस न लापरवाही सू अक कानी 'हाख'र दीवान पर पसरगी । फेर की सूघती-सी'क पूछघो, 'इज समथिग राग कोई नही आई अभी तक ?'

मिसेज सोहिनी इण रो उत्तर नी देय र पूछघो 'अभिलासा, यू म्हारी काम वाळी नै देखी कदैई ?'

'हा क्या ? कोई नुबसाण करगी ? समथिग मच प्रीसियस ?'

'नी ' मिसेज सोहिनी पुतीं सू कयो, 'वा अस्पताल मे है । बीरो हसबैण्ड वीर पट मे कची घाप दीवी ।'

अभिलासा उठ बैठी, 'पण क्यू ? फोर व्हाट ?'

आज च्यार दिन होयगा, वा भर्ती है । बीरो हसबैण्ड कोई रोजगार नी करतो हो । ओ दूसरो ब्याव हो बीरो पैल सू अक छोरी ही जिकी अब जुवान होयगी । इत्ता दिन तो बीरा जादमी सिफ बीरो कमाई खोस'र दारू पीवतो जब बीरो नायत बी छोरी पर ही । उण दिन वो नसै म धुत्त हो, आ कची लेय'र छोरी अर बीर बिवाळ खडी होयगी । वो कची खोस र पाछी उणरै ई पट म घोप दीवी । मिसेज सोहिनी कय र चुप होयगी ।

'देत पूअर फ्रेचर ।' अफमोस जतावती अभिलासा बोली 'आल दा सम, म्है पूछू क अँ फाइनेंसियली अनप्रोडक्टिव लुगाया आखिर ब्याव करै क्यू है ? फेर अँकर नी, दो दो वार ? एनो बे, यनै किया पती लाग्यो ?'

मिसेज सोहिनी टेलीफोन रा सगळो प्रसग बताय दियो ।

मुण र अभिलासा बोली डोण्ट बी मच सेण्टीमटल, माई डीयर सोहिनी । तो उण कारण पार्टी कमल कर दीवी । आखिर ध रई लुगाया री लुगाया । इण तर तो राज अखवार पट र रोज हसणो बोलणो कसत होय मकै । खँर, एज यू लाइव

म्है चाल सू हाल ताई तो म्हारें रिसेस चाल रई होवैला । आई मन्ट बी वेक विदिन टू सेव माई हाफ डे कँज्युअल ।’

अभिलासा रगीन चस्मो पाछो आग्या पर हास’र वहीर होयगी ।

मिसेज साहिनी अेक अयूथ अर साव निरवाळें डर म पज्याऽ घटा हा—अेक अडो डर, जिणम गौड माहव गुद ई हाजर हा अर वारी उडीक ई सामल ही । पण घणी ताळ इण तरें वठघो रवणो मुसकल होयग्यो, तो मिसेज साहिनी कपडा बदलघा, पम उठायो अर वारें निसरग्या ।

अमित अजेस आयो नी हो । वीन दवण सारू चावी नीच राय साहव र ववाटर पर दीवी, तो मिसज राय पूछघो, ‘इण घूम तावड मे सवारी ?’

‘अस्पताळ ।’ मिसेज सोहिनी कँय’र झट पाछा मुडग्या ।

रात पडगी । सिझ्या गौड साहव फोन करघो कँ वें रातनें मोडा थका घर पूग जासी । तद सू मिसेज सोहिनी रा वान जाणें काल वल सागें चिप’र रयग्या हा । वारी आख्या जवस टी वी रें पर्दे पर ही । मरुस्थल माथें कोई वृत्त चित्र दिखायो जाय रैयो हा । सोनलिया घोरा रो अमाप बिस्तार सगळ सरणाटें समेत पर्दे माघ पसवाडा फोरें हा । अग्रेजी मे कमेण्ट्री चालू ही, पण वीन सुणनियो कोई नी हो ।

अस्पताळ सू मिसेज सोहिनी नै सागी पगा ई पाछो आवणो पडग्यो । ऊजळो शक बुशट पेरघोडो ‘पूछताछ’ बावू साव निलिप्त भाव स वताय दियो ‘सजिकल ग्रुप-2, बी वाड, वेड न 43 पेशेंट नेम जानकी, एज 36, इजरी इन अपर एन्डामिनल रीजन डिक्लेयड डड दिम आफटर-नून एण्ड डड बोडी डिस्चाज्ड टू हर रलेटि ज ।’

‘थक यू ।’ मिसज सोहिनी कया अर मुडतै ई वारी आरया आग तिरवाळो आयग्यो । मैन गेट सू पाछा निवळ’र पोच म जावता आवता तो वान भीत रो सायरो ई लेवणो पडग्यो ।

‘तो उणरो नाव जानकी हो ।’ मिसेज सोहिनी उण मुच तुड कळझाइज्योड चर न याद करता सोच्यो, ‘साचाणी, म्है काइ इत्ता दिना मे वीरो नाव ई नी पूछघो अेक नाव जिणर सारें अेक समूची जिदगी ही, असल जद्दो-जहद ही । अेक साची नडाई ही जिक नै फक्त काम वाळी कया काम सर जावतो म्हारो ?’

मिसेज सोहिनी न लखाया क कोई वान वारें वाळज म डायनामाईट होवणें रा समचार देयग्यो—समचार कँ कद थो वारी चिदया चिदया उडाय देवला की ठा नी पड सक । वान रय रय र लुगाई मिनल री घराबरी र बाबत रात दिन आपरी करघोडी जुवानी झिकोळ चेत आय ही । जिणन क व अेक महान मोर्चो वणाय रायरो हो अर खुदोखुद नै अपरबळी योद्धा । वारी इच्छा होई क कठई भाग र जावें अर काच म मुडा देख काड वारी सूरत जानकी सू घोडी घणी ई मिन ?

घर पूग्या अमित दरवाजो खोल्यो हो अर आपरी ममी री सदीनी चेळक मूरती माथे कळमस री झाई ओळखतो पूछ्यो हो, 'ममा, काइ होयो ? तवीयत तो खराब नी हे ?

'ठीक ई हू । चाय बणा दे ।' कैय र मिसेज सोहिनी डाइनिंग टेबल कन आपरी धितू जाग्या आय बठग्या हा ।

खिडकी कनर्त दरखत री डाळघा अर पाना पर सू डूबता सुरजी रो उजास चासणी री गलाई जाडो पडतो थको झरण लाग्यो हो । अेक चक् चूदरी डाळघा डाळघा चाल र आयोडी खिडकी रँ काचा पर पजिया जिमाया ऊभी मुडो मचकोड ही । मिसेज सोहिनी री ज्यू ई नजर पडी, वै टेबल माथे हाथ पटक'र वीने भगाय दीवी । वा थोडी देर मे पूछ हिलावती पाछी आयगी । मिसेज सोहिनी बठे सू उठ'र वेड रुम म आयग्या हा ।

मिसेज सोहिनी फेर की नी करचो ।

टावर ब्रेड अर जैम अर साँस अर अचार अर स्वीटस अर फ्रूटस खाय'र पेट भर लियो फेर पापान उडीकता उडीकता नीद लेय लीवी । आमतौर पर गोड साहब र मोडा आया मिसेज सोहिनी ई नीद लेय लेव । पण आज किणी भात वान नीद नी आय रई ही । अलवत्त घत्राहट न काबू राखण सारू वै अेक डायजापाम री गोळी अर वीकोमून वैपस्यूल लेय लियो हो ।

घडी आपरी सदीनी चाल विसर'र जाण ठणवा करती चाल ही ।

टेलीवीजन पर देर रात री विदेशी फिल्म सरू होयगी ही । पर्दे पर अेक आदमी-नुगाई वाघम वाघ होयोडा अेक दूजे रँ मुठे मे मुडो घाल्या दीस हा । मिसेज सोहिनी जुजळा र रिमोट रो बटन दवाय दियो- क्लक् ।

म्योपो सो पच्यो—मिवाय कूलर रँ पखे मे पपेडीजती हवा रँ मूसाड रँ ।

ट्रिग !

काई काल वेत वाजी ?

मिसेज सोहिनी नै वम-सो होयो अर वै उठ'र दरवाज लग जाय पूग्या । दूज वाजण री उठीक म वेई ताळ मडघा रैया अर छेवट पाछा आयग्या । अब व इण वैम रा काइ उपाय करे ? पाणी पिया, चायरूम गया, छोरा री टाग्या सीधी करी अर सोच्या वै अेक कप चाय बणाम लेव वै फेर मुणीज्यो—ट्रिग ।

मिसेज सोहिनी रा हाथ पण जाणे हा जठई त्रय होयग्या । व उठना उठना हाथ विछावणे पर टक'र बंठा रँयग्या-अेकदम अघर ।

'ट्रिग ट्रिग ट्री ई ई दैग ।

अवके समूच घर म काल-बेत्त री बिरळाटी गूजगी ।

मिसेज सोहिनी हटवटाय'र भाज्या अर दरवाजो मोत्यो—माग्ही गोष्ट माह्व

उभ्या मुळकें हा । श्रीफकेस र सागें अंक और बडो पैकट उठावता पूछघो, 'बटा सोयग्या ?'

'हा ।' लारें सिरकता मिसेज सोहिनी उत्तर दियो । पूछघो, 'वाणो ?'

गौड साहब जाण मुण्यो ई नी अर पैकेट दीवान पर घर'र वीरी पैकिंग खालण लागग्या । मिसेज सोहिनी चुपचाप बीन खुलता देखता रैया । धर्मकोल रें टुकडा विचाळें सू निवळ'र अंक बी सी पी चारी आस्या आगें किणी नूब जलम्योडें टाबर दाई चरूड होयग्यो ।

अचाणचक मिसज सोहिनी न तेज वाम मसूम हाई—अंक भयाक भमको ।

गौड साहब वेंवें हा, 'फो'र पर बटावणो भूलग्यो, काल खरीद लिया हो ।'

मिसेज सोहिनी चिलख रें उनमान झपट्टो मार्या अर वी सी पी गौड साहब रें हाथा भाय सू लेय'र फश पर पटक दियो ।' म्हनै नी चाइजें क्यू लाया ओ इणमे ब्रास आवै ओ गिधें ।'

'पागल होयगी काभी ?' गौड साहब मिसज सोहिनी रा दानू वावळिया पकड लिया ।

आज वी मिसेज सोहिनी री इण हरकत पर आपरी निर्मो मुळक नी विडाय सक्या ।

□

फुरसत

मदन सैनी

बासठ बरस रा बूढा मघजी अजम जा नी समझ सक्या क जिण बात न व समझ उणन बीजा मिनल क्यू नी समझ ? नी समझ तो ना समझो । वारा कितो ऊत नाम जाव ? पण फेर ई, आ बात समझण री तो है ई । बिया मघजी न आपरी लूठी समझ माथ पक्को पतियारो है । इण समझ रा केई सावठा परमाण है वार बन ।

मा-बाप रा मोभी पूत हा मघजी । मघजी रा बापू बिणज सार नी समझता, सेठा रा हाळी ई रैया ताजिनगाणी । केई वार बीखो ई पड्या, घर म ऊदरा थडी करी । पण मघजी र समझ पकड्या पछ घर अडी औडी मे नी आयो । वार बिणज बीपार म बघेपो हायो तो होवतो ई गयो । वारी समझ रग त्याई समझ-परवाण वारी कीरत रा थव घर, गाव अर गाव सू वार ताई रपग्या । बडी बेटी दुरगा अर मझल मोवन र जलम अर ब्याव री वेळा गाव मे जिण भात लाड-कोड अर गाजा-बाजा होया, उण भात नी तो पला कदई होया अर नी कदई होवला । अर जे होवला इज तो वार इ नानडिय रो ब्याव अजेस बाकी है । मघजी र घर रो आज कुण इसो है, जिको पर-ओढ न वार निकळै अर उण री वाह वाह नी होव । दुरगा री मा तो पीळिय सू लवन कनक-काव सी लखावै, कुण नी सराव ।

अर अँ सँग गाजा-बाजा बिण रँ पाण ? सुभट बात है—मघजी री समझ र पाण ।

फळा फूला सू हरिय भरियँ बगीचँ री भात है मघजी रा घर-बार अर जिण रा बागवान अव लग हा खुद मघजी ।

मघजी न की धेरो नी पडघो पण हवळै हवळ बिणज-बीपार री बागडोर वारो मोवन सभाळ लीवी । वान तो तद ई ध्यान आया, जद मोवन वा सू विनती करी क अबँ आप साठी लाघग्या हो, ऊमर आराम करणँ री है । आप देस जावन घर सम्हाळा, की ध्यान धूप, पूजा-पाठ म मन लगावो ।

लूठा लूठा बीपारिया न सल्ला दवणिमा मघजी नै जेकर तो लखाया क वारी समझ पागळी होयगी है । जिण समझ रो आखी जिनगाणी गीरवो करघा, उणन आज वारा ई सपूत सपनपाट कर रयो है । पण मघजी सोचीवान आदमी हा । साच समझ न घर रवणो ही आछो मान, मिदर-देवरा, पूजा पाठ मे मन लगावण री मोवळी मसा कर लीवी ।

अँडी मसा करणी ता सौरी ही, पण इण मे मन लगायन दिन काटणो घणो दौरा । दिन उग तो छिपणा दौरा अर छिप जाव, तो ऊगणो ओखो । दिन बीता चाव रात, मघजी नै लागै जाणै जुग बीतै ।

‘इया तो पार नी पड दुरगा री मा ।’ व जेक दिन आपरी जाडायत नै बयो ।

‘इया किया ?’

‘मिदर देवरा फिरघा सू वगत नी बीत । मावन माइ साच’र म्हनै दूवान सू दूर करघा है, ठा नी पड । उण बेवकूप न कुण ममझाव कै म्हार अणभवा आग उणरी नूवी अवकल पाणी भरै अर आखी ऊमर री आ ई तो असल पूजी है म्हारी, अर इण री ई वा बदर नी जाणी ।’

‘नी जाण तो मत जाणन दघो । थे बयू खुद रो सून वाळो, मिदर देवरा म मन नी लागै, तो घूम फिर लिया करो । घर म सिनटरी रा पायखाना काइ होया, थानै तो घोरा देख्या ई जुग बीतग्या होवैला ।’

‘तो यू ई भळै सीख देवण लागणी ?’

‘अव सीख समझो तो म्हारै कनै काइ उपाव है । म्है तो थार ई भल री बात कई है । जद सू थे काम छोड या है, थार चे’रै री उदासी म्हासू देखी नी जाव ।’

‘वा-वा म्है अबार ई घोरा जाऊ ’ कयन मघजी मुळमता थका पाणी रा लोटा लेयन घोरा कानी बहीर होयग्या ।

सियाळ रा मुरजी री तिरछी किरणा वाळू री लरघा माथ हिवळासर हाथ ज्यू सिरक ही ।

मघजी अेक धार री टोकी ऊपर बठया वाळू अर किरणा री छेकडली प्रीत निरख हा । व सोच्यो, समदर अर वाळू री लरघा म काइ फरक ? वायरा जे हेत जताव ता दावू राजी अर जे फफेडण भतै होय जाव ता तूफान रा ताण्डव दावू जग्या । इण धरती री काया म आप-आपरी पाती लिया वाळू अर पाणी कित्ता मनमौजी, कित्ता आणदित अर कित्ता हेताळू जाण दोवान आपर फूटराप रा दर ई गुमान-गौरवा नी है ।

दूर ताई पत्तरघोडी वाळू री लरघा म मघजी आपर मन री नाव खेव हा क अचाणचक वान आपर पग री आगळघा सळसळाट लखाया । नीच देख्या ता अेक टीटण ही । व बीन हाथ मे पकड’र खासा दूर फँक दीवी । पण वा तो थोडी ताळ होवता ई सागी ठोड आय पूगी । मघजी तीन-चार दफ उणन फँकी, पण वा असल टीटण ही—घारा धरती रो हटीला जीव । हमीर आपरा हठ छोड्या होव ता आ इज छोड दे !

मघजी आसता होयग्या । व लोटै रा पाणी गटागट पीग्या अर टीटण न लोटै मे छोड दीवी । पछै थ टीटण नै नडै सू निरमणी सन् वर दीवी । अरे ! इणरो

उणियारो तो भवरै सू भेळ खाव । भवरो इत्तो नादीदा जीव अर टीटण न बापडी न कोई वतळाई ई नी । मघजी सोच्यो, इणनै इ कैव सगत सार फळ औ भवरो भिणकारा रा गीत गावतो तितल्या अर फूला नेडै जाय पूग्यो अर कविया री आख्या चढग्यो । बापडी टीटण न कुण पूछे ?

मघजी र मन मे टीटण सागै होयाडै अयाव री बात उठी जर वाने लखायो के साव नूवे ग्यान रो च्यानणा होयग्यो । वै टीटण न लोटै माय सू लेयर ह्याळी माय धरी । टीटण तिरमिर तिरमिर चाली अर ह्याळी री सीवा सू वूद'र हेटी पडगी । मघजी पसीज्या, बापडी रै लागी तो नी ? वै फेरु उणनै ह्येळी मे लेयने उणर मुडै साम्ही जोयो । अरे ! औ नाहा सीक मुडो तो परतख रेल र दानवी इजन सरीखा लागै । उणी भात काळो-कळूटो अर बिडरूप काइ ठा कोई इण बात कानी ध्यान दियो होसी कै नी ? जाय'र वताया दुरगा री मा नै मोकळो हरख होवैला । वै टीटण न पाछी लोट मे घाल'र घर साह बहीर होयग्या ।

दुरगा री मा माळा फेरै ही । मघजी नै देख'र पूछ्यो, 'जा आया काई ?'

'अेकर माळा छोड, म्हार कने आव देख, म्है काइ लायो हू—रेल रो इजन ।'

'रेल रो इजन ।' कैय'र जचभो करती थकी दुरगा री मा उठी, 'कठ है ?'

मघजी दुरगा री मा री ह्येळी पकड'र उणम लोटो ऊघाय दियो, 'सावळ देख '

'आ तो टीटण है इणरो काइ नादीद—'दुरगा री मा ह्याळी पळटता कया, 'हाथ मे मूत दियो, तो तीन दिन गिध नी जावला ।'

मघजी नीचा लुळनै टीटण न आपरी ह्याळी मायै धरी अर उणन दुरगा री मा साम्ही करता कयो, 'अरे बडभागण अेकर इणन निरख'र वताय तो सरी, आ कडी काई लागै ?

'वा, लागगी कैडी-काइ घगावो वारै इणन । वूडा सारा औ काई कौतक लाया, लोग हसैला । की तो धोळा री वाण राखो ।'

'वा वा, रैवण दे । घणो ग्यान हायग्यो दीस । साम्ही पडी चीज ई दीसणी बढ होयगी । पण गाव म ता सोझीवाळा मर्या कोयनी । ववता-नैवता मघजी टीटण न पाछी लोट मे घाली अर वा ई पगा वारै नीसरग्या ।

पैल-भोत मुकनो दीस्या । मघजी उणन हेलो पाडघा, मुकना '

'काई कावा 'लार मुडता मुकना पूछ्यो ।

'ठर अेकर दख, म्हार लोटै म काइ है ।' नडा आवता थ लोटा मुकन रै मुडाम करपा ।

मुकनो डूवत-सीक उजास र जोर लोटै म झाक'र देण्या अर बोल्या, 'आ तो टीटण है, और काई ?'

'टीटण तो है, पण इण रो मुडो किसोक् है ?'

'मुडो, इणरै वापडी रँ काय रो मुडो, अेन फीडो फीडो अर सूगतो ।'

'रेल रँ इजन ज्यू नी लाग ?' मघजी पूछघो ।

मुकनो सुण'र मुळवयो, काई वात है कावा ? जीव-सौरा तो है नी ? भाग-गाजँ री क्षपेट म तो नी आयग्या कठँ ई ?'

'जा-जा की देखणो नी आवँ जणा माग गाजँ री वात करण लागग्यो । म्हँ तो थनँ दूजा विचँ की सूल कर राख्यो हो धारँ ता आपरँ माथँ म गोवर छल्यो है ।' वय'र मघजी मुकनँ सू आगँ बहीर होयग्या ।

मुकनँ सू मिल्या पछँ मघजी घरँ आयग्या । वेई ताळ गाव री गळघा मे फिरघा, पण किणी माथ वान पतियारो नी होयो । भळ कोई आवळ-वावळ बालसी । मास्टर दीनदयाल टाळ बीजँ सू बात करणी ई फालतू है, पण मास्टरजी र घर कुपेळा नी जाऊ । सोचर मघजी सूरज उगणँ नँ उडीवण लागग्या ।

दिन उग्यो । मघजी सिनान-सपाडा करघा अर मास्टरजी री स्कूळ र टम सू पला-पला वारँ घर जाय पूग्या ।

मास्टरजी अेक माचँ माथँ बठया कोई पोधी फिरोळ हा । घरवाळी गाय डागरा साहू लारँ गयोडी ही ।

जँ रामजी री । मघजी लोटो ह्याळया विचाळँ लिया रामा-मामा करघा ।

'आओ, मघजी आज कठीन सूरज उग्यो ?' बँवता मास्टर दीनदयाल पोधी अेक वानी मल दीथी ।

'वाई बताऊ मास्टरजी ' मघजी माच माथ बँठता बोल्या, 'गाव म कोई सुव माथ रो मिनख ई वा लाध नी ।'

क्यू, वाई वात होई ?'

'किणी न पुरसत ई नी है, कोई नूथी वात सोचण री, बँवण री, समषण री । म्है ता काल रो अेक वात कवण नँ फिरू, कोई समक्षण नँ ई रखाहूनीनँ ।'

'अडी काई वात है ? मास्टरजी हस'र पूछघा ।

मघजी जाण पावस्या होव, बोल्या 'लोग फूल निरगुन वितल्या माथ मोदीजँ, मवरा रा गीत गाव— पण इण म नवादी वात काद ? साब दया दारी जाय, देगो इण टीटण रो नूवो रूप सगा स मिर नी दीस तो म्हँ पण । मघजी लोटो मास्टरजी र मुडागँ माचँ माथ मुघाय थियो ।

अेक हवळी-नी 'तड' री आवाज रँ समव आपरा पजिया ऊवा करया टीटण

आय पड़ी। मुठ रा 'एग्यिन अर छरू पम हवा गु हापापाई करता रिगमिउ रिगमिउ
हलै हा।

मास्टरजी रे जाणे करट रा तार लाग्या, य उरळ र ऊभा हायग्या। बई ताउ
यै हण अतीती रे ममजण म जगार, फेर रीम गावता बो'या ओ काई तमागो है गीउ
म ता ओर ई ममजदार गी लाध्या पण चारी। तार रे टूपा आयग्या दीगं टाटण रे
ताधी परमाँ छाटण गरू म्हे जाण्या भवा मिगण हा रिगुगं-मुणी काई काम रे
वात तरण रे पमाग्या हावाता। अब आउ परा पमाग नीतर टीगर भाटा मारणा
गरू कर देवेता।

मघजी रे तगाया व य पा ट हटे आयग्या है। दिगमिगावता पण गू ये कणां
ता मास्टरजी र पर सु गीगय्या अर कणा पर पूग्या वांन तगाय ई गी प'या। पर
पूग र व आपर जाउ म वटग्या। की कया त मुण्या की म ई बाल्या त चाल्या। वा
ठा गी हा व वारा जापरा परा अउर मारिय मू मिल हा टळनटळक आगू उळवावता
अणमणो मारियो।

देवट दुरगा री मां जाय'र मघजी। वाळाया। 'बाइ हायो, धार की दुगं ता
नी है ?

'दुग, धारो मायो।' मघजी वटवी भरता-मो'क बाल्या।

'स्याणा, इया बाइ धोलो।' दुरगा री मा केंती आग्या भर लीवी।

'म्हे समझदार नी ह दुरगा री मा म्हे गफा डापो ह मूरग ह। म्हे अब
काई करू ?'

मघजी री आरया छनछलीजगी। व आपरी घाती रो पायचो आग्या माथ
मेल'र वुसक्या भरणी सरू कर दीवी।

दुरगा री मा बोलवा करे ही हे महाराज बालाजी ओ आरै काइ होयो।
जडा स्याणा समझणा रो माथो विया फिरग्यो। धारो जागण बोलू, बाबा आरी
आरया सु बासू पूछ दे

इत न कडी बाजी। दुरगा री मा परलै सु आरया पूछती धुरी मोडे जाय र
देरयो— अक छारो चमचमावता लोटो लिया ऊग्यो हा। बोल्यो 'मास्टरजी ओ लोटो
पुगवायो है, दिनुग मघजी वार घर छोडग्या। मास्टरजी कयो है, टीटण लाधी कोनी।
लाध्या वा ई पुगवाय देसी।'

दुरगा री मा इत लोटो छोरे र हाथ मू लियो जर धारणो ढक'र जागळ देय
लीवी।

□

